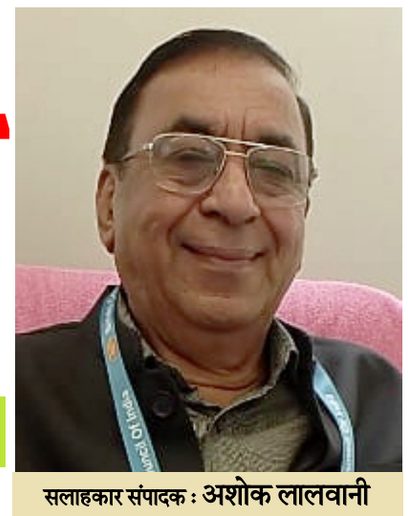
www.shabdawanisamachar.page

राष्ट्रीय हिन्दी समाचार पत्र

RNI NO. DELHI/2003/09049



दैनिक शब्दवाणी समाचार



सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत

वर्षः 24 अंकः 308 नई दिल्ली, बुधवार , 2 सितंबर, 2026 पृष्ठः संख्या 12 मूल्यः 10 रूपये

Dedicated to Sindhi Council of India

सार संक्षेप

किशोरी दुष्कर्म मामले में एनएचआरसी सख्त

नई दिल्ली। बस में किशोरी संग दुष्कर्म मामले में मानवाधिकार आयोग ने घटना को बेहद गंभीरता से लिया है। इस घटना में तीन अलग-अलग जिलों के शामिल होने के कारण आयोग ने दिल्ली के पुलिस कमिश्नर, गौतमबुद्ध नगर (नोएडा) के पुलिस कमिश्नर और मैनपुरी के एसपी को नोटिस जारी किया है।

अन्ना हजारे की हालत स्थिर, गुर्दे में संक्रमण



मुंबई। महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई के एक अस्पताल में सोमवार देर रात भर्ती कराए गए सामाजिक कार्यकर्ता अन्ना हजारे के स्वास्थ्य में मंगलवार को सुधार दर्ज किया गया। उनके एक सहयोगी ने बताया कि गुर्दे के संक्रमण की जानकारी सामने आने के बाद अब उनकी हालत में पहले से बेहतर है और वह 'ठीक हैं।

आसमान में फिर उड़ेगा भारतीय रॉकेट



चेन्नई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) भारी क्षमता वाले स्वदेशी जीएसएलवी रॉकेट से पृथ्वी अवलोकन उपग्रह ईओएस-05 का प्रक्षेपण चार सितम्बर की तड़के 02:55 बजे श्रीहरिकोटा स्थित अंतरिक्ष केंद्र से किया जाएगा। इसरो ने मंगलवार को इसकी घोषणा की। इससे पहले, मिशन की घोषणा करते समय इसरो ने प्रक्षेपण की तारीख नहीं बताई थी, जिसकी पुष्टि आधिकारिक तौर पर कर दी।

गोवा-दिल्ली फ्लाइट के इंजन में आई खराबी



नई दिल्ली। गोवा से दिल्ली जा रही इंडिगो की फ्लाइट 6ई 2102 को उड़ान भरने के कुछ मिनट बाद एक इंजन में तकनीकी खराबी की सूचना मिली। इसके बाद विमान को वापस मनोहर इंटरनेशनल एयरपोर्ट लाया गया। फ्लाइट ने सुबह 9:16 बजे उड़ान भरी थी और 9:30 बजे सुरक्षित लैंडिंग की। वापस मुड़ते समय विमान करीब 14 हजार फीट की ऊंचाई पर था। विमान में 229 यात्री सवार थे।

दिल्ली-एनसीआर में हुई झमाझम बारिश



नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में अचानक मौसम ने करवट ली है। राजधानी के कई इलाकों के साथ नोएडा के भी कई क्षेत्रों में झमाझम बारिश दर्ज की गई, जिससे तापमान में गिरावट आई व लोगों को चिपचिपी उमस से बड़ी राहत मिली है। तापमान में आई इस गिरावट से गर्मी से परेशान लोगों को काफी आराम मिला। दिल्ली के आईटीओ इलाके में बारिश के दौरान सड़क पर बाइक सवार भीगते हुए नजर आए। अचानक हुई बारिश से मौसम में ठंडक महसूस की गई। वहीं नोएडा के सेक्टर 59, 12, 15, 16, 18 और 20 समेत कई इलाकों में मंगलवार देर शाम झमाझम बारिश हुई।

जंतर-मंतर के प्रदर्शन पर सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला

छात्रों पर दर्ज मुकदमें वापस

■ कॉकरोच जनता पार्टी ने पांच सितम्बर का मार्च लिया वापस ■ अदालत ने कहा, नई एफआईआर भी नहीं होगी दर्ज

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को कॉकरोच जनता पार्टी के आंदोलन से जुड़ी सभी एफआईआर को रद्द कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले के लिए संविधान के अनुच्छेद 142 में दी गई शक्तियों का इस्तेमाल किया। हालांकि, सरकार ने कहा कि प्रदर्शन के दौरान आपराधिक रिकॉर्ड वाले 2,873 लोग वहां पहुंचे थे। इनमें से जिन लोगों ने उस दौरान मारपीट या संपत्ति को नुकसान पहुंचाया हो तो उन पर यह केस चलता रहेगा। सुनवाई से पहले कॉकरोच जनता पार्टी ने पांच सितम्बर के मार्च को वापस ले लिया।

सरकार ने सोमवार को दाखिल किया था अंतरिम आवेदन

सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला दिल्ली पुलिस के अंतरिम आवेदन पर सुनाया। अंतरिम आवेदन का मतलब है कि किसी मामले की सुनवाई चल रही हो और उसके दौरान किसी खास मुद्दे पर तुरंत राहत या आदेश की मांग के लिए कोर्ट में अलग से अर्जी दी जाए। इस आवेदन में सरकार ने कहा था कि 25 जुलाई के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद दिल्ली पुलिस सीजेपी के प्रदर्शन से जुड़ी 13 एफआईआर को आगे



फोटो : एएनआई

नहीं बढ़ाना चाहती। यानी इन मामलों में पुलिस अब कार्रवाई जारी रखने के बजाय उन्हें खत्म करना चाहती है। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि एफआईआर रद्द करने का फैसला सिर्फ इसी मामले के खास तथ्यों और हालात को देखकर लिया गया है, इसलिए इसे दूसरे मामलों के लिए उदाहरण और बाध्यकारी फैसला नहीं माना जाएगा। कोर्ट ने यह भी कहा कि संविधान के अनुच्छेद 142 के तहत मिली अपनी विशेष शक्ति का इस्तेमाल इस शर्त पर किया जा रहा है कि दोनों पक्ष कोर्ट के सामने हुए समझौते का पूरी तरह पालन करेंगे। बीस जुलाई को सीजेपी के नेतृत्व में दिल्ली में हुए मार्च के दौरान प्रदर्शनकारियों और सुरक्षाकर्मियों के बीच झड़प हुई थी।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला छात्रों की जीत : अभिजीत दीपके



नई दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी के प्रमुख अभिजीत दीपके ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला छात्रों की जीत है। कॉकरोच जनता पार्टी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने छात्रों के खिलाफ चल रहे सभी अन्यायपूर्ण मुकदमों को खारिज कर दिया है। हमारी मांगें सुनी गई हैं और अब किसी भी छात्र को आगे ऐसी कार्रवाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। सीजेपी क प्रवक्ता सौरव दास ने कहा कि अगस्त के शुरुआत में सरकार के डेलिगेशन ने हमसे बात करना बंद कर दिया था, फिर हमें लगा कि यह विश्वासघात करना चाहते हैं, इसलिए हमनें पांच सितम्बर को मार्च निकालेंगे का फैसला किया।

संसद की ओर बढ़ रही भीड़ को रोकने के लिए सुरक्षाकर्मियों ने लाठीचार्ज और आंसू गैस का इस्तेमाल किया था।

जन्माष्टमी पर उत्तर रेलवे नई दिल्ली-सूबेदारगंज और दिल्ली-हरिद्वार के बीच चलाएगा दो अतिरिक्त विशेष ट्रेनें

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और आगामी लंबे सप्ताहांत के दौरान यात्रियों एवं श्रद्धालुओं की संभावित अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए उत्तर रेलवे ने दो और विशेष ट्रेनों के संचालन का निर्णय लिया है। नई दिल्ली-सूबेदारगंज के बीच सुपरफास्ट विशेष एक्सप्रेस और पुरानी दिल्ली-हरिद्वार के बीच अनारक्षित विशेष ट्रेन चलाई जाएगी। दोनों विशेष ट्रेनें तीन-तीन फेरे लगाएंगी।

उत्तर रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी हिमांशु शेखर उपाध्याय ने मंगलवार को बताया कि त्योहार और छुट्टियों के दौरान यात्रा की बढ़ती मांग को पूरा करने तथा यात्रियों को सुगम एवं आरामदायक यात्रा उपलब्ध कराने के लिए इन अतिरिक्त सेवाओं का संचालन किया जा रहा है।

गाड़ी संख्या 02416/02415 नई दिल्ली-सूबेदारगंज-नई दिल्ली सुपरफास्ट विशेष एक्सप्रेस 3, 4 और 5 सितंबर को नई दिल्ली से और 4, 5 तथा 6 सितंबर को सूबेदारगंज से चलेगी। इसमें वातानुकूलित, शयनयान और सामान्य द्वितीय श्रेणी के डिब्बे होंगे।

गाड़ी संख्या 02416 नई दिल्ली से रात 11 बजे रवाना होकर अगले दिन सुबह 9:45 बजे सूबेदारगंज पहुंचेगी। रास्ते में यह रात 11:45 बजे गाजियाबाद, देर रात 1:05 बजे अलीगढ़, 2:18 बजे टूंडला, सुबह 4 बजे इटावा, 6:35 बजे गोविंदपुरी और सुबह 8:20 बजे फतेहपुर पहुंचेगी।

वापसी में गाड़ी संख्या 02415 सूबेदारगंज से दोपहर 12:10 बजे रवाना होकर रात 11:30 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। यह ट्रेन फतेहपुर में दोपहर 1:23 बजे, गोविंदपुरी में 2:55 बजे, इटावा में शाम 5:03 बजे, टूंडला में 6:55 बजे, अलीगढ़ में रात 8:30 बजे और गाजियाबाद में रात 10:45 बजे ठहरेगी।

उत्तराखंड की तीर्थनगरी हरिद्वार जाने वाले यात्रियों के लिए गाड़ी संख्या 04413/04414 पुरानी दिल्ली-हरिद्वार-पुरानी दिल्ली अनारक्षित विशेष ट्रेन चलाई जाएगी। यह ट्रेन 3, 4 और 5 सितंबर को पुरानी दिल्ली से तथा 4, 5 और 6 सितंबर को हरिद्वार से संचालित होगी। गाड़ी संख्या 04413 पुरानी दिल्ली से रात 11 बजे रवाना होकर अगले दिन तड़के 4:55 बजे हरिद्वार पहुंचेगी। रास्ते में यह रात 11:40 बजे गाजियाबाद, देर रात 12:25 बजे मेरठ सिटी, रात 1:05 बजे मुजफ्फरनगर और तड़के 3:40 बजे रुड़की पहुंचेगी। वापसी में गाड़ी संख्या 04414 हरिद्वार से शाम 5 बजे रवाना होकर रात 10 बजे पुरानी दिल्ली पहुंचेगी। यह ट्रेन रुड़की में शाम 6 बजे, मुजफ्फरनगर में 7:03 बजे, मेरठ सिटी में 7:55 बजे और गाजियाबाद में रात 9:08 बजे ठहरेगी।

रसोई गैस सिलेंडर से लेकर दूध तक सब हुआ महंगा

कमर्शियल सिलेंडर की कीमत में 11.50 रुपए तक की बढ़ोतरी

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। सितम्बर माह की शुरुआत के साथ ही आम नागरिकों की जेब और रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़े कई महत्वपूर्ण नियमों में बड़ा बदलाव हुआ। तेल विपणन कंपनियों ने हर महीने की पहली तारीख को होने वाली समीक्षा के बाद 19 किग्रा वाले कमर्शियल एलपीजी सिलेंडर के दामों में वृद्धि की घोषणा की है। इस फैसले के तहत कमर्शियल सिलेंडर की कीमत में 11.50 रुपए तक की बढ़ोतरी की गई है।

मुंबई में दूध के दाम बढ़े

बॉम्बे मिल्क प्रोड्यूसर्स



■ आम नागरिकों से जुड़े कई महत्वपूर्ण नियमों में हुआ बड़ा बदलाव

एसोसिएशन ने 1 सितम्बर से थोक दूध की कीमतों में 9 रुपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी का ऐलान किया है। इससे थोक दर 93 रुपए से बढ़कर 102 रुपए प्रति लीटर हो गई है, जो 28 फरवरी 2027 तक लागू रहेगी। मुंबई में थोक दाम बढ़ने से खुदरा दूध की कीमतें बढ़ेंगी। वहीं अब मुंबई में टैक्सी के किराए में 2 रुपए प्रति किलो मीटर और ऑटो के किराये में 1 रुपए प्रति किलोमीटर की वृद्धि की गई है।

हवाई ईंधन महंगा, टिकट के बढ़ सकते हैं दाम

अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें बढ़ने के कारण देश में हवाई ईंधन के दाम लगातार दूसरे महीने बढ़ा दिए गए हैं। एटीएफ में 6.28 प्रति लीटर (5.46 प्रतिशत) का इजाफा किया गया है। नई कीमत 115 से बढ़कर 121.28 पहुंच गई है।

एससीओ शिखर सम्मेलन में बोले मोदी

आतंकवाद को खत्म करने की जरूरत

बिश्केक, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के 26वें शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद को लेकर सख्त संदेश दिया। प्रधानमंत्री ने आतंकवाद के पूरे तंत्र को खत्म करने की जरूरत बताई और कहा कि इस गंभीर मुद्दे पर दोहरे मापदंड की कोई जगह नहीं होनी चाहिए।

बिश्केक में आयोजित शिखर सम्मेलन में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ और एससीओ के अन्य नेताओं की मौजूदगी भी रही। मोदी ने कहा कि हमें एक आवाज में कहना चाहिए कि इस गंभीर मुद्दे पर दोहरे मापदंड की कोई जगह नहीं हो सकती। जो देश आतंकवाद को अपनी नीति के साधन के रूप में



आतंकवाद के गंभीर मुद्दे पर दोहरे मापदंड की कोई जगह नहीं होनी चाहिए : नरेंद्र मोदी

इस्तेमाल करते हैं और आतंकवादियों को पनाह और समर्थन देते हैं, उन्हें स्पष्ट संदेश दिया जाना चाहिए कि आतंकवाद किसी के लिए रणनीतिक संपत्ति नहीं हो सकता। मोदी ने यह बात बैठक में हुई गोलमेज चर्चा के दौरान कही। इस बैठक में पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के अलावा चीन के राष्ट्रपति शी.जिनपिंग, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियन, बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको, कजाखस्तान के राष्ट्रपति कासिम-जोमार्ट टोकायेव, उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शौकत मिर्जियोयेव और ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति इमोमाली रहमोन शामिल हुए। क्षेत्र के सामने मौजूद व्यापक सुरक्षा चुनौतियों का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आपस में तेजी से जुड़ती दुनिया में सुरक्षा का दायरा और व्यापक हो गया है। पश्चिम एशिया के संकट ने दिखाया है कि एक क्षेत्र का संघर्ष केवल उसी क्षेत्र तक सीमित नहीं रहता...इसका असर दुनिया की ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री व्यापार और आपूर्ति श्रंखलाओं पर पड़ता है।

युद्ध व तनाव खत्म करने के लिए दी सलाह

प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार फिर भारत का रुख दोहराते हुए कहा कि युद्ध और तनाव का समाधान बातचीत और कूटनीति के जरिए होना चाहिए। ऐसे संघर्षों की सबसे बड़ी कीमत वैश्विक दक्षिण के देशों को चुकानी पड़ती है। उन्होंने कहा कि वैश्विक दक्षिण के देशों को इसकी सबसे भारी कीमत चुकानी पड़ती है। यही वजह है कि भारत लगातार कहता रहा है कि सभी तनाव और युद्ध का समाधान युद्ध के मैदान में नहीं, बल्कि बातचीत और कूटनीति के जरिए होना चाहिए।

चंडीगढ़ बॉर्डर पर फिर जुटे पंजाब के किसान

22 फसलों पर एमएसपी की कानूनी गारंटी की मांग पर अड़े



चंडीगढ़, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। पंजाब के किसानों ने एक बार फिर अपनी लंबित मांगों को लेकर चंडीगढ़ बॉर्डर पर आंदोलन तेज कर दिया है। बड़ी संख्या में किसान मंगलवार को चंडीगढ़ बॉर्डर पहुंचे। संयुक्त किसान मोर्चा यानी कि एसकेएम की ओर से 1 सितम्बर से सात सितम्बर तक एक सप्ताह का धरना दिया जा रहा है। किसानों ने एयरपोर्ट रोड के पास धरना शुरू किया है और उनकी प्रमुख मांगों में 22 फसलों पर एमएसपी की कानूनी गारंटी शामिल है। किसानों के प्रदर्शन को देखते हुए चंडीगढ़ पुलिस ने सुरक्षा और ट्रैफिक को लेकर व्यापक इंतजाम किए हैं। पुलिस ने प्रदर्शन के दौरान यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए जरूरी तैयारियां की हैं। किसान नेता ने पंजाब के पानी के अधिकार के मुद्दे को भी प्रमुखता से उठाया।

32 किसान संगठनों ने किया आंदोलन तेज

भारतीय किसान यूनियन लखोवाल के वरिष्ठ नेता हरिंदर सिंह लखोवाल ने कहा कि 32 किसान संगठनों के गठबंधन ने अपनी मांगों को लेकर आंदोलन तेज करने का फैसला किया है। किसान लंबे समय से न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी और दशकों पुराने जल समझौतों को रद्द करने सहित कई मांगें उठा रहे हैं। किसान संगठनों ने अपनी मांगों को लेकर कई स्तर पर ज्ञापन दिए हैं।

69वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन में भारत रखेगा एआई, जलवायु लचीलापन और मानवाधिकारों पर पक्ष

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। भारतीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल 13 से 19 सितंबर तक दक्षिण अफ्रीका के केप टाउन में आयोजित होने वाले 69वें राष्ट्रमंडल संसदीय सम्मेलन (सीपीसी) में हिस्सा लेगा। सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), जलवायु लचीलापन, समावेशी व्यापार, मानवाधिकार और संसदीय लोकतंत्र से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर भारत का दृष्टिकोण रखेगा।

सम्मेलन की तैयारियों को लेकर मंगलवार को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला की अध्यक्षता में उच्चस्तरीय ब्रीफिंग बैठक हुई। बैठक में बिरला ने भारतीय प्रतिनिधिमंडल की प्रभावी भागीदारी पर जोर देते हुए सभी सदस्यों और महिला प्रतिनिधियों से निर्धारित सत्रों तथा कार्यशालाओं में सक्रिय रूप से हिस्सा लेने का आह्वान किया।

उन्होंने प्रतिनिधियों से चर्चा के दौरान भारत के राष्ट्रीय हितों और दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का आग्रह किया। साथ ही सम्मेलन की बैठकों में समयबद्धता और अनुशासन का विशेष ध्यान रखने को कहा, ताकि भारतीय प्रतिनिधिमंडल एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर सके। इस वर्ष सम्मेलन की मुख्य थीम ह्लबदलती वैश्विक व्यवस्था में अंतरराष्ट्रीय कानून और संसदीय लोकतंत्र को सशक्त बनाना : राष्ट्रमंडल की नेतृत्वकारी भूमिका है। इसके तहत बदलती वैश्विक व्यवस्था में अंतरराष्ट्रीय कानून और संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करने में संसदों की भूमिका पर चर्चा होगी। ब्रीफिंग के दौरान भारतीय प्रतिनिधिमंडल के लिए छह प्रमुख सीपीसी कार्यशालाओं के एजेंडे पर भी चर्चा हुई। इनमें विविध अर्थव्यवस्थाओं में समावेशी और निष्पक्ष व्यापार, सुलभ संसद और दिव्यांगजनों का समावेशन, जलवायु अनुकूलन एवं लचीलापन, संसदों में एआई के वर्तमान अनुप्रयोग, मानवाधिकारों की रक्षा तथा पश्च-विधायी संवीक्षा जैसे विषय शामिल हैं।

सम्मेलन में लोकतंत्र में युवाओं की भागीदारी और उनके विश्वास को मजबूत करने पर भी विशेष चर्चा होगी।

आरोप *नेपाल ने विनाशकारी बाढ़ के लिए की जलवायु मुआवजे की मांग*

चीन, अमेरिका व भारत पर लगाया त्रासदी का आरोप

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। नेपाल ने हाल ही में आई जानलेवा अचानक बाढ़ से हुई तबाही के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन करने वाले देशों से जलवायु संबंधी मुआवजा हासिल करने के लिए कूटनीतिक प्रयास शुरू कर दिए हैं। नेपाल का कहना है कि आपदा के बाद मिलने वाली सहायता को 'दान' के रूप में नहीं, बल्कि 'नैतिक जिम्मेदारी' के तौर पर देखा जाना चाहिए।

विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने कहा कि ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में 'बहुत कम' योगदान देने के बावजूद नेपाल ग्लोबल वार्मिंग के गंभीर परिणामों का सामना कर रहा है। इनमें ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना और पहाड़ी क्षेत्रों में आने वाली विनाशकारी आपदाएं शामिल हैं। विदेश मंत्री शिशिर खनाल ने आगे कहा कि हम एक ऐसे वैश्विक संकट की भारी कीमत चुका रहे हैं, जिसे हमने पैदा नहीं किया। ग्लेशियरों का तेजी से पिघलना और पहाड़ों पर आने



यह दान का मामला नहीं है, यह कानूनी व नैतिक जिम्मेदारी का मामला : शिशिर खनाल

वाली ये विनाशकारी सुनामी ग्लोबल क्लाइमेट चेंज के सीधे नतीजे हैं। खनाल ने कहा कि नेपाल अपने कूटनीतिक नजरिए को 'मदद' से बदलकर 'न्याय और मुआवजे' की दिशा में ले जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह दान का मामला नहीं है; यह कानूनी और नैतिक जिम्मेदारी का मामला है। खनाल ने कहा कि नेपाल अंतरराष्ट्रीय मंचों पर इस मुद्दे को 'पूरी मजबूती और स्पष्टता' के साथ उठाएगा।

भोटेकोशी में 26 अगस्त को आई थी विनाशकारी बाढ़

गौरतलब हो कि 26 अगस्त को भोटेकोशी नदी बेसिन में आई भीषण अचानक बाढ़ के बाद नेपाल ने 'लॉस एंड डैमेज फंड' (नुकसान और क्षति कोष) के बोर्ड से औपचारिक रूप से संपर्क कर तत्काल आर्थिक सहायता की मांग की है। भारत ने बार-बार क्लाइमेट इक्विटी यानी जलवायु न्याय पर जोर दिया है और प्रति व्यक्ति कम उत्सर्जन का मुद्दा उठाया है। भारत का तर्क है कि जलवायु से जुड़ी जिम्मेदारियां तय करते समय देशों के ऐतिहासिक उत्सर्जन, विकास की जरूरतों और उनकी क्षमताओं में अंतर को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली में 20 दिनों में 80 मोबाइल बरामद, 51 फोन मालिकों को लौटाए

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। दिल्ली पुलिस ने 20 दिनों के अंदर चोरी हुए 80 मोबाइल बरामद किए हैं। इनमें से 51 फोन उनके मालिकों को सौंप दिए गए। शेष 29 फोन को सौंपना बाकी है। पुलिस के मुताबिक, यह अभियान 11 अगस्त से 31 अगस्त के बीच चलाया गया। मोबाइल फोन को ट्रेस करने के लिए तकनीकी विश्लेषण, आधुनिक तकनीकी साधनों और फील्ड इंटेलिजेंस की मदद ली गई। बरामदगी के बाद फोन के वास्तविक मालिकों की पहचान और जरूरी कानूनी प्रक्रिया पूरी की गई। इसके बाद 51 फोन उनके मालिकों को वापस कर दिए गए। बरामद 80 मोबाइल फोन में सबसे ज्यादा 21 फोन नॉर्थ एवेन्यू थाना क्षेत्र की टीम ने बरामद किए। इनमें से 11 फोन मालिकों को सौंप दिए गए। इसके बाद कर्तव्य पथ थाना और तुगलक रोड थाना की टीम ने 15-15 फोन बरामद किए। कर्तव्य पथ से बरामद सभी 15 में से 10 और तुगलक रोड से बरामद फोन में से छह उनके मालिकों को लौटाए जा चुके हैं। बाराखंभा रोड थाने की टीम ने 12 मोबाइल बरामद किए, जिनमें से 10 फोन वापस कर दिए गए। संसद मार्ग थाना पुलिस ने सात फोन बरामद किए और पांच मालिकों को सौंप दिए। मंदिर मार्ग थाना क्षेत्र से छह फोन बरामद हुए, जिनमें से तीन लौटाए जा चुके हैं। तिलक मार्ग थाना पुलिस ने दो फोन बरामद किए और दोनों वापस कर दिए। कनॉट प्लेस थाना क्षेत्र से तीन फोन बरामद हुए, जिनमें से एक मालिक को सौंपा गया। साउथ एवेन्यू थाना और स्पेशल स्टाफ ने एक-एक मोबाइल फोन बरामद किया। साउथ एवेन्यू से बरामद फोन उसके मालिक को वापस किया जा चुका है। 29 बरामद मोबाइल फोन अभी सत्यापन की प्रक्रिया में हैं। इन फोन के वास्तविक मालिकों की पहचान और जरूरी कानूनी औपचारिकताएं पूरी होने के बाद इन्हें भी संबंधित लोगों को जल्द सौंपा जाएगा। पुलिस अधिकारियों के अनुसार मोबाइल क्रैक टीमों ने अलग-अलग मामलों में तकनीकी निगरानी और विश्लेषण के जरिए फोन की लोकेशन और इस्तेमाल से संबंधित जानकारी जुटाई। इसके बाद फील्ड टीमों ने समन्वय के साथ कार्रवाई कर मोबाइल बरामद किए। मोबाइल फोन की बरामदगी और उन्हें वास्तविक मालिकों तक पहुंचाने की कार्रवाई का उद्देश्य लोगों की शिकायतों का प्रभावी तरीके से समाधान करना और पुलिस के प्रति उनका भरोसा मजबूत करना है।

बुराड़ी विधानसभा में 39.4 फीसदी मतदाता घटे, संजीव झा ने चुनाव आयोग पर उठाए सवाल

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। आम आदमी पार्टी (आआपा) के वरिष्ठ नेता और बुराड़ी से विधायक संजीव झा ने विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत मतदाता सूची से बड़े पैमाने पर नाम हटाए जाने पर आपत्ति जताई है। उन्होंने दावा किया कि बुराड़ी विधानसभा क्षेत्र में ड्राफ्ट मतदाता सूची में 39.4 फीसदी मतदाताओं की संख्या कम हो गई है। उन्होंने चुनाव आयोग से नाम हटाए जाने के कारणों और प्रभावित मतदाताओं के लिए दोबारा नाम जुड़वाने की प्रक्रिया स्पष्ट करने की मांग की। संजीव झा ने मंगलवार को कहा कि पहले बुराड़ी विधानसभा क्षेत्र में कुल 4,26,451 मतदाता थे, लेकिन ड्राफ्ट रोल में यह संख्या घटकर 2,52,189 रह गई है। उन्होंने कहा कि करीब 1,67,885 मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए हैं। उन्होंने दावा किया कि हटाए गए नामों में बड़ी संख्या के आगे शिफ्टेड लिखा गया है। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या इस प्रक्रिया में किरायेदारों और दूसरे स्थानों से आकर दिल्ली में रहने वाले नागरिकों के मताधिकार पर असर पड़ रहा है। झा ने कहा कि किरायेदार और प्रवासी आबादी अक्सर आवास बदलती है, ऐसे में केवल शिफ्टेड के आधार पर बड़ी संख्या में नाम हटाए जाने को लेकर स्थिति स्पष्ट होनी चाहिए। आआपा नेता ने बताया कि पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल चुनाव आयोग से मिला था। प्रतिनिधिमंडल ने आयोग से शिफ्टेड दिखाए गए मतदाताओं का डेटा उपलब्ध कराने की मांग की थी, ताकि पार्टी स्तर पर फोन के माध्यम से इसकी वास्तविकता की जांच की जा सके। उन्होंने यह भी कहा कि कई स्थानों पर बूथ लेवल अधिकारियों (बीएलओ) का काम पूरा नहीं हुआ है और जहां 50 फीसदी से कम काम हुआ है, वहां बैठक कर इसके कारणों की समीक्षा की जानी चाहिए। झा ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग की जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि किसी योग्य नागरिक का मताधिकार न छूटे। उन्होंने कहा कि जिन लोगों के नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं, उन्हें दावा-आपत्ति दर्ज कराने और अपना नाम दोबारा जुड़वाने की प्रक्रिया की स्पष्ट जानकारी दी जानी चाहिए। उन्होंने चुनाव आयोग से इस संबंध में व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने की मांग की, ताकि प्रभावित मतदाताओं को समय रहते अपनी स्थिति की जानकारी मिल सके और वे निर्धारित प्रक्रिया के तहत अपना नाम फिर से मतदाता सूची में शामिल करा सकें। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में प्रत्येक योग्य नागरिक का वोट महत्वपूर्ण है और मतदाता सूची के पुनरीक्षण की प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी भी पात्र नागरिक का मताधिकार प्रभावित न हो।

अशोक विहार इलाके में सोमवार को फायरिंग करने के मामले में तीन लोग गिरफ्तार

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। उत्तर-पश्चिमी दिल्ली के अशोक विहार इलाके में सोमवार को फायरिंग करने के मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस के मुताबिक, गिरफ्तार आरोपितों में राजेश उर्फ काना (30), रोहित उर्फ समोसा (23) और नितिन (20) हैं। राजेश इस मामले का कथित मास्टरमाइंड है और उसके खिलाफ दिल्ली व उत्तर प्रदेश में हत्या के तीन मामले पहले से दर्ज हैं। हालांकि, फायरिंग में किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। पुलिस के अनुसार सत्संग कॉलोनी में रहने वाले शिकायतकर्ता देव उर्फ काके के भाई अर्जुन का इलाके में रहने वाली एक युवती को लेकर राजेश से विवाद चल रहा था। आरोप है कि राजेश ने देव को धमकी देते हुए कहा था कि उसका भाई जल्द ही समझ जाएगा कि इलाके में किसका दबदबा है। 31 अगस्त को राजेश के तीन साथी सत्संग कॉलोनी स्थित देव की झुग्गी पर पहुंचे और अर्जुन के बारे में पूछताछ की। देव ने अर्जुन के बारे में जानकारी होने से इनकार कर दिया। इसके बाद आरोपी वहां से चले गए, लेकिन कुछ देर बाद दोबारा लौटे। आरोप है कि उन्होंने देव की झुग्गी को निशाना बनाकर दो राउंड फायरिंग की। इसके साथ ही झुग्गी पर ईंट तथा बोतलें भी फेंकीं और मौके से फरार हो गए। घटना की सूचना मिलने के बाद अशोक विहार थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) और आर्म एक्ट की संबंधित धाराओं में केस दर्ज किया। जांच के दौरान पुलिस ने तकनीकी और मानवीय खुफिया जानकारी जुटाई। राजेश के आपराधिक रिकॉर्ड को देखते हुए उसे मामले का संदिग्ध मास्टरमाइंड माना गया।

एमसीडी की स्थायी समिति की बैठक में जनहित से जुड़े कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित



नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) की स्थायी समिति की बैठक मंगलवार को आयोजित हुई। बैठक में जनहित से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई और कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। इस दौरान पक्ष एवं विपक्ष के पार्षदों को अपने-अपने क्षेत्रों की समस्याएं, मुद्दे और सुझाव रखने का पूरा अवसर दिया गया।

स्थायी समिति की अध्यक्ष सत्या शर्मा ने कहा कि स्थायी समिति लोकतांत्रिक संवाद और जनहित के विषयों पर सार्थक चर्चा का महत्वपूर्ण मंच है। बैठक में पार्षदों की ओर से उठाए गए सभी मुद्दों को गंभीरता से सुना गया और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक कार्रवाई के निर्देश दिए गए।

बैठक में मच्छरजनित बीमारियों की रोकथाम, स्वाइन फ्लू, अवैध प्ले स्कूल, सार्वजनिक स्थानों पर अवैध अतिक्रमण, अवैध खाने के ठेले और खुले में तंदूर के इस्तेमाल, बेसहारा पशुओं, पार्कों के रखरखाव, प्रदूषण और स्वच्छता व्यवस्था सहित कई मुद्दे प्रमुखता से उठाए गए।

डेंगू-मलेरिया की रोकथाम पर जोर

सत्या शर्मा ने डेंगू, मलेरिया सहित अन्य मच्छरजनित बीमारियों की रोकथाम के लिए अधिकारियों को आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होंने संवेदनशील क्षेत्रों में नियमित फॉगिंग कराने के साथ व्यापक जनजागरूकता अभियान चलाने को कहा। उन्होंने निर्देश दिया कि इन अभियानों में संबंधित क्षेत्र के पार्षदों को भी सक्रिय रूप से शामिल किया जाए।

स्वाइन फ्लू को लेकर जागरूकता अभियान

दिल्ली में स्वाइन फ्लू के मामलों का संज्ञान लेते हुए स्थायी समिति अध्यक्ष ने नागरिकों को बीमारी से बचाव और आवश्यक सावधानियों के प्रति जागरूक करने के लिए व्यापक अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने संबंधित विभागों को स्वास्थ्य संबंधी दिशा-निर्देशों का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करने को कहा।

अवैध प्ले स्कूलों पर कार्रवाई के निर्देश

बैठक में दिल्ली में संचालित अवैध प्ले स्कूलों का मुद्दा भी उठाया गया। सत्या शर्मा ने संबंधित अधिकारियों को ऐसे संस्थानों की पहचान कर नियमानुसार कार्रवाई करने तथा बच्चों की सुरक्षा से जुड़े मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

अवैध खाने के ठेले और खुले में तंदूर पर कार्रवाई

सड़कों और सार्वजनिक स्थानों पर अवैध रूप से संचालित खाने के ठेलों तथा खुले में तंदूर के इस्तेमाल का मुद्दा भी बैठक में उठाया गया। स्थायी समिति अध्यक्ष ने अधिकारियों को ऐसे स्थानों की पहचान कर नियमानुसार कार्रवाई करने के निर्देश दिए। उन्होंने सार्वजनिक स्थानों पर अतिक्रमण और नागरिकों की सुरक्षा से जुड़े नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने को कहा।

आवारा पशुओं के लिए नई गौशालाओं की जरूरत

सत्या शर्मा ने दिल्ली में आवारा एवं बेसहारा गायों की समस्या को गंभीर बताते हुए कहा कि सड़कों पर पशुओं की मौजूदगी से यातायात प्रभावित होने के साथ दुर्घटनाओं का खतरा भी बना रहता है। उन्होंने कहा कि समस्या के स्थायी समाधान के लिए दिल्ली सरकार को पत्र लिखकर नई गौशालाओं के लिए भूमि उपलब्ध कराने का अनुरोध किया जाएगा। इससे सड़कों पर घूम रहे आवारा पशुओं को सुरक्षित रूप से निर्धारित स्थानों पर पहुंचाया जा सकेगा।

सत्या शर्मा ने कहा कि स्थायी समिति का उद्देश्य केवल प्रस्ताव पारित करना नहीं, बल्कि जनप्रतिनिधियों द्वारा उठाए गए मुद्दों पर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करना भी है। उन्होंने अधिकारियों को बैठक में उठाए गए जनहित के विषयों पर समयबद्ध कार्रवाई करने और संबंधित विभागों की ओर से की गई कार्रवाई की नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए।

उन्होंने कहा कि स्वच्छता, जनस्वास्थ्य, नागरिक सुरक्षा, अतिक्रमण और सार्वजनिक सुविधाओं से जुड़े विषय सीधे दिल्लीवासियों के दैनिक जीवन को प्रभावित करते हैं। इन सभी विषयों पर निगम द्वारा प्राथमिकता के आधार पर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी।

दिल्ली सरकार ने बस ऑपरेटरों को नियमों का सख्ती से पालन करने के दिए निर्देश



नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। दिल्ली सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में बस चलाने वाले सभी ऑपरेटरों के लिए सख्त निर्देश जारी किए हैं। परिवहन विभाग से जारी निर्देशों के तहत यात्रियों की सुरक्षा के लिए निर्धारित सुरक्षा मानक और संचालन संबंधी नियमों का सख्ती से पालन करना अनिवार्य कर दिया गया है। इसमें दिल्ली से चलने वाली दूसरे राज्यों की बसें भी शामिल हैं। महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया है और नियमों का उल्लंघन करने पर कानून के मुताबिक कार्रवाई की जाएगी।

परिवहन मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने कहा कि सरकार सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था में यात्रियों की सुरक्षा को और मजबूत करने के साथ यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है और सुरक्षा के जरूरी नियमों को जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से लागू किया जाए।

परिवहन मंत्री के निर्देशों का पालन करते हुए परिवहन विभाग ने सभी बस ऑपरेटरों को निर्देश दिया है कि वे यह सुनिश्चित करें कि बसों में लगे व्हीकल लोकेशन ट्रैकिंग डिवाइस (वीएलटीडी) और पैनिक बटन हर समय चालू हालत और काम करने की स्थिति में रहें। पैनिक बटन यात्रियों की पहुंच में आसानी से होने चाहिए और हमेशा ठीक से काम करने की स्थिति में भी होने चाहिए। सभी बसों में काम करने की हालत में अग्निशमन यंत्र और प्राथमिक उपचार किट का अनिवार्य रूप से होना जरूरी है। बस ऑपरेटरों को यह भी निर्देश दिया गया है कि वे यह सुनिश्चित करें कि रात के समय या जब बसें खड़ी हों, तो उन्हें केवल अधिकृत, सुरक्षित और अच्छी रोशनी वाली जगहों पर ही पार्क किया जाए।

इस संबंध में कोर्ट के निर्धारित नियमों और निर्देशों के अनुसार बसों की खिड़कियों पर पर्दे या अनधिकृत फिल्में नहीं लगाई जा सकती है। बसों के विंडशील्ड, पिछली खिड़कियों और साइड की खिड़कियों के लिए तय पारदर्शिता के नियमों का सख्ती से पालन करना होगा। इन निर्देशों में चालकों और बस स्टाफ की ज़िम्मेदारियों को भी साफ तौर पर बताया गया है। चालकों और दूसरे स्टाफ को यात्रियों के साथ अच्छा और विनम्र व्यवहार करना होगा। शराब या किसी भी नशे की हालत में गाड़ी चलाना सख्ती से मना है।

चालकों के पास वैलिड ड्राइविंग लाइसेंस, यूनिफॉर्म और जहां भी जरूरी हो पीएसवी बैज होने चाहिए। वहीं, कंडक्टरों के पास वैलिड कंडक्टर लाइसेंस, यूनिफॉर्म और पीएसवी बैज होने चाहिए। बस ऑपरेटरों को यह भी निर्देश दिया गया है कि वे ड्राइवरों, कंडक्टरों, अटेंडेंट और दूसरे सभी स्टाफ को काम पर रखने से पहले उनका सही तरीके से नियमानुसार वेरिफिकेशन करें।

400 यूनिट तक खपत वाले उपभोक्ताओं की छत पर बिना अग्रिम लागत के लगेगा तीन किलोवाट तक का रूफटॉप सोलर सिस्टम

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। दिल्ली सरकार ने सौर ऊर्जा को घर-घर तक पहुंचाने के लिए दिल्ली सौर ऊर्जा नीति का नया संस्करण (दूसरा संशोधन) पेश किया है। नई नीति के तहत वित्त वर्ष 2025-26 में औसतन 400 यूनिट तक बिजली इस्तेमाल करने वाले घरेलू ग्राहकों के लिए 3 किलोवाट तक के रूफटॉप सोलर सिस्टम बिना किसी शुरूआती खर्च के लगाए जाएंगे। विशेष बात यह है कि 200 यूनिट तक बिजली इस्तेमाल करने वाले ग्राहक सोलर सिस्टम लगाने के बाद न सिर्फ सब्सिडी का फायदा पाते रहेंगे, बल्कि बचाई गई बिजली के बदले उन्हें एनर्जी-सेविंग इंसेंटिव भी मिलेगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ह्यपीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना के विजन को दिल्ली में और मजबूत करते हुए सरकार ने ऐसी व्यवस्था तैयार की है, जिसमें आम परिवार के लिए सोलर सिस्टम लगाना आसान और लगभग बिना वित्तीय बोझ के होगा। इस नीति से दिल्ली के लोग बिजली इस्तेमाल करने के साथ-साथ बिजली भी पैदा कर सकेंगे। मुख्यमंत्री ने मंगलवार को दिल्ली सचिवालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में दिल्ली सोलर एनर्जी पॉलिसी-2023 (दूसरा संशोधन) के बारे में जानकारी साझा की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री का विजन विकसित भारत का है और विकसित भारत का रास्ता निश्चित रूप से विकसित दिल्ली से होकर जाता है। इसी सोच के अनुरूप दिल्ली सरकार ने सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए कैबिनेट में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। दिल्ली में सौर ऊर्जा की संभावनाएं बहुत अधिक हैं और सरकार का लक्ष्य केवल बिजली बिल कम करना नहीं, बल्कि दिल्ली के घरों को बिजली पैदा करने वाला घर बनाना है। प्रेस वार्ता के दौरान दिल्ली के ऊर्जा मंत्री आशीष सूद भी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री ने बताया कि नई व्यवस्था के तहत 400 यूनिट तक की औसत मासिक बिजली खपत वाले पात्र घरेलू उपभोक्ताओं को, सोलर सिस्टम की स्थापना की तकनीकी व्यवहार्यता के आधार पर, 3 किलोवाट तक का रूफटॉप सोलर सिस्टम बिना किसी अग्रिम लागत के उपलब्ध कराया जाएगा। केंद्र सरकार की ओर से मिलने वाली 78,000 रुपये की सब्सिडी के साथ दिल्ली सरकार भी 78,000 रुपये की पूंजीगत सब्सिडी देगी। इसके अलावा, दिल्ली सरकार अतिरिक्त टॉप-अप के माध्यम से सब्सिडी और सोलर प्लांट की टेंडर में तय लागत के बीच के अंतर को भी पूरा करेगी। उन्होंने कहा कि पहले सोलर सिस्टम लगवाने के लिए उपभोक्ताओं को अग्रिम राशि का भुगतान करना पड़ता था, जबकि प्रोत्साहन राशि बाद के वर्षों में मिलती थी। नई नीति में इस व्यवस्था को बदलते हुए शुरूआत में ही वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने को प्राथमिकता दी गई है ताकि उपभोक्ताओं पर शुरूआत में आर्थिक बोझ न पड़े। सरकार की ओर से लगाए गए सोलर सिस्टम का संबंधित वेंडर के लिए पांच वर्षों तक संचालन और रखरखाव करना अनिवार्य होगा। इसके बाद उपभोक्ताओं के पास डिस्कॉम के माध्यम से सोलर सिस्टम के पूरे 25 वर्ष के जीवनकाल तक उसके रखरखाव को जारी रखने का विकल्प होगा। इससे उपभोक्ताओं को सोलर सिस्टम के रखरखाव की चिंता नहीं करनी पड़ेगी। पात्र उपभोक्ताओं को मासिक बिजली बिल में नेट मीटरिंग का लाभ भी मिलेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार की मौजूदा बिजली सब्सिडी जारी रहेगी। इसका मतलब है कि पात्र उपभोक्ता बिजली सब्सिडी के साथ-साथ अपनी छत पर लगाए गए सोलर सिस्टम से होने वाली बचत का भी लाभ उठा सकेंगे। 3 किलोवाट का सोलर सिस्टम लगभग 300 यूनिट बिजली पैदा कर सकता है। यदि कोई परिवार 200 यूनिट बिजली की खपत करता है तो वह अतिरिक्त बिजली को ग्रिड में भेजकर उसका भी लाभ उठा सकता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार ने सोलर सिस्टम लगाने के साथ उसके संचालन और रखरखाव की व्यवस्था को भी आसान बनाया है। सोलर विक्रेता पहले पांच साल तक सिस्टम का संचालन और रखरखाव मुफ्त उपलब्ध कराएंगे। इसके बाद उपभोक्ता अपनी इच्छानुसार बिजली वितरण कंपनियों के माध्यम से रखरखाव और बीमा की सुविधा ले सकेंगे। यह सुविधा सीधे बिजली वितरण कंपनियों या उनकी सूचीबद्ध एजेंसियों के माध्यम से, लागू शुल्क के भुगतान पर ली जा सकेगी। इससे सोलर सिस्टम के लगभग 25 वर्ष के जीवनकाल तक उसके सुचारु संचालन में मदद मिलेगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि दिल्ली सरकार ने मार्च 2027 तक 2 लाख 30 हजार घरों की छतों पर सोलर सिस्टम लगाने का लक्ष्य रखा है। साथ ही दिल्ली सोलर पॉलिसी के तहत मार्च 2027 तक 500 मेगावाट अतिरिक्त रूफटॉप सोलर क्षमता जोड़ने का लक्ष्य है। दिल्ली में अब तक 10,073 सोलर सिस्टम इंस्टॉल हो चुके हैं, जिनमें बड़ी संख्या सरकारी इमारतों की है।

दिल्ली विधानसभा परिसर में बनेगा नया संग्रहालय : विजेंद्र गुप्ता

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। दिल्ली विधानसभा परिसर में शीघ्र ही एक आधुनिक एवं अत्याधुनिक संग्रहालय स्थापित किया जाएगा। यह बात दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने मंगलवार को दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्रझछात्राओं को संबोधित करते हुए कही। सचिवालय की युवा संपर्क कार्यक्रम



के तहत छात्रों से संवाद करते हुए विधानसभा अध्यक्ष ने परिसर को आम जनता के लिए एक शैक्षिक गंतव्य के रूप में विकसित करने की योजनाओं की जानकारी दी।

प्रस्तावित संग्रहालय में दुर्लभ ऐतिहासिक कलाकृतियो, अभिलेखीय दस्तावेजों और आजादी से पूर्व एवं आजादी के बाद विधानसभा के विकासक्रम को दशार्ने वाली संवादात्मक प्रदर्शनियों को प्रदर्शित किया जाएगा। वर्ष 1912 में निर्मित इस ऐतिहासिक स्थल के कुछ हिस्सों को सुव्यवस्थित एवं विषयवस्तु-आधारित सार्वजनिक स्थान के रूप में विकसित कर सचिवालय का उद्देश्य आगंतुकों को राष्ट्र के विधायी अतीत के महत्वपूर्ण एवं आधारभूत पड़ावों से प्रत्यक्ष रूप से जोड़ना है।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि यह पहल राजधानी के युवाओं और शोधार्थियों के लिए अनुभवात्मक शिक्षण केंद्र के रूप में कार्य करेगी।

एलजी संधू ने ठोस अपशिष्ट प्रबंधन को लेकर एमसीडी-आईआईटी दिल्ली की कार्यशाला का किया उद्घाटन

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। दिल्ली के उपराज्यपाल तरनजीत सिंह संधू ने मंगलवार को दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) और आईआईटी दिल्ली के सहयोग से इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित नगर निगम ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर एक दिवसीय मंथन कार्यशाला का उद्घाटन किया। कार्यशाला का विषय सकुर्लैरिटी की दिशा में बहु-स्तरीय एवं बहु-हितधारक रणनीति रहा। इस अवसर पर दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही, इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव, निगमायुक्त संजीव खिरवार, अपर आयुक्त अरुण कुमार मिश्रा समेत निगम पार्षद, आईआईटी दिल्ली एवं अपशिष्ट प्रबंधन क्षेत्र के विशेषज्ञ, वरिष्ठ अधिकारी, अभियंता और कर्मचारी मौजूद रहे। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए उपराज्यपाल संधू ने कहा कि दिल्ली की अपशिष्ट प्रबंधन संबंधी चुनौतियों के समाधान के लिए देश-दुनिया के सफल मॉडलों और सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों से सीखने की जरूरत है। उन्होंने इंदौर को स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण बताते हुए कहा कि अनुशासित और निरंतर प्रयासों से बड़े स्तर पर बदलाव संभव है। उन्होंने इंदौर मॉडल का गहन अध्ययन कर दिल्ली की आबादी, जनसंख्या घनत्व और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप उसे अपनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि ठोस अपशिष्ट का वैज्ञानिक और सतत प्रबंधन केवल स्वच्छता का विषय नहीं है, बल्कि यह जनस्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और दिल्लीवासियों के जीवन की गुणवत्ता से भी सीधे जुड़ा है। दिल्ली में प्रतिदिन करीब 13 हजार मीट्रिक टन नगर निगम अपशिष्ट उत्पन्न होता है। ऐसे में कचरे के केवल संग्रहण और निस्तारण के बजाय उसे कम करने, पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण और संसाधन में बदलने पर ध्यान देना होगा।

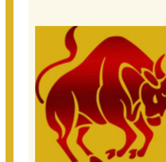
उपराज्यपाल ने वेस्ट-टू-लैंडफिल के बजाय वेस्ट-टू-वेल्थ मॉडल को बढ़ावा देने की जरूरत बताई। उन्होंने कहा कि गीले, सूखे, सैनिटरी और घरेलू खतरनाक कचरे का स्रोत पर ही पृथक्करण वैज्ञानिक प्रसंस्करण और पुनर्चक्रण को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके साथ ही आधुनिक प्रौद्योगिकी, डिजिटल निगरानी और प्रभावी डेटा प्रबंधन के इस्तेमाल पर भी उन्होंने जोर दिया। संधू ने कहा कि प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन के लिए सामूहिक जिम्मेदारी और जनभागीदारी आवश्यक है। नगर निकायों के साथ जनप्रतिनिधियों, आरडब्ल्यूए, बाजार संघों, उद्योगों, संस्थानों, विशेषज्ञों और आम नागरिकों को मिलकर काम करना होगा। उन्होंने कहा कि स्वच्छता को केवल नगर निगम की जिम्मेदारी नहीं माना जा सकता, बल्कि प्रत्येक परिवार को इसमें सक्रिय भागीदार बनना होगा।

दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही ने कहा कि स्वच्छ, स्वस्थ और बेहतर दिल्ली के निर्माण के लिए स्वच्छता को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने लैंडफिल स्थलों की सफाई, स्वच्छता अवसंरचना को मजबूत करने और नई मशीनरी की तैनाती सहित हाल के प्रयासों का उल्लेख किया। उन्होंने प्रभावी निगरानी और सख्त प्रवर्तन की आवश्यकता बताते हुए चयनित वार्डों को स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन के मॉडल वार्ड के रूप में विकसित करने पर जोर दिया।

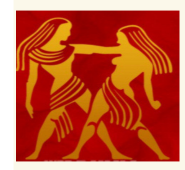
राजधानी में 35 रुपये किलो प्याज उपलब्ध कराएगी दिल्ली सरकार

नई दिल्ली, 01 सितंबर (हि.स.)। राजधानी में प्याज की कीमतों और उपलब्धता को लेकर बन रहे दबाव के बीच दिल्ली सरकार ने लोगों को बड़ी राहत देने की पहल की है। केंद्र सरकार ने दिल्ली के लिए 1000 मीट्रिक टन प्याज उपलब्ध कराने का निर्णय लिया है। इसे उचित दर दुकानों के माध्यम से 35 रुपये प्रति किलो की दर से उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराया जाएगा। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने स्पष्ट किया है कि उनकी सरकार राजधानी में प्याज का संकट पैदा नहीं होने देगी। उन्होंने मंगलवार को एक विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा कि उचित दर दुकानों के साथ-साथ दिल्ली के सभी 13 जिलों में एक-एक वैन के माध्यम से भी प्याज की बिक्री की जाएगी। ये वैन राजधानी के अलग-अलग इलाकों में जाकर लोगों को 35 रुपये प्रति किलो की दर से प्याज उपलब्ध कराएंगी। वैन के माध्यम से बिक्री का उद्देश्य उन क्षेत्रों तक भी सस्ता प्याज पहुंचाना है, जहां लोगों को उचित दर दुकानों तक पहुंचने में कठिनाई हो सकती है। इससे राजधानी के विभिन्न इलाकों में प्याज की उपलब्धता बढ़ेगी और अधिक संख्या में दिल्लीवासियों को इसका लाभ मिल सकेगा।

भविष्यफल



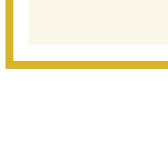
मेष- निकटस्थ व्यक्ति का सहयोग काम को गति दिला देगा। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। शुभांक-1-3-5



वृष- अपने हित के काम सुबह-सवेरे निपटा लें। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। विरोधी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेगा। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। शुभांक-2-4-6



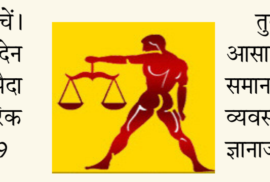
मिथुन- अपने काम को प्राथमिकता से करें। बुरी संगति से बचें। आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। हाथ-पैरों में पीड़ा हो सकती है। शुभांक-4-7-9



कर्क- दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सबेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा मिल पाएगी। कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। शुभांक-2-4-5



सिंह- चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। नवीन जिम्मेदारी बढने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। सुविधाओं में बाधा आएगी। शुभांक-4-5-6



कन्या- निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। संतोषजनक सफलता मिलेगी। मेहमानों का आगमन होगा। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। नैतिक दायरे में रहें। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। वाहन चालन में सावधानी बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। शुभांक-2-4-7



तुला- परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-5-6-9

वृश्चिक- संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। शुभांक-3-6-8



धनु- शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। व्यवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते हैं। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। वैचारिक उत्तेजना पर नियत्रंण रखें। कुछ महत्वपूर्ण कार्य बनाने के लिए भाग-दौड़ रहेगी। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। अपनी परिसंपत्ति को संभालकर रखें। शुभांक-3-5-7



मकर- मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। नौकरी क्षेत्र में कुछ उलझनें रहेंगी। यश-प्रतिष्ठा में वृद्धि व शिक्षा में परेशानी आ सकती है। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। मेहमानों का आगमन होगा। शुभांक-4-6-8



कुम्भ- महत्वपूर्ण निर्णय के लिए दूरदर्शिता से काम लें। कोष में कमी व व्यय की अधिकता से परेशान होंगे। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है। कार्य भार बढ़ेगा। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती है। सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-2-6-9

मीन- प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच अप्रत्याशित विघ्न पैदा होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। शुभांक-5-6-8

नेपाल त्रासदी : सैलाब के बीच खड़ा रहा 40 साल पुराना हरा घर, परिवार ने सुनाई आपबीती

● नुवाकोट/ : (एजेंसी)

नेपाल में 26 अगस्त को आई विनाशकारी बाढ़ ने नुवाकोट जिले में भारी तबाही मचाई। त्रिशूली नदी का पानी इतना उफान पर था कि आसपास की इमारतें, वाहन और सामान तक बह गए। लेकिन इस तबाही के बीच एक हरे रंग का करीब 40 साल पुराना मकान लगभग सुरक्षित खड़ा रहा।

मकान मालिक प्रकाश ने बताया, परिवार के छह सदस्यों ने ऊपरी मंजिलों पर पहुंचकर जान बचाई

बाढ़ के बाद इसकी तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बने हुए हैं। मकान के मालिक प्रकाश ने बताया कि बाढ़ का पानी घर में दाखिल होने के बाद परिवार के छह सदस्यों ने ऊपरी मंजिलों पर पहुंचकर जान बचाई। पानी चौथी मंजिल तक पहुंच गया था, जिसके बाद परिवार को मकान के सबसे ऊपरी हिस्से में जाना पड़ा। करीब डेढ़ घंटे तक परिवार बाढ़ के बीच फंसा रहा, जिसके बाद आसपास के लोगों ने पाइप और रस्सी की मदद से उन्हें सुरक्षित बाहर निकाला। प्रकाश ने बताया कि वह पास की अपनी दुकान पर थे, तभी उन्हें नदी का पानी बढ़ने की जानकारी मिली। वह तुरंत घर पहुंचे और परिवार के सदस्यों को ऊपर जाने के लिए कहा। बाहर निकलकर देखा तो बाढ़ का तेज बहाव उनका वाहन भी बहा चुका था। इसके बाद वह दोबारा घर के अंदर चले गए। घर में उस समय प्रकाश समेत परिवार के छह लोग मौजूद थे। परिवार पहले चौथी मंजिल पर पहुंचा, लेकिन पानी वहां तक भी आने लगा। इसके बाद सभी लोग मकान के सबसे ऊपरी हिस्से में चले गए। हालांकि, प्रकाश का एक बेटा उस समय स्कूल गया हुआ था और घर पर नहीं था। बाढ़ के बीच उन्हें लगातार अपने बेटे की चिंता सताती रही।



पाइप और रस्सी से कैसे हुआ परिवार का रेस्क्यू

बाढ़ के सबसे भयावह दौर में परिवार करीब एक से डेढ़ घंटे तक मकान के ऊपरी हिस्से में फंसा रहा। जब पानी का स्तर थोड़ा कम हुआ तो पास के टोल क्षेत्र से कुछ लोग उनकी मदद के लिए पहुंचे। बचाव के लिए लोगों ने दोनों इमारतों के बीच एक पाइप लगाया। इसके बाद रस्सी की मदद से परिवार तक पहुंच बनाई गई और सभी लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। इस तरह बाढ़ के बीच फंसे परिवार की जान बच सकी।

40 साल पुराने मकान का मजबूत था आधार

यह मकान चार दशक पुराना है। उनका मानना है कि उस समय निर्माण सामग्री की गुणवत्ता बेहतर थी। नदी के बेहद करीब होने के कारण मकान बनाते समय उसकी नींव को भी मजबूत रखने पर खास ध्यान दिया गया था। सुरक्षा के लिहाज से नींव के नीचे सड़क निर्माण में इस्तेमाल होने वाली सामग्री की दो-तीन परतें भी डाली गई थीं। इसी वजह से मकान का आधार काफी मजबूत बना। हालांकि, मकान पूरी तरह बाढ़ से अछूता नहीं रहा। निचले हिस्से में मौजूद दुकान और गोदाम को भारी नुकसान पहुंचा। बड़ी मात्रा में सामान बह गया, जबकि दो वाहन, बाइक और स्कूटर भी बाढ़ की चपेट में आ गए।

घर की मालकिन ॐ नमः शिवाय का कर रही थीं जाप

घर की मालकिन लक्ष्मी पांडेय ने भी उस घटना के बारे में अपना अनुभव साझा किया। एक मीडिया हाउस से चर्चा में उन्होंने कहा कि उन्हें भगवान शिव ने बचा लिया। लक्ष्मी ने कहा कि वह रोज आस्था के साथ भगवान शिव की पूजा करती हैं और उन्हें भरोसा है कि इसी वजह से भगवान ने उनकी जान बचाई। उन्होंने बताया कि जब वह बाढ़ के बीच घर में फंसी हुई थीं और चारों तरफ पानी तेज बहाव के साथ गुजर रहा था, तब वह लगातार ॐ नमः शिवायद्य का जाप कर रही थीं। उस घटना के दौरान बचकर सुरक्षित निकल आना दूसरे जन्म की तरह है। लक्ष्मी पांडे ने बताया कि उन्हें सिर्फ 5 मिनट पहले बाढ़ आने की खबर का पता चला। तब वह अपने पति के साथ दुकान में थीं। वे जल्दी से अपनी सासु मां और अपनी बेटी को बचाने के लिए घर पहुंचे। जब उन्होंने अपनी सास को घर छोड़ने को कहा तो उन्होंने इससे इनकार कर दिया।

ब्रीफ न्यूज

नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में जर्मनी ने भारत को बताया रोल मॉडल

नई दिल्ली, आरएनएन। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव और जर्मनी के पर्यावरण मंत्री कार्स्टन श्नाइडर ने मंगलवार को चौथे भारत-जर्मन पर्यावरण मंच की बैठक में अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमियों के संरक्षण और उनके विवेकपूर्ण उपयोग को लेकर एक संयुक्त घोषणा पर हस्ताक्षर किये, जिससे आर्द्रभूमियों के संबंध में वैज्ञानिक समझ मजबूत होने के साथ ही उनके बेहतर प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी बढ़ाने में मदद मिलेगी। यादव ने इस मौके पर कहा कि जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का नुकसान, प्रदूषण और संसाधनों की कमी जैसी पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए एकीकृत और सहयोगात्मक समाधान जरूरी हैं।

प. बंगाल में सार्वजनिक स्थानों पर थूकने पर लगेगा 100 रुपए जुर्माना

कोलकाता,आरएनएन। पश्चिम बंगाल सरकार ने मंगलवार को शहरी निकायों में घरों से निकलने वाले कचरे की निगरानी के लिए एक क्यूआर-आधारित प्रणाली शुरू करते हुए लोगों से गीले और सूखे कचरे को घर पर ही अलग-अलग करने को कहा है तथा सार्वजनिक स्थानों पर थूकने पर 100 रुपये जुर्माना लगाने की घोषणा की है। इस पहल के तहत हर घर को एक क्यूआर कोड दिया जाएगा, जिससे ननि कर्मचारी कचरा अलग करने के नियमों के पालन को रिकॉर्ड कर सकेंगे और वास्तविक समय में फीडबैक अपलोड कर सकेंगे।

आयात निर्भरता घटाने और रक्षा निर्यात बढ़ाने पर रक्षामंत्री का जोर

नई दिल्ली,आरएनएन। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने देश के रक्षा क्षेत्र के 16 सार्वजनिक उपक्रमों के वार्षिक कामकाज की मंगलवार को समीक्षा की। बैठक में रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ के साथ अफसरों ने रक्षा मंत्री को कामकाज, प्रमुख उपलब्धियों और भविष्य की कार्ययोजना की जानकारी दी। सिंह ने स्वदेशी उत्पादन और विनिर्माण क्षमता बढ़ाने, उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों के विकास, रक्षा निर्यात बढ़ाने, आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने और प्रमुख परियोजनाओं के क्रियान्वयन में प्रगति की समीक्षा की। डीपीएसयू का योगदान 1.29 लाख करोड़ रुपए रहा।

कार में सीएनजी भरते वक्त पाइप फटा, पेट्रोल पंप कर्मी की हुई मौत

रांची, आरएनएन। जमशेदपुर के गोलमुरी में एक पेट्रोल पंप पर भारी ब्लास्ट हुआ है। ये हादसा हावड़ा ब्रिज (साकची-कालीमाटी रोड) का है जहां आरके जैन भारत पेट्रोलियम पर गाड़ी में सीएनजी भरते समय पाइप फट गया। इस धमाके में पेट्रोल पंप के एक कर्मी की मौत हो गई। मृतक की पहचान तुषार कुमार,(24) के रूप में हुई है। तुषार सोनारी निवासी थे। तुषार कार में सीएनजी भर रहे थे। इसी दौरान अचानक प्रेशर से सीएनजी पाइप फट गई। नोजल तेज रफ्तार से तुषार के सिर के पिछले हिस्से में जा लगा। सहकर्मी उन्हें अस्पताल ले गए, लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

पेनरायन बंदरगाह के उन्नयन के लिए तीन देशों ने मिलाया हाथ

पलाऊ, आरएनएन। यूएस, न्यूजीलैंड और कुक आइलैंड्स ने उत्तरी कुक आइलैंड्स में रणनीतिक रूप से अहम पेनरायन एटोल पोट का उन्नयन के लिए एक अहम डील की घोषणा की है। इस कदम से दूरस्थ पा एनुआ क्षेत्रों में परिवहन संपर्क, समुद्री सुरक्षा और आर्थिक अवसरों को मजबूती मिलने की उम्मीद है। कुक आइलैंड्स के पीएम मार्क ब्राउन, न्यूजीलैंड के विदेश मंत्री विंस्टन पीटर्स और यूएस उप विदेश मंत्री क्रिस्टोफर लैंडौ ने पैसिफिक आइलैंड्स फोरम लीडर्स की बैठक से पहले पलाऊ में इस परियोजना की घोषणा की।

पीएम नरेन्द्र मोदी ने पाक प्रधानमंत्री शरीफ के सामने सुनाई खरी-खरी

आतंकवाद का पूरा नेटवर्क खत्म करो यह मानवता के सामने गंभीर चुनौती

किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में एससीओ शिखर सम्मेलन को प्रधानमंत्री ने किया संबोधित

● बिश्केक / (एजेंसी)

पाक के पीएम शहबाज शरीफ की मौजूदगी में पीएम नरेंद्र मोदी ने आतंकवाद को लेकर 26वें शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन में बेहद सख्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि आतंकवाद किसी के लिए भी रणनीतिक संपत्ति नहीं हो सकता। आतंकवाद को नीति के हथियार के तौर पर इस्तेमाल करने वाले और आतंकियों को पनाह व समर्थन देने वाले देशों को कड़ा संदेश दिया जाना चाहिए।

पीएम मोदी ने मंगलवार को किर्गिस्तान की राजधानी बिश्केक में आयोजित एससीओ शिखर सम्मेलन को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आतंकवाद पूरी मानवता के सामने एक गंभीर चुनौती है। आतंकवाद का पूरा सिस्टम खत्म करना होगा- पीएम ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई को सिर्फ आतंकियों के खिलाफ कार्रवाई तक सीमित नहीं रखना चाहिए। इसके पीछे काम करने वाले पूरे नेटवर्क को खत्म करना जरूरी है।



सीपीईसी पर दो टूक, चीन को याद दिलाई संप्रभुता

पीएम मोदी ने चीन-पाक का नाम लिए बिना सीपीईसी को लेकर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट्स में सभी देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान किया जाना चाहिए। सीपीईसी चीन की अहम परियोजना बीआरआई का एक प्रमुख हिस्सा है, जिसकी शुरुआत 2015 में हुई थी। यह परियोजना पीओके से होकर गुजरती है, जो भारत का वह इलाका है जिस पर 1947 से पाक का अवैध कब्जा है।





शर्मनाक फोटोक्रॉप के बाद शहबाज का डैमेज कंट्रोल

एससीओ के शिखर सम्मेलन में एक बार फिर पड़ोसी मुल्क पाक की किरकिरी हुई है। इस समिट में पीएम मोदी, रूसी राष्ट्रपति पुतिन, चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग और अन्य सदस्य देशों के नेताओं के अलावा पाक पीएम शरीफ भी पहुंचे हैं। इस दौरान जब पाक पीएम शहबाज शरीफ के ऑफिस ने ग्रुप फोटो शेयर की थी तो उसे क्रॉप कर दिया था। लेकिन, इस क्रॉप एडिटेड तस्वीर के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर पाक का मजाक उड़ा तो डैमेज कंट्रोल के लिए पाक पीएम ने खुद ही दोबारा पूरी फोटो शेयर की है। किर्गिस्तान के बिश्केक में एससीओ शिखर सम्मेलन में पीएम मोदी कई राष्ट्राध्यक्षों से मिले। मंगलवार को एससीओ बैठक के दौरान पीएम मोदी ने रूसी राष्ट्रपति पुतिन और चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग से एक साथ हाथ मिलाया। तीनों नेता गर्मजोशी से मुलाकात करते नजर आए। इस दौरान शहबाज शरीफ भी आसपास मौजूद थे, लेकिन वह मंच की तरफ साइड से पहुंचते नजर आए।

अब शेयर की SCO समिट की फुल फोटो

अमेरिकी सेना ने IRGC के ठिकानों पर किए हमले

तेहरान, आरएनएन। ईरान और यूएस के बीच तनाव फिर बढ़ गया है। यूएस बलों ने ईरान में आईआरजीसी के ठिकानों को निशाना बनाकर हमले शुरू किए हैं। ईरान के बंदर अब्बास के पूर्वी इलाके में कई धमाकों की आवाज सुनी गई है। केशम में मस्सान गांव के आसपास पांच से ज्यादा धमाके हुए । इसके अलावा केशम में होर्मुज की ओर से भी चार धमाकों की आवाज सुनी गई। यूएस कार्रवाई को लेकर स्थिति पर नजर रखी जा रही है।

यूक्रेन पर बरसे रूसी मिसाइल-ड्रोन, भारतीय समेत 12 लोगों की मौत

● कीव/ (हि.स.)



रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध के बीच राजधानी कीव और आसपास के इलाकों में रूस ने एक बार फिर बड़े पैमाने पर मिसाइल और ड्रोन हमले किए। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के मुताबिक, हमले में 12 लोगों की मौत हुई है, जिनमें एक भारतीय नागरिक भी शामिल है। दर्जनों लोग घायल हुए हैं।

यह हमला ऐसे समय हुआ है जब एक दिन पहले ही पीएम नरेंद्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से यूक्रेन युद्ध खत्म करने की अपील की थी। जेलेंस्की ने मंगलवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में बताया कि रूस ने बड़ी संख्या में जेट-पावर्ड ड्रोन और बैलिस्टिक मिसाइलों से हमला किया।

हमले में रेजिडेंशियल बिल्डिंग्स, रेलवे डिपो और नागरिक बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया गया। कीव और आसपास के क्षेत्र में यह छठे दिन रूसी हमला था। कई जगहों पर आग लग गई, जबकि देश में हजारों परिवारों को बिजली संकट का सामना करना पड़ा। जेलेंस्की के अनुसार, रूसी हमलों में 12 लोगों की मौत हुई है, जिनमें एक भारतीय भी शामिल है।

यूक्रेन में रूस के हमले में एक भारतीय नागरिक की मौत दुखद: भारतीय दूतावास

नई दिल्ली, आरएनएन। यूक्रेन में भारतीय दूतावास ने रूस के हमले में एक भारतीय नागरिक की मौत पर दुख व्यक्त करते हुए कहा है कि वह शोक-संतप्त परिवार के संपर्क में है और उनकी हर संभव मदद की जा रही है। दूतावास ने मंगलवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में कहा कि वह पार्थिव शरीर की स्वदेश वापसी के लिए हर संभव सहायता कर रहा है। दूतावास ने कहा कि यूक्रेन में हुए एक हमले में एक भारतीय नागरिक की दुखद मृत्यु से हमें गहरा दुःख हुआ है। दूतावास शोक-संतप्त परिवार के संपर्क में है और अपनी गहरी संवेदनाएँ व्यक्त करता है। एक अन्य पोस्ट में दूतावास ने कहा हम पार्थिव शरीर की शीघ्र स्वदेश वापसी के लिए हर संभव सहायता प्रदान कर रहे हैं।

टीचर ने 4 घंटे धूप में खड़े रखा छात्रा ने छत से लगाई छलांग

● नई दिल्ली/ (हि.स.)।

हरियाणा के फरीदाबाद में एक स्कूल छात्रा की मौत ने पूरे इलाके को झकझोर दिया है। डबुआ-गाजीपुर रोड स्थित नवोदय विद्या निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में मंगलवार को 11वीं कक्षा की 16 वर्षीय छात्रा जानवी ने स्कूल की तीसरी मंजिल से छलांग लगा दी।

अस्पताल में डॉक्टरों ने किया मृत घोषित

घटना के बाद स्कूल प्रशासन और स्थानीय लोगों की मदद से छात्रा को पहले एक निजी अस्पताल ले जाया गया। हालत गंभीर होने पर उसे बीके अस्पताल रेफर किया गया। वहां डॉक्टरों ने जांच के बाद जाह्नवी को मृत घोषित कर दिया। छात्रा की मौत की खबर मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। मृतक छात्रा के पिता प्रमोद कुमार ने स्कूल की एक शिक्षिका पर गंभीर आरोप लगाए हैं। पिता का कहना है कि स्कूल में बिरयानी खाने को लेकर कुछ छात्राओं के बीच विवाद हुआ था।

परिवार का दावा है कि इस विवाद में जाह्नवी की कोई गलती नहीं थी। पिता के अनुसार, उन्हें स्कूल की अन्य छात्राओं ने बताया कि जाह्नवी को कथित तौर पर करीब 4 घंटे तक धूप में खड़ा रहने की सजा दी गई थी।

धनुष-बाण को फ्रीज करने की मांग दुर्भाग्यपूर्ण - एकनाथ शिंदे

नई दिल्ली/मुंबई। सुप्रीम कोर्ट में शिवसेना के नाम और चुनाव चिन्ह धनुष-बाण को लेकर चल रही सुनवाई के बीच उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे गुट पर जोरदार हमला बोला। उन्होंने कहा कि धनुष-बाण को फ्रीज करने की मांग दुर्भाग्यपूर्ण है। बालासाहेब ठाकरे के लिए धनुष-बाण केवल चुनाव चिन्ह नहीं, बल्कि बेहद प्रिय था।

दरअसल सुप्रीम कोर्ट में दलील के दौरान उबाठा गुट की तरफ से वकील कपिल सिब्बल ने सर्वोच्च अदालत में सुनवाई के दौरान धनुष-बाण चिन्ह को फ्रीज करने की मांग की थी इस मांग पर उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि २०२९ के बाद बालासाहेब ठाकरे के विचारों, हिंदुत्व और महाराष्ट्र की जनता के जनादेश को कमजोर करने का कामे उबाठे के द्वारों किया गया और अब बाबासाहेब के विचार, भूमिका और नीतियों को मिटाने की कोशिश की जा रही है। एकनाथ शिंदे जी ने आगे अपनी भूमिका रखते हुए कहा की असली शिवसैनिकों ने बाबासाहेब के विचारों को हमेशा जिंदा रखो है और आगे भी शिवसैनिक किसी भी कीमत में बाला साहब के विचारों के साथ कोई समझौता नहीं करेंगे।

मराठा समाज को लेकर सरकार सकारात्मक, आंदोलनकारियों से भी सकारात्मक रुख अपनाने की अपील

एकनाथ शिंदे ने मराठा आरक्षण मामले में अपनी भूमिका रखते हुए कहा की जब वो मुख्यमंत्री थे उस दौरान मराठा समाज को १० प्रतिशत आरक्षण देने, कुणबी प्रमाणपत्र के लिए आयोग गठित करने तथा सारथी और अण्णासाहेब पाटील आर्थिक विकास महामंडल के माध्यम से बिना ब्याज कर्ज जैसी कई योजनाएं सरकार ने लागू की हैं। उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि किसी भी दूसरे समाज के साथ अन्याय किए बिना मराठा समाज को न्याय देना महायुति सरकार की भूमिका है। जो भी कानूनी और न्यायसंगत है, उसे देने के लिए सरकार सकारात्मक है। उन्होंने अनशन कर रहे मनोज जरांगे पाटील से भी सकारात्मक भूमिका अपनाने की अपील की।



उन्होंने आगे कहा कि इस मामले में संविधान, पार्टी के संविधान और चुनाव आयोग के अधिकार जैसे कई कानूनी पहलू जुड़े हैं। इन सभी विषयों पर वकीलों से चर्चा की जाएगी। शिवसेना की ओर से सुप्रीम कोर्ट में दलील शुरू होने के बाद सामने आने वाले सभी सवालों का मजबूती से जवाब दिया जाएगा।

आज का इतिहास

- **1666:** लंदन में भीषण आग लगने से छह लोगों की मौत हुई और दस हजार इमारतें नष्ट हो गयीं।
- **1775:** पहले अमेरिकी युद्ध पोत हाना का जनरल जॉर्ज वाशिंगटन ने जलावतरण किया गया।
- **1885:** केरल के प्रसिद्ध समाज सुधारक टी. के. माधवन का जन्म।
- **1926:** इटली और यमन में हुए समझौते के तहत लाल सागर तट पर इटली का वर्चस्व कायम हुआ।
- **1930:** क्वेश्चन मार्क नामक विमान ने यूरोप से अमेरिका के लिए बिना कहीं रुके पहली बार उड़ान भरी।
- **1941:** प्रसिद्ध भारतीय अभिनेत्री साधना का जन्म।
- **1945:** जापान द्वारा हार स्वीकार कर लिए जाने के बाद 6 साल तक चला दूसरा विश्व युद्ध समाप्त हुआ।

अनुमान यूएन ने एक रिपोर्ट में दी जानकारी, कोलकाता और मुंबई में लाखों के बेघर होने का खतरा

समुद्र का जलस्तर बढ़ने से कई शहर होंगे जलमग्न

● नई दिल्ली / (हि.स.)।

कोलकाता और मुंबई में लाखों लोग समुद्र का जलस्तर बढ़ने और हमेशा के लिए पानी में डूब जाने के कारण अपने घर खोने के तात्कालिक खतरे का सामना कर रहे हैं। यूएन की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव की रिपोर्ट समुद्र के जलस्तर में वृद्धि से जुड़ी चुनौतियां तथा उनसे निपटने के तरीके और उपाय में कहा गया है। समुद्र का बढ़ता जलस्तर अब कोई दूर की बात या भविष्य का खतरा नहीं रह गया है; यह अभी हो रहा है और दर्ज इतिहास में किसी भी समय की तुलना में तेजी से हो रहा है। इसकी रफ्तार भी बढ़ रही है, जिससे समुद्र के जलस्तर में वृद्धि दुनिया भर की आबादी के लिए-चाहे वे विकसित देश हों या विकासशील-सबसे गंभीर खतरों में से एक बन गई है।

रिपोर्ट में समुद्र के जलस्तर में वृद्धि से जुड़ी चुनौतियां तथा उनसे निपटने के तरीके और उपायों के बारे में स्पष्टत: बताया गया है



मुख्य वजह है ग्लोबल वार्मिंग

समुद्र के जलस्तर में तेजी से हो रही बढ़ोतरी की मुख्य वजह इंसानों की वजह से हो रही ग्लोबल वार्मिंग है, जिसके कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं और गर्म होते महासागरों का पानी फैल रहा है। 2014 और 2023 के बीच दुनिया भर में समुद्र का जलस्तर हर साल 4.7 मि.मी. बढ़ा। अकेले 2024 में समुद्र का जलस्तर 5.9 मि.मी. बढ़ा जो एक नया रिकॉर्ड है। इसकी मुख्य वजह महासागरों का बहुत ज़्यादा गर्म होना था। कुछ इलाकों में तो यह गर्मी पिछले 4,000 सालों में सबसे ज्यादा थी। उम्मीद है कि 2050 तक यह रफ्तार बढ़ती रहेगी, क्योंकि क्लाइमेट सिस्टम में पहले से ही गर्मी जमा हो चुकी है। 2012-2025 के दौरान समुद्र के जलस्तर में बढ़ोतरी की सालाना दर 4.75 मि.मी. थी। 2025 में दुनिया भर में समुद्र का औसत जलस्तर 2024 के रिकॉर्ड-हाई लेवल के बराबर ही रहा, जबकि 2023-2024 के दौरान अल नीनो की वजह से महासागरों के बहुत ज्यादा गर्म होने से इसमें लगभग 5 मि.मी. की तेजी से बढ़ोतरी हुई थी।

दूसरे देशों की जासूसी कोस्को के जहाज से करा रहा चीन

● वॉशिंगटन / (एजेंसी)

यूएस अफसरों ने एक चौंकाने वा किया है। चीन की सरकारा शिपिंग कंपनी कोस्को अपने जहाजों पर छिपे हुए खास उपकरण लगाकर दूसरे देशों के सैन्य संचार की जानकारी चुरा रही है।

अमेरिका और एशियाई देश भी हैं निशाने पर

इसमें अमेरिका भी शामिल है। दो वरिष्ठ अफसरो ने नाम न बताने की शर्त पर एजेंसी को यह जानकारी दी। ये उपकरण आम रेडियो या संचार यंत्र नहीं हैं।

अधिकारी बताते हैं कि ये बहुत एडवांस्ड सिग्नल इंटेलिजेंस कलेक्शन सिस्टम हैं। इनकी मदद से चीन यूरोप, उत्तरी अमेरिका और एशिया के आसपास जहाजों और विमानों के सैन्य संदेश और एन्क्रिप्शन तकनीक की जानकारी जुटा रहा है। साथ ही महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों पर नजर भी रखी जा रही है।

चीन ने दावे को किया खारिज

अधिकारियों के मुताबिक कोस्को और बीजिंग के बीच दशकों पुरानी साझेदारी है। इससे चीन को क्षेत्रीय विवादों में फायदा मिलता है और विदेशी सैन्य गतिविधियों की पहले से जानकारी भी मिल जाती है। हालांकि, चीन के वाशिंगटन स्थित दूतावास ने इन आरोपों को पूरी तरह खारिज कर दिया है। दूतावास प्रवक्ता लियू चांग ने कहा कि चीनी सरकार कभी किसी कंपनी या व्यक्ति से दूसरे देशों में कानून तोड़कर जानकारी इकट्ठा करने को नहीं कहती।

संपादकीय

उम्मीद से ज्यादा तेजी

ऐसे वक्त में जब अमेरिका-ईरान युद्ध से कच्चे तेल के दामों में अप्रत्याशित वृद्धि हुई और आपूर्ति श्रृंखला बाधित रही, देश की अर्थव्यवस्था में मजबूती का संकेत सुखद ही कहा जायेगा। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार वित्तीय वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद दर 7.8 रही है। यह प्रदर्शन केंद्रीय बैंक आरबीआई के सात फीसदी की विकास दर के अनुमान से भी अधिक है। यह दर बाजार की उम्मीदों से भी अधिक है। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष, ऊर्जा बाजार में उतार-चढ़ाव और ग्लोबल अनिश्चितता के बावजूद देश सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्थाओं में शुमार है। दरअसल, इस तेज विकास दर को पाने हेतु विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन से मदद मिली है। वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में सेवा क्षेत्र में दस फीसदी की विकास दर उत्साहजनक रही है। विनिर्माण क्षेत्र में 9.2 तथा निर्माण क्षेत्र में विकास दर 7.7 फीसदी की वृद्धि ने देश की आर्थिकी को गति दी है। दरअसल,औद्योगिक विकास ने भी सकल विकास दर को संबल दिया । इससे भारतीय घरेलू अर्थव्यवस्था के महत्व का पता चलता है। उल्लेखनीय है इस दौरान देश में उपभोक्ता मांग अच्छी बनी रही। वास्तव में देश के बड़े उपभोक्ता बाजार ने वैश्विक मांग और व्यापार में आई शिथिलता के बावजूद स्वदेशी आर्थिकी को मजबूती दी है। भले ही देश का विपक्ष इस कामयाबी को आंकड़ों की बाजीगरी बता रहा है लेकिन सरकार इस उपलब्धि पर अपनी पीठ थपथपा सकती है। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि वैश्विक स्तर पर जारी अस्थिरता के चलते भविष्य में पैदा होने वाले जोखिम कम नहीं हो जाते हैं। विकास दर के इन आंकड़ों के चलते हमें लापरवाह होने से बचना चाहिए। पूंजीगत सामान के ज्यादा उत्पादन व सरकारी पूंजीगत व्यय में वृद्धि से पता चलता है कि देश में संरचनात्मक विकास व निवेश की मांग बनी हुई है। वास्तव में देश के नीति-नियंताओं को हमारी खाद्य श्रृंखला को मजबूती देने वाले और महंगाई को प्रभावित करने वाले कृषि उत्पादन में तेजी लाने की जरूरत है। ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के बीच इस बार देश के विभिन्न क्षेत्रों में हुई असमान बारिश का असर भी कृषि उत्पादन पर पड़ सकता है। देश का कृषि क्षेत्र अभी भी मौसम की मार के प्रति संवेदनशील बना हुआ है। बहरहाल, पहली तिमाही के उत्साहवर्धक आंकड़े देश की वार्षिक विकास की अनुमानित दर में संशोधन करने की जरूरत को बताते हैं। यदि देश में घरेलू मांग और निवेश मजबूत बने रहते हैं तो हमें भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वार्षिक विकास दर का 6.7 फीसदी का अनुमान कम लग सकता है। इसके बावजूद, एक अच्छे तिमाही नतीजों का मतलब यह नहीं है कि आसन्न जोखिम से पूरी तरह बचा जा सकता है। ध्यान रहे कि 7.8 फीसदी की विकास दर पिछली तिमाही की 8.6 फीसदी की वृद्धि दर के मुकाबले थोड़ा कम है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में जारी अनिश्चितताएं अभी बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। वैश्विक कारोबारी तनाव, भू-राजनीतिक टकराव और ऊर्जा आपूर्ति में लगातार जारी संभावित बाधाओं से हमारा लागत मूल्य बढ़ सकता है। जिससे देश के नियातों में वृद्धि की संभावनाएं कमजोर हो सकती हैं। भारत जैसे देश के लिये कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है, जो अपने अधिकांश ऊर्जा संसाधनों का आयात करता है। जरूरी यह भी है कि देश की विकास दर में दर्शाई जा रही तेजी का अहसास आम आदमी की जिंदगी में भी दिखायी दे। देश की आंतरिक स्थितियों पर भी ध्यान देना जरूरी है। विकास दर वृद्धि के सम्मोहन में देश में महंगाई और बेरोजगारी की समस्या की अनदेखी नहीं की जा सकती। बहरहाल, जहां सरकार विकास दर को सुधारों का प्रतिफल बता रही है, वहीं विपक्ष जीडीपी के अनुमानों के तरीकों पर सवाल उठा रहा है। ऐसी जांच-पड़ताल व बहस ठोस सबूतों पर आधारित होनी चाहिए। बहरहाल, सरकार को विकास दर के आंकड़ों से आत्ममुग्ध नहीं होना चाहिए। जरूरत इस बात की है कि विकास के आंकड़ों को व्यापक विकास में बदला जाए। जिससे सही मायने में रोजगार बढ़े, लोगों की आमदनी बढ़े और हम आसन्न वैश्विक संकटों का मुकाबला करने में सक्षम हों।

नीति और माणा दर्रों से कैलाश यात्रा की आस

डॉ बृजेश सती

नेपाल की हालिया घटना के बाद कैलाश मानसरोवर यात्रा के सुरक्षित और वैकल्पिक मार्गों को लेकर नई बहस शुरू हो गई है। यात्रियों की सुरक्षा और आपात स्थिति में राहत-बचाव की संभावनाओं को देखते हुए उत्तराखंड के सीमांत जनपदों से कैलाश मानसरोवर यात्रा शुरू करने की मांग फिर जोर पकड़ने लगी है। जानकार मानते हैं कि पारंपरिक मार्गों को फिर से विकसित किया जाए तो यह सुगम यात्रा के साथ ही सुरक्षित वैकल्पिक मार्ग के तौर पर उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा सीमांत क्षेत्रों के विकास में भी अहम भूमिका निभा सकता है।

इधर केंद्र सरकार की वाइब्रेट विलेज योजना से जनपद चमोली, उत्तरकाशी और पिथौरागढ़ के सीमांत गांवों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार और रोजगार के साधन जुटाये जा रहे हैं। वहीं अब सीमा दर्शन योजना के अंतर्गत भारत चीन सीमा से जुड़े पुराने स्थानों में चहल पहल भी शुरू हो गई है। नीति घाटी में किलोंग मंडी पर्यटकों के लिए खुल गई है।

भारत चीन युद्ध के बाद से बंद है मार्ग

सन 1962 में चीन के भारत पर आक्रमण से पहले माणा और नीति घाटी के व्यापारियों का तिब्बत से सीधा व्यापारिक संबंध था । इसके अलावा कैलाश मानसरोवर यात्रा माणा दर्रे से की जाती थी। भारतीय व्यापारी तिब्बत की गरतोक मंडी में जाकर अपने उत्पादों को बेचते थे और वहां से सामान लाते थे। व्यापारियों के साथ बदरीनाथ की यात्रा पर आए तीर्थयात्री, साधु संत दर्शन के बाद माणा दर्रे से तिब्बत में प्रवेशकर कैलास मानसरोवर जाते थे। सन 1962 में भारत चीन युद्ध के बाद यहां के बाद व्यापारियों का न केवल व्यापारिक संबंध समाप्त हो गया। इन दर्रों से मानसरोवर की पारंपरिक यात्रा भी पूरी तरह से बंद हो गई । उत्तराखंड राज्य के चमोली, पिथौरागढ़ और उत्तरकाशी जनपदों के सीमांत गांवों से कैलाश मानसरोवर और तिब्बत की यात्रा की जाती थी। वर्तमान में केवल पिथौरागढ़ के लिपुलेख दर्रा से कैलास मानसरोवर की यात्रा संचालित की जाती है।

तीन रास्तों से होती है मानसरोवर यात्रा

मौजद समय में कैलाश मानसरोवर यात्रा नेपाल के अलावा उत्तराखंड के लिपुलेख और सिक्किम के नाथुला दर्रे से संचालित की जाती है। नाथुला दर्रे से यह 2400 किमी और लिपुलेख दर्रा से लगभग एक हजार किमी का रास्ता तय करना पड़ता है। इसमें काफी समय लगता है। हालांकि नेपाल के काठमांडू से यह दूरी काफी कम है। उत्तराखंड राज्य के पिथौरागढ़ जिले के लिपुलेख दर्रा से कैलाश मानसरोवर की दूरी एक हजार किमी है ।दिल्ली से काठगोदाम, पिथौरागढ़ और धारचूला होते हुए लिपुलेख दर्रे से होकर तिब्बत में प्रवेश करते हैं। इस यात्रा का संचालन कुमाऊँ मंडल विकास निगम करता है। सिक्कम के नाथूला दर्रा से भी यह यात्रा की जाती है। दिल्ली से गंगटोक होते हुए नाथूला दर्रे से तिब्बत होकर यहां पहुंचा जाता है। यह मार्ग अधिक सुविधाजनक माना जाता है। इसमें कम पैदल चलना पड़ता है। इस यात्रा का तीसरा रास्ता नेपाल के काठमांडू से है। कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए नेपाल के रास्ते श्रद्धालुओं के लिए तीन प्रमुख यात्रा मार्ग हैं। यात्रियों की सुविधा और समय के अनुसार इन मार्गों का चयन किया जा सकता है। पहला मार्ग ओवरलैंड रूट है, जिसके तहत काठमांडू से केरुंग होते हुए मानसरोवर और कैलाश की परिक्रमा कर वापस काठमांडू पहुंचा जाता है। इस यात्रा में करीब 14 दिन लगते हैं। दूसरा हवाई मार्ग। इसमें काठमांडू से नेपालगंज और वहां से नियमित उड़ान द्वारा सिमिकोट पहुंचा जाता है। इसके बाद हेलीकॉप्टर से हिल्सा, फिर पुरांग होते हुए मानसरोवर और कैलाश की यात्रा की जाती है। इस यात्रा की अवधि करीब 11 दिन है।

तीसरा मार्ग ल्हासा रूट है। इसमें काठमांडू से हवाई मार्ग द्वारा ल्हासा पहुंचने के बाद शिगात्से और सागा होते हुए मानसरोवर तथा कैलाश की यात्रा की जाती है। इस मार्ग से पूरी यात्रा में करीब 16 दिन लगते हैं।

दिल्ली से मानसरोवर की कम हो सकती दूरी

नीति घाटी से कैलाश मानसरोवर की दूरी सबसे कम है। यह दूरी 648 किलोमीटर है। दिल्ली से इस यात्रा का अहम पड़ाव ज्योतिर्मठ है। जो देश राजधानी से 480 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां से 65 किलोमीटर मलारी और यहां से 29 किमी की दूरी पर सुमना है। सुमना से 12 और यहां से रिमखिम 8 किलोमीटर है। रिमखिम से भारतीय सीमा का अंतिम पड़ाव बड़ाहोती महज 12 किमी दूरी पर है। यहां से कैलाश मानसरोवर की कुल दूरी 54 किमी है। यह कैलाश मानसरोवर यात्रा का यह सरल, सुगम सबसे कम दूरी का यात्रा मार्ग है।

इसी तरह दिल्ली - ज्योतिर्मठ माणा पास एक दूसरा यात्रा मार्ग है ।सन 1962 से पहले इस पारंपरिक मार्ग से कैलाश मानसरोवर यात्रा की जाती थी ।बदरीनाथ धाम आने वाले यात्री, यहीं से होकर कैलाश मानसरोवर की यात्रा करते थे।

जहां तक कुल दूरी का सवाल है, तो यह दिल्ली से 650 किलोमीटर का सफर है। दिल्ली से बदरीनाथ धाम की दूरी 524 किलो मीटर है। यहां से कैलाश मानसरोवर 126 किमी के फासले पर है। कम तनाव पूर्ण है यह इलाका भारत की तिब्बत से सटा यह क्षेत्र अन्य सरहदों के मुकाबले सुरक्षित है। सन 1962 भारत चीन युद्ध के दौरान इस सीमा पर ज्यादा तनाव नहीं था। केवल देश के पश्चिमी और पूर्वी इलाकों में लड़ाई हुई। इस सीमा पर अपेक्षाकृत कम तनाव रहता है। हालांकि कभी-कभी चीनी सैनिक तो कभी भारतीय सैनिक एक दूसरे के क्षेत्र में चल कदमी करते हैं। पूर्व में इस तरह की कुछ घटनाएं सामने आई थी। इसके अलावा इस सीमा पर कोई बड़ा तनाव नहीं रहा।

हिमालय से मिल रही चेतावनी, फिर भी नहीं संभल रहे हम

कुलभूषण उपमन्यु

औद्योगिक क्रांति के बाद जिस तकनीकी दंभ का प्रादुर्भाव हुआ है, उसके आलोक में वैज्ञानिकता के नाम पर प्रकृति से आधुनिक मानव युद्धरत है। ऊर्जा की अत्यधिक भूख ने ऊर्जा उत्पादन के ऐसे तरीकों पर निर्भरता बढ़ा दी है, जो वैश्विक तापमान में वृद्धि करके जलवायु परिवर्तन का कारण बन रहे हैं। पिछली डेढ़ सदी में वैश्विक स्तर पर तापमान डेढ़ डिग्री तक बढ़ चुका है। अब भी हम लगभग उसी रास्ते पर दौड़ रहे हैं। हिमालय का क्रोध केवल भारत वर्ष के कारण नहीं है, यह तो सारी, दुनिया, विशेष कर विकसित देशों का किया धरा है, किन्तु बाकी सभी देश भी तो उन्हीं विकसित देशों की विकास पद्धति का ही अनुकरण कर रहे हैं और जलवायु परिवर्तन में योगदान करके प्रकृति के संतुलन को नष्ट करने में लगे हुए हैं।

प्रकृति बार-बार चेतावनी देती है, किन्तु हम समझने वाले नहीं हैं, क्योंकि हम इस गलतफहमी में हैं कि हम कुछ भी करके सुरक्षित निकल लेंगे। न तो हम पश्चिम के बफीर्ले तूफानों से समझ रहे हैं न ही रेगिस्तानी बर्फबारी से समझ रहे हैं। ध्रुवीय प्रदेशों से लेकर हिमालय तक ग्लेशियरों के पिघलने से हो रही तबाही से, मासूम जिंदगियों का काल-कलवित हो जाना हमारे हृदय में न तो दया का भाव पैदा कर पा रहा है न ही अपने लालच के चलते प्रकृति को पहुंचाए जा रहे नुकसान के बारे में पुनर्विचार करने की ओर मुड़ रहा है। गेंद को एक-दूसरे के पाले में धकेला जा रहा है। जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने वाले संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयासों से अमेरिका जैसे भारी प्रदूषणकारी देश बाहर निकल चुके हैं। चीन और भारत हिमालय में बड़े से बड़े बांधों के निर्माण में डटे हुए हैं, जिससे होने वाली तोड़फोड़ और मीथेन उत्सर्जन से हिमालय में वैश्विक तापमान में वृद्धि की औसत से ज्यादा वृद्धि हुई है। नतीजा हम ही भुगत रहे हैं। कभी पारछू की बाढ़ में, सतलुज में तो कभी थुनाग-जंजैहली में। कभी धराली में तो कभी केदारनाथ में। हम जानते तो सब कुछ हैं पर समझेंगे नहीं, क्योंकि हम वैज्ञानिक युग के अहंकारपूर्ण शक्तिशाली देश हैं। प्रकृति की ताकत के आगे बार-बार शर्मिंदा होने के बाद भी हम प्राकृतिक आपदा कह कर मामले को टाल देते हैं, जबकि हमें इन्हें मानव निर्मित प्राकृतिक आपदा कहना चाहिए, ताकि हमें अपने गैरजिम्मेदार कारनामों की याद आती रहे, जिससे शायद जागने में मदद मिले।

वर्तमान नेपाल त्रासदी ने जिस तरह हजारों बेशकीमती जान काल कलवित की हैं, वह वैश्विक चेतना को झकझोरने वाली घटना है। भारत की स्थिति भी इस विषय में अच्छी नहीं है. हिमाचल प्रदेश से लेकर अरुणाचल तक कई जोखिमपूर्ण ग्लेशियर झीलें विद्यमान हैं। हिमाचल में लाहुल घाटी की घेपांग घाट ग्लेशियल झील सहित 48 ऐसी झीलें हैं। उत्तराखंड में 13, लद्दाख में 35, सिक्किम में 40, अरुणाचल में 28 उच्च जोखिम वाली ग्लेशियल झीलें मौजूद हैं। सिक्किम भी 2023 में दक्षिणी ल्होनाक ग्लेशियल झील के फटने से भारी त्रासदी झेल चुका है।

वर्तमान विकास गतिविधियां हिमालय में जान-माल के लिए खतरा बढ़ा रही हैं। जब जिन्दा ही नहीं रहेंगे, तो उस विकास का क्या करेंगे। एक ओर बड़े-बड़े देश युद्धों में उलझे हुए हैं। युद्ध भी जितना वायु प्रदूषण फैला रहे हैं, वह भी जलवायु परिवर्तन का बड़ा कारण बन रहे हैं। आतंकवाद और युद्ध दोनों से ही बचने की जरूरत है। बातचीत से समस्याएं हल हो सकती हैं। युद्ध के बाद भी तो बातचीत ही करनी पड़ती है। सांप्रदायिक घृणा जनित आतंकवाद से भी तौबा की जानी चाहिए। कोई संप्रदाय मृत्यु उपरांत नर्क में जाता है या स्वर्ग में इस बात की चिंता किसी को करने की क्या जरूरत है, जो जाएगा वह खुद देख लेगा। फिजूल की आत्मप्रशंसा जनित झगड़ों से ऊपर उठना जरूरी हो गया है, क्योंकि वर्तमान युद्ध और जलवायु परिवर्तन के खतरे भीषण विध्वंस कारक होते जा रहे हैं।

भारतवर्ष में पर्यावरणीय आन्दोलन 1980 के दशक से ही वैकल्पिक विकास नीति विशेषकर हिमालय क्षेत्रों के लिए बनाने की बात कर रहे हैं। चिपको आन्दोलन से लेकर हिमालय नीति अभियान, हिमालय क्षेत्र में पर्वत विशिष्ट परिशितिकीय दृष्टि से निरापद विकास नीति के लिए आवाज उठा रहे हैं। 1992 में योजना आयोग ने डॉ. एसजेड कासिम की अध्यक्षता में विशेषज्ञ समूह का गठन किया था, जिसने हिमालय में विकास के लिए कुछ दिशा-निर्देश तय किए थे, जिनमें हिमालय में करणीय और नहीं करने योग्य गतिविधियों के सुझाव दिए गए थे। इसके लिए व्यवस्थागत सुझाव भी दिए गए थे, किन्तु बात आगे नहीं बढ़ पाई। उसके बाद कितने ही नए अनुभव संचित हो चुके हैं, जिन पर आधारित सावधानियां और दिशाएं तय की जा सकती हैं। हमें आशा करनी चाहिए कि जब जागे तभी सवेरा वाली कहावत पर विश्वास करते हुए पर्यावरण मित्र विकास की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास शुरू करेंगे। संयुक्त राष्ट्र संघ से मिल कर चीन और अमेरिका जैसे अत्यधिक हरित प्रभाव गैसों का उत्सर्जन करने वाले देशों को भी पर्यावरण मित्र विकास की दिशा में गंभीर सहयोग करने के लिए प्रेरित किया जाना वांछित है। राष्ट्रपति ट्रंप के आने के बाद अमेरिका का जलवायु परिवर्तन रोकने वाली वैश्विक संधियों से बाहर हो जाना चिंता योग्य है। स्वयं सही विकास नीति बना कर वैश्विक स्तर पर दबाव समूह को सशक्त करने की दिशा में भारत महती योगदान कर सकता है।

(लेखक, पर्यावरणविद् और हिमालय नीति अभियान के अध्यक्ष हैं।)

हाशिए पर वन्देमातरम, धिक्कार है ऐसी लाचारी, पहले केरलम और अब कर्नाटक!

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

क्या कोई संप्रभु राष्ट्र अपनी ही राष्ट्रीय चेतना के सबसे प्रखर उद्घोष को राजनीतिक सौदेबाजी, सरकारी निर्णयों और वोटबैंक की संकीर्ण गणनाओं के बीच दम तोड़ने के लिए छोड़ सकता है? यह प्रश्न आज इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि वन्देमातरम् उस भारत की आवाज है, जिसके लिए असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की लेखनी से निकला यह उद्घोष ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष में करोड़ों भारतीयों के भीतर स्वाधीनता की चेतना जगाने वाला मंत्र बना था।

जिस वन्देमातरम को सुनकर स्वतंत्रता सेनानी फांसी के फंदे तक मुस्कराते हुए पहुंचे, आज उसी के स्वर को राजनीतिक सुविधा के अनुसार छोटा करने की बहस खड़ी हो गई है। इससे बड़ा दुर्भाग्य और क्या होगा कि राष्ट्र की भावनाओं से जुड़े प्रतीकों को भी चुनावी गणित की कसौटी पर तौला जाने लगे?

केरलम में वन्देमातरम को लेकर विवाद नया नहीं है। विधानसभा के उद्घाटन सत्र में पुलिस बैंड द्वारा राष्ट्रगीत को पूरा न बजाए जाने पर राज्यपाल की आपत्ति सामने आई। स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रमों में भी इसके गायन को लेकर राजनीतिक विवाद उठे। कांग्रेस सांसद राजमोहन उन्नीथन ने तो यह तक कहा कि केरलम्में वन्देमातरम का पूरा संस्करण नहीं गाया जाएगा और राज्य अपनी पुरानी परंपरा पर कायम रहेगा।

सोशल मीडिया पर सामने आए एक वीडियो ने भी विवाद को और तीखा किया, जिसमें कांग्रेस-नीत गठबंधन के कुछ नेता वन्देमातरम् के गायन के दौरान बैठे दिखाई दिए। भाजपा ने इसे तुष्टिकरण की राजनीति बताते हुए कांग्रेस पर जमात-ए-इस्लामी और मुस्लिम लीग जैसी ताकतों के दबाव में आने का आरोप लगाया। अब यही विवाद कर्नाटक पहुंच गया है।

मुख्यमंत्री डी. के. शिवकुमार ने स्पष्ट किया है कि उनकी सरकार सार्वजनिक और सरकारी कार्यक्रमों में वन्देमातरम् के पहले दो अंतरे ही गाने की कांग्रेस की नीति पर कायम रहेगी। उनका कहना है कि स्वतंत्रता दिवस पर उनकी जानकारी के बिना सभी छह अंतरे गाए गए, पर भविष्य में ऐसा नहीं होगा। यहीं से सवाल उठता है कि क्या राष्ट्रगीत भी राजनीतिक दलों के निर्णय का विषय हो सकता है?

कर्नाटक में मंत्री प्रियांक खरगे की प्रतिक्रिया और विपक्ष के आरोप-प्रत्यारोप ने इस विवाद को और राजनीतिक बना दिया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कांग्रेस के इस रुख को राष्ट्रगीत को सीमित करने वाला निर्णय बताते हुए इसे वोटबैंक की राजनीति से जोड़ा है। भाजपा विधायक डी. वेदव्यास कामथ और नेता आर. अशोक ने भी कांग्रेस पर तुष्टिकरण की राजनीति करने का आरोप लगाया है, किंतु असली प्रश्न इससे कहीं बड़ा है।

प्रश्न कांग्रेस या भाजपा का नहीं, भारत की राष्ट्रीय चेतना का है। यदि किसी राजनीतिक दल को किसी समुदाय की भावनाओं के कारण राष्ट्रगीत के स्वरूप में परिवर्तन करना उचित लगता है, तो कल राष्ट्रीय प्रतीकों के दूसरे प्रश्नों पर भी ऐसी ही राजनीतिक सौदेबाजी की शुरूआत हो सकती है? क्या यह किसी को नहीं पता कि भारत विविधताओं का देश है? बेशक; हर नागरिक की धार्मिक और सांस्कृतिक आस्थाओं का सम्मान होना चाहिए, लेकिन राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान! उनका क्या?

यहां ध्यान रहे, किसी नागरिक को वन्देमातरम् के अर्थ या उसके धार्मिक संदर्भ को लेकर वैचारिक आपत्ति हो सकती है, पर उसका समाधान राष्ट्रभावना को राजनीतिक दबाव के सामने झुका देना नहीं हो सकता। यह तर्क भी विचारणीय है कि वन्देमातरम्में मातृभूमि की तुलना दुर्गा या लक्ष्मी जैसी देवियों से की गई है, इसलिए कुछ लोग इसके पूरे स्वरूप को स्वीकार नहीं करते। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में अनेक मुस्लिम नेता भी राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा रहे और वन्देमातरम्-उस दौर में व्यापक स्वतंत्रता चेतना का उद्घोष बना, इसलिए इस पूरे प्रश्न को आज के संकीर्ण राजनीतिक चश्मे से देखना इतिहास के साथ न्याय नहीं अन्याय है। वरिष्ठ अधिवक्ता एसवी श्रीनिवास का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्या राजनीतिक गणनाओं को यह तय करने दिया जा सकता है कि राष्ट्र के प्रतीकों का सम्मान किस प्रकार किया जाए? वन्देमातरम चुनावी राजनीति का सौदेबाजी का मोहरा नहीं हो सकता। यह भारत की राष्ट्रीय चेतना की ऐतिहासिक अभिव्यक्ति है ।वरिष्ठ अधिवक्ता आशुतोष कुमार झा ने केंद्र और राज्यों के संवैधानिक संबंधों की ओर ध्यान दिलाया है। भारतीय संविधान में केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का स्पष्ट विभाजन है। संविधान के अनुच्छेद 1 में भारत को राज्यों का संघ कहा गया है। संविधान के भाग 11 में केंद्र और राज्यों के विधायी तथा प्रशासनिक संबंधों की व्यवस्था की गई है। इसी तरह से सातवीं अनुसूची के अंतर्गत संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची के माध्यम से शक्तियों का विभाजन किया गया है, इसलिए यदि केंद्र ने राष्ट्रगीत के संबंध में कोई वैधानिक या प्रशासनिक व्यवस्था निर्धारित की है, तो यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि राज्य सरकारें उसके साथ किस सीमा तक और किस प्रकार चलेंगी। संघीय व्यवस्था का अर्थ टकराव नहीं, संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर सहयोग है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता यही है कि वन्देमातरम् को कांग्रेस बनाम भाजपा के विवाद में कैद न किया जाए। इसे किसी सरकार, दल या समुदाय की संपत्ति बनाने का प्रयास भी उचित नहीं होगा। यह उन पीढ़ियों की विरासत है जिन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। राष्ट्र के प्रतीकों का सम्मान किसी व्यक्ति की पार्टीगत निष्ठा या मजहब या रिलीजन की संकीर्ण सोच से तय नहीं होना चाहिए। सरकारें आती-जाती हैं, राजनीतिक समीकरण बदलते हैं, चुनाव परिणाम बदलते हैं, पर राष्ट्र की गरिमा स्थायी होती है।

केरलम से कर्नाटक तक उठता यह विवाद इसलिए गंभीर है कि यह हमें चेताता है, यदि राष्ट्रीय प्रतीकों के सम्मान को भी वोटबैंक की राजनीति के हवाले कर दिया गया, तो राष्ट्रभावना धीरे-धीरे राजनीतिक सुविधा की कैदी बन जाएगी। तुष्टिकरण की राजनीति की सीमा वहीं समाप्त होनी चाहिए, जहां राष्ट्र का सम्मान शुरू होता है। असहमति का अधिकार लोकतंत्र की शक्ति है, मगर राष्ट्र के गौरव के साथ समझौता लोकतंत्र की मजबूरी नहीं हो सकता। आज आवश्यकता किसी राजनीतिक दल को नीचा दिखाने के स्थान पर उस मानसिकता को हराने की है जो राष्ट्रभावना को चुनावी गणित से छोटा समझती है। वन्देमातरम् को हाशिए से उठाकर उसके उचित राष्ट्रीय सम्मान के स्थान पर प्रतिष्ठित करना हम सभी का सामूहिक दायित्व है, क्योंकि जिस दिन किसी राष्ट्र को अपनी मातृभूमि का जयघोष करने में भी राजनीतिक अनुमति की आवश्यकता महसूस होने लगे, उसी दिन से राष्ट्र का स्वाभिमान कमजोर होने लगता है। ऐसे में हम सभी को प्रयासपूर्वक वन्देमातरम का स्वर ऊंचा रखना होगा।

(लेखक, हिन्दुस्थान समाचार से संबद्ध हैं।)

त्योहारों की मिठास पर महंगाई का साया

वीरेंद्र बहादुर सिंह

त्योहार आते ही बाजार का माहौल बदल जाता है। दुकानों की रोशनी बढ़ जाती है और मिठाइयों की खुशबू वातावरण में घुलने लगती है। लेकिन इस बार त्योहारों की मिठास के साथ एक सवाल भी सामने है, क्या मिठाई हमारी जेब पर भारी पड़ने वाली है? चीनी की कीमतों को लेकर चिंता बढ़ रही है। मामला केवल मिठाई महंगी होने तक सीमित नहीं है। इसके पीछे गन्ना है, गन्ने के पीछे किसान है और किसान के पीछे खेती की बढ़ती लागत, बिजली, खाद, सिंचाई और मजदूरी का बोझ है। दूसरी ओर करोड़ों परिवारों की रसोई और सरकार की नीतियां भी इससे जुड़ी हैं। यही वजह है कि चीनी का बाजार केवल व्यापार का विषय नहीं, बल्कि किसान, उपभोक्ता और पूरी अर्थव्यवस्था से जुड़ा सवाल है।

भारत में त्योहार और मिठाई लगभग एक-दूसरे के पर्याय हैं। रक्षाबंधन हो, जन्माष्टमी, नवरात्रि, दशहरा या दिवाली, हर बड़े त्योहार पर मिठाइयों की मांग बढ़ जाती है। रसगुल्ला, गुलाब जामुन, बरफी, पेड़ा, जलेबी और लड्डू जैसी मिठाइयों में चीनी की महत्वपूर्ण भूमिका है। चीनी की कीमत में मामूली बदलाव भी मिठाई के दाम पर असर डाल सकता है। लेकिन इस बार चुनौती केवल बढ़ती मांग की नहीं है। चीनी की उपलब्धता, उत्पादन, निर्यात और इथेनॉल के उत्पादन के बीच संतुलन बनाना भी बड़ी चुनौती बन गया है। यही इस पूरे मामले का असली गणित है।

पहली नजर में स्थिति उलटी लग सकती है। भारत चीनी उत्पादन के मामले में दुनिया के प्रमुख देशों में शामिल है। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक इसके प्रमुख उत्पादक राज्य हैं। फिर भी बाजार केवल इस आधार पर तय नहीं होता कि देश में कितनी चीनी पैदा हुई।

यह भी देखना पड़ता है कि कितनी चीनी बाजार में आई, कितनी निर्यात हुई, कितनी इथेनॉल उत्पादन में गई और अगले सीजन के लिए कितना स्टॉक बचा। यहीं से चीनी बाजार का वास्तविक गणित शुरू होता है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, 2023-24 में देश में चीनी का उत्पादन करीब 33.10 लाख मीट्रिक टन और 2024-25 में करीब 27.08 लाख मीट्रिक टन रहा। उत्पादन में होने वाला उतार-चढ़ाव बाजार पर सीधा असर डाल सकता है। दूसरी ओर सरकार का जोर इथेनॉल उत्पादन बढ़ाने पर भी है। गन्ने से केवल चीनी ही नहीं बनती, बल्कि उससे इथेनॉल भी तैयार किया जाता है। इथेनॉल अब देश की ऊर्जा नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। पेट्रोल में इथेनॉल मिश्रण का लक्ष्य बढ़ने से चीनी उद्योग के सामने एक नया बाजार तैयार हुआ है। इससे पेट्रोलियम आयात पर दबाव कम हो सकता है, विदेशी मुद्रा की बचत हो सकती है और किसानों को गन्ने के लिए बेहतर बाजार मिल सकता है। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है। यदि गन्ने का अधिक हिस्सा इथेनॉल उत्पादन की ओर जाता है तो बाजार में चीनी की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है और कीमतें बढ़ सकती हैं। यानी एक ही गन्ना दो महत्वपूर्ण जरूरतों के बीच खड़ा है, एक तरफ ऊर्जा सुरक्षा और दूसरी तरफ खाद्य पदार्थों की कीमत। सरकार के सामने चुनौती दोनों के बीच संतुलन बनाने की है। आम उपभोक्ता अक्सर सोचता है कि चीनी महंगी होगी तो किसान को फायदा होगा। लेकिन वास्तविकता इतनी सरल नहीं है। गन्ने की खेती की लागत लगातार बढ़ रही है। खाद, डीजल, सिंचाई, मजदूरी और कृषि मशीनरी सभी महंगे हुए हैं। किसान चाहता है कि उसे गन्ने का उचित भाव मिले और भुगतान समय पर हो। चीनी मिल चाहती है कि उसकी उत्पादन लागत नियंत्रण में रहे और उसे बाजार में चीनी का उचित मूल्य मिले। सरकार चाहती है कि उपभोक्ता पर अचानक महंगाई का बोझ न पड़े। तीनों की जरूरतें अलग हैं। इसलिए चीनी का बाजार केवल व्यापार का मामला नहीं, बल्कि कृषि नीति से जुड़ा बड़ा प्रश्न है।



चीनी के भाव बढ़ने का सबसे सीधा असर मिठाई की दुकानों पर दिखाई देगा। मिठाई बनाने की लागत में केवल चीनी शामिल नहीं होती। दूध, मावा, घी, सूखे मेवे, गैस, बिजली, मजदूरी और पैकेजिंग भी लागत का हिस्सा हैं। इनमें से किसी एक चीज की कीमत बढ़ने पर दुकानदार के सामने दो विकल्प होते हैं या तो मिठाई के दाम बढ़ाए जाएं या अपना मुनाफा कम किया जाए। त्योहारों के लंबे दौर में दूसरा विकल्प ज्यादा समय तक संभव नहीं होता। इसलिए चीनी महंगी होने का असर केवल एक किलो चीनी की थैली तक सीमित नहीं रहता। उसका असर मिठाई की कीमत पर भी दिखाई देता है और यहीं आम आदमी को महंगाई का सीधा अनुभव होता है।

चीनी उद्योग केवल मिठाई बेचने वालों से जुड़ा नहीं है। यह लाखों किसानों, चीनी मिलों, श्रमिकों, परिवहन, बैंकों और भुगतान व्यवस्था से जुड़ा बड़ा आर्थिक तंत्र है। यदि चीनी मिलों की आर्थिक स्थिति खराब होती है तो उसका असर सबसे पहले गन्ना किसानों के भुगतान पर पड़ सकता है। मिलों की स्थिति मजबूत होगी तो किसानों को समय पर भुगतान करने की क्षमता भी बढ़ेगी। इसलिए चीनी का भाव बहुत नीचे रखने की नीति भी हमेशा समाधान नहीं हो सकती। जरूरी यह है कि ऐसा संतुलित मूल्य तय हो जिसमें किसान को उचित भुगतान मिले, मिलें आर्थिक रूप से चलती रहें और उपभोक्ता पर भी असहनीय बोझ न पड़े। समाधान केवल चीनी सस्ती करने में नहीं, बल्कि पूरी वैल्यू चेन में संतुलन बनाने में है। आने वाले समय में सरकार के सामने मुख्य रूप से तीन बड़ी चुनौतियां हैं। पहली, त्योहारों के दौरान चीनी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करना। दूसरी, चीनी की कीमत में अचानक होने वाली वृद्धि को रोकना। तीसरी, इथेनॉल और चीनी के बीच उचित संतुलन बनाए रखना। चीनी की उपलब्धता और कीमतों को नियंत्रण में रखने के लिए सरकार समय-समय पर नीतिगत कदम उठाती रही है। कच्ची चीनी के आयात और निर्यात से जुड़े फैसले भी इसी दिशा में होते हैं। लेकिन केवल आयात-निर्यात नीति से समस्या का स्थाई समाधान संभव नहीं है। भारत को चीनी के लिए दीर्घकालिक रणनीति की जरूरत है। कितना गन्ना चाहिए? कितनी चीनी चाहिए? कितना इथेनॉल बनाना है? कितना निर्यात करना है? और कितना बफर स्टॉक रखना है? इन सवालों के जवाब बाजार में संकट पैदा होने के बाद नहीं, बल्कि पहले से तैयार होने चाहिए। त्योहारों की मिठास अपने आप नहीं आती। उसमें किसान की मेहनत, श्रमिकों का पसीना, मिठाई व्यापारी की पूंजी और ग्राहक की जेब शामिल होती है। इसलिए चीनी का संकट केवल चीनी का संकट नहीं है। यह हमारे कृषि माडल और आर्थिक नीतियों का आईना भी है। देश को इथेनॉल चाहिए, उपभोक्ता को सस्ती चीनी चाहिए, किसान को बेहतर गन्ना मूल्य चाहिए, मिलों को मुनाफे के साथ उत्पादन जारी रखना है और ग्राहक महंगाई से राहत चाहता है। इन सभी हितों को एक साथ साधना आसान नहीं है। लेकिन यही सरकार की असली परीक्षा है।

त्योहार पर मिठाई महंगी होगी तो यह केवल बाजार की खबर नहीं होगी। यह उस किसान की भी खबर होगी, जिसने गन्ना उगाया, उस मिल की भी जिसने गन्ना खरीदा, उस दुकानदार की भी जिसने मिठाई बनाई और उस परिवार की भी जो त्योहार पर बच्चों के लिए मिठाई खरीदने बाजार पहुंचा।

इसलिए सवाल केवल यह नहीं होना चाहिए कि चीनी का भाव कितने रुपए किलो है। बड़ा सवाल यह है कि चीनी की इस पूरी व्यवस्था में संतुलन कैसे कायम रखा जाए। यदि यह संतुलन नहीं साधा गया तो खतरा केवल चीनी के महंगे होने का नहीं है। खतरा यह है कि आने वाले त्योहारों में मिठाई तो वही रहेगी, लेकिन उसे खरीदने की खुशी कड़वी हो जाएगी।

भारत में प्याज संकट: नीतिगत निस्फलता, जनता में गुस्सा

स्नेहा सिंह

भारत की राजनीति और अर्थव्यवस्था में प्याज केवल एक खाद्य पदार्थ नहीं है, बल्कि यह राजनीतिक उथलपुथल पैदा करने वाला अत्यंत संवेदनशील कारक है। जब भी प्याज के दाम आसमान पर पहुंचते हैं तो आम उपभोक्ता का बजट बिगड़ जाता है और जब कीमतें जमीन पर आ जाती हैं तो किसान बर्बाद हो जाता है।

यह समस्या किसी एक कारण से पैदा नहीं होती। प्राकृतिक मौसम, बाजार का असंतुलन, कमजोर भंडारण ढांचा, बिचौलियों की पकड़, विशेष रूप से केंद्र सरकार की अप्रत्याशित निर्यात नीतियां और नीतिगत समन्वय के अभाव का यह सामूहिक परिणाम है। वर्तमान में पैदा हुई प्याज की समस्या भी मोदी सरकार की इन विफल और पटरी से उतर चुकी नीतियों तथा कार्यप्रणाली का ही परिणाम है।

सत्ता के केंद्रीकरण में विश्वास रखने वाली भाजपा सरकार में सभी निर्णय दो-चार लोगों के हाथों में दे दिए गए हैं, लेकिन निचले स्तर पर जिस तरह भ्रष्टाचार बढ़ा हुआ है और पालिसी पैरालिसिस की स्थिति है, उसके परिणामस्वरूप देश के गरीब और जमीनी स्तर के लोग परेशान हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में मोदी सरकार के कार्यकाल का मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाता है कि कहां नीतियां सफल रहीं और कहां प्रशासनिक तंत्र किसानों की अपेक्षाओं को पूरा करने में विफल रहा। चिंताजनक बात यह है कि सामान्य आदमी के लिए सरकार बनाने का दावा करके सत्ता में आई भाजपा सरकार ने पिछले बारह वर्षों में आम लोगों को लाभ पहुंचाने वाला वास्तविक कोई काम नहीं किया है। जीएसटी लागू किया गया, जिसमें आम जनता ही पिस रही है। इसके अलावा नोटबंदी ने कहर बरपाया था। इसमें छोटे लोग ही पैसों के लिए परेशान होते और बैंकों के बाहर कतारों में खड़े होकर अपनी जान गंवाते दिखाई दिए। कोरोना के दौरान अविवेकपूर्ण लॉकडाउन और उसके बाद अंधाधुंध टीकाकरण में भी आम और गरीब आदमी ही पिसा है। आयात और निर्यात की भी कोई ठोस नीति नहीं है, जिसके कारण किसानों और व्यापारियों सभी के ऊपर तलवार लटकी रहती है। इथेनॉल के नाम पर अजीब तरह का पेट्रोल और डीजल बेचकर अचानक ही गन्ने और मक्का की फसल पर आफत ला दी गई।

इसके भंडारण के दौरान नुकसान हुआ, अब गन्ने की फसल में ही बीमारी लग गई है, जिससे उसकी उत्पादकता घट गई है। इसके परिणामस्वरूप जमाखोरी और कालाबाजारी शुरू हो गई है। इसके कारण चीनी के दाम बढ़ गए और इथेनॉल के कारण लोगों के वाहन खराब होने लगे। इस तरह सरकार की गैरजिम्मेदार नीतियों के कारण चीनी के दाम बढ़े हैं। प्याज की भी ऐसी ही स्थिति कर दी गई है। देश के गरीब लोग, जिनके नाम पर राजनीति की जाती है, उनकी थाली से प्याज भी गायब होने लगा है। अच्छे दिन के नाम पर व्यापारियों, जनता और किसानों को बर्बाद किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि प्याज की फसल मौसम के प्रति अत्यंत संवेदनशील होती है। भारत की कुल प्याज आपूर्ति में महाराष्ट्र, विशेष रूप से नासिक, लासलगांव और आसपास के जिले, रीढ़ की हड्डी जैसी भूमिका निभाते हैं। बुवाई के समय अत्यधिक बारिश या कटाई के समय होने वाली बेमौसम ओलावृष्टि और बारिश फसल को भारी नुकसान पहुंचाती है। इसके अलावा मौसम की अनिश्चितता खेती के क्षेत्रफल, प्रति एकड़ उपज, फसल की भंडारण क्षमता और परिवहन व्यवस्था को सीधे प्रभावित करती है। जब आपूर्ति में 10-15 प्रतिशत की भी कमी आती है तो बाजार में कृत्रिम या वास्तविक कमी पैदा हो जाती है और कीमतों में बड़ी तेजी देखने को मिलती है। वर्तमान में भी लगभग आठ प्रतिशत की कमी होने की बात सामने आ रही है।

दूसरी ओर, भारतीय कृषि बाजार प्याज के मामले में एक पारंपरिक दुष्चक्र में फंसा हुआ है। जब किसान को 2 से 5 रुपए प्रति किलो जैसे मामूली दाम मिलते हैं तो वह अगले सीजन में बुवाई कम कर देता है। परिणामस्वरूप कुछ महीनों बाद आपूर्ति घटने पर खुदरा बाजार में कीमत 70 से 100 रुपये प्रति किलो तक पहुंच जाती है। ऊंचे भाव देखकर किसान फिर बड़े पैमाने पर बुवाई करता है, जिससे बाजार में अत्यधिक माल आने के कारण कीमतें फिर जमीन पर आ जाती हैं। यह समस्या केवल वर्तमान समय तक सीमित नहीं है, बल्कि एक दशक से अधिक समय तक सत्ता में रहने के बाद भी सरकार इस चक्र को स्थिर करने में विफल रही है, यह वास्तविकता है। प्याज ऐसी फसल है, जिसे उचित परिस्थितियों में महीनों तक संग्रहित किया जा सकता है, जिससे पूरे वर्ष धीरे-धीरे बाजार में इसकी आपूर्ति की जा सकती है। लेकिन भारत में पर्याप्त कोल्ड स्टोरेज और आधुनिक वेयरहाउसिंग सुविधाओं का भारी अभाव है।

शब्दवाणी समाचार

दिव्यांगजनों को उनकी दिव्यांगता से नहीं उनकी क्षमता से पहचानें : डॉ. वीरेंद्र कुमार

हमारा लक्ष्य एक ऐसे समावेशी समाज का निर्माण होना चाहिए जहाँ किसी व्यक्ति की पहचान उसकी दिव्यांगता से नहीं बल्कि उसकी क्षमता, प्रतिभा, योग्यता और सामर्थ्य से हो। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने दिव्यांगजनों के प्रति कल्याण-केंद्रित दृष्टिकोण से आगे बढ़कर उनकी क्षमताओं और संभावनाओं को पहचानने एवं उन्हें विकसित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए यह बात कही। वे डॉ.अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र नई दिल्ली में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग (DEPwD), भारत सरकार और ब्रह्माकुमारीज की सहयोगी संस्था राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन (RERF) के बीच दिव्यांग समानता, संरक्षण एवं सुदृढ़ीकरण अभियान (DISSSA) के शुभारंभ के अवसर पर आयोजित समझौता ज्ञापन (MoU) हस्ताक्षर समारोह को संबोधित कर रहे थे।

डॉ.वीरेंद्र कुमार ने कहा कि दिव्यांगजनों का सशक्तिकरण केवल सरकारी प्रयासों के माध्यम से संभव नहीं है बल्कि इसके लिए समाज की सार्थक भागीदारी तथा सामाजिक, आध्यात्मिक, शैक्षिक और सेवा क्षेत्र से जुड़ी संस्थाओं की सक्रिय सहभागिता आवश्यक है।

उन्होंने कहा कि ऐसी साझेदारियाँ सरकारी योजनाओं और सेवाओं को अंतिम छोर तक तथा उन लोगों तक प्रभावी ढंग से पहुँचाने का एक प्रभावी मॉडल प्रस्तुत कर सकती हैं, जिन्हें इनकी सबसे अधिक आवश्यकता है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि कानून और योजनाएँ तभी अपने वास्तविक उद्देश्य को प्राप्त कर सकती हैं, जब उनका लाभ प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक सार्थक और सुगम रूप से पहुँचे। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि RERF और उससे जुड़ी संस्थाओं का अनुभव, व्यापक पहुँच और नेटवर्क दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण योगदान देगा। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि जब कोई दिव्यांगजन सशक्त होता है तो उसका लाभ केवल उस व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि परिवार, समाज और अंततः राष्ट्र भी सशक्त होता है।



केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री श्री बी.एल. वर्मा ने इस अवसर को सामाजिक सेवा, समानता और समावेशिता की दिशा में एक सार्थक कदम बताया। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों के अधिकारों और गरिमा की रक्षा तथा उन्हें समान अवसर उपलब्ध कराना केंद्र एवं राज्य सरकारों, स्थानीय प्रशासन, परिवार और पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

उन्होंने कहा कि हमारा ध्यान केवल दिव्यांगता से उत्पन्न कठिनाइयों को कम करने तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि दिव्यांगजनों की क्षमताओं, प्रतिभाओं, योग्यताओं और संभावनाओं को पहचानने तथा उन्हें अपनी पूरी क्षमता विकसित करने के अवसर प्रदान करने पर होना चाहिए।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह पहल सामाजिक समानता, गरिमा और समावेशिता को मजबूत करेगी तथा दिव्यांगजनों को आत्मविश्वास और समान अवसर के साथ राष्ट्र की मुख्यधारा में सहभागी बनने में सक्षम बनाएगी।

ब्रह्माकुमारीज की प्रबंधन समिति की सदस्य राजयोगिनी बी.के. आशा दीदी ने बताया कि संस्था पिछले 18 वर्षों से दिव्यांगजनों, विशेषकर दिव्यांग बच्चों एवं युवाओं के सशक्तिकरण के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इस माध्यम से प्रशिक्षित टीमें स्थानीय प्रशासन और संबंधित शैक्षणिक संस्थानों की अनुमति एवं सहयोग से विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों तक पहुँचकर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करती हैं। दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ब्रेल आधारित शैक्षणिक सामग्री, शिक्षण बोर्ड, खेल तथा अन्य प्रशिक्षण सामग्री विकसित की गई है, जिनके माध्यम से प्रशिक्षण के साथ-साथ एकाग्रता, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा दिया जाता है।

माउंट आबू में राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन एवं सेमिनार भी आयोजित किए जाते हैं, जिनमें दिव्यांगजन बहुदिवसीय कार्यक्रमों में भाग लेते हैं और सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता पर केंद्रित विभिन्न गतिविधियों एवं प्रशिक्षणों से लाभान्वित होते हैं।

उन्होंने MoU के माध्यम से विभाग द्वारा प्रदान किए गए औपचारिक संस्थागत सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे इन सेवाओं को अधिक संख्या में दिव्यांग बच्चों एवं युवाओं तक पहुँचाने में सहायता मिलेगी।

अपने स्वागत संबोधन में दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के संयुक्त सचिव श्री राजीव शर्मा ने कहा कि उक्षररअ पहल सरकारी प्रयासों को अवधि में संस्था ने समर्पित कार्यक्रमों और व्यापक प्रशिक्षण मॉड्यूल का विकास किया है। दो समर्पित वैन के ब्रह्माकुमारीज और RERF के अनुभव तथा व्यापक पहुँच के साथ जोड़ने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। उन्होंने बताया कि विभाग की दीनदयाल दिव्यांग पुनर्वास योजना (DDRS) के अंतर्गत देशभर में लगभग 350-400 परियोजनाओं को सहायता दी जा रही है, जिनके माध्यम से दिव्यांग बच्चों को शिक्षा, प्रशिक्षण और पुनर्वास संबंधी सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। उन्होंने कहा कि ध्यान, राजयोग और रिलैक्सेशन जैसी गतिविधियों के क्षेत्र में सहयोगी संस्थाओं की विशेषज्ञता दिव्यांग बच्चों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है तथा मानसिक कल्याण, आत्मविश्वास, एकाग्रता और सकारात्मक सोच को बढ़ावा दे सकती है।

उक्षररअ अभियान एक राष्ट्रव्यापी पहल है, जिसका उद्देश्य दिव्यांगजनों के लिए एक सक्षम वातावरण तैयार करना तथा उनकी समानता, समावेशिता और सशक्तिकरण को मजबूत करना है। अभियान एक समग्र एवं समावेशी दृष्टिकोण अपनाता है, जो पारंपरिक शारीरिक, शैक्षिक एवं पुनर्वास संबंधी सहायता के साथ-साथ मानसिक और भावनात्मक कल्याण के महत्वपूर्ण आयामों को भी संबोधित करता है।

इसके अंतर्गत मूल्य-आधारित खेल एवं प्रेरक गीतों के माध्यम से प्रसन्नता, सकारात्मक सोच और आत्मविश्वास को बढ़ावा दिया जाएगा; माता-पिता एवं स्थानीय समुदायों के साथ सामुदायिक बैठकें आयोजित कर समानता एवं समावेशिता के प्रति जागरूकता उत्पन्न की जाएगी; स्वास्थ्य-जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से नशामुक्ति, स्वच्छता और साफ-सफाई को प्रोत्साहित किया जाएगा; तथा प्रदर्शन एवं ध्यान सत्रों के माध्यम से दिव्यांगजनों को असफलता के भय, हीनभावना और आत्मविश्वास की कमी जैसी मनोवैज्ञानिक बाधाओं से उबरने में सहायता प्रदान की जाएगी।

अभियान को विभिन्न राज्यों में प्रशिक्षित टीमों के माध्यम से लागू किया जाएगा और इसमें दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित, अधिगम संबंधी तथा बौद्धिक दिव्यांगता सहित विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं वाले व्यक्तियों को शामिल किया जाएगा। विभिन्न राज्यों के लिए अलग-अलग टीमें गठित की जाएँगी और कार्यक्रमों को क्षेत्रीय भाषाओं में संचालित किया जाएगा, ताकि पहुँच और स्थानीय स्तर पर प्रभाव को और मजबूत किया जा सके। DEPwD और RERF के बीच यह टङ्कव सरकारी संसाधनों, सामुदायिक नेटवर्क तथा सामाजिक, आध्यात्मिक एवं शैक्षिक संस्थाओं की विशेषज्ञता को एक साथ लाकर जमीनी स्तर पर सेवाओं की पहुँच और प्रभाव को मजबूत करने का प्रयास है।

यह साझेदारी दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 तथा सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयासह्व की भावना के अनुरूप दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण और सामाजिक समावेश के प्रति भारत सरकार की प्रतिबद्धता को और मजबूत करती है।

उक्षररअ का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि दिव्यांगजनों को केवल कल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थी के रूप में नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास में समान एवं सशक्त सहभागी के रूप में देखा जाए। अभियान के केंद्र में दिव्यांगजनों को आवश्यक जीवन-कौशल से सुसज्जित करना, उनके आत्मविश्वास को मजबूत करना और मनोवैज्ञानिक बाधाओं को दूर करने में सहायता प्रदान करना है, ताकि वे अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करते हुए गरिमा और समान अवसर के साथ राष्ट्रीय जीवन में सहभागी बन सकें।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज की प्रबंधन समिति की सदस्य राजयोगिनी बी.के. आशा दीदी, राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के दिव्यांगजन सेवा विंग के उपाध्यक्ष राजयोगी बी.के. ललित भाई, राजयोगिनी बी.के. विधात्री, राजयोगिनी बी.के. रजनी एवं राजयोगिनी बी.के. प्रीति सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने सहभागिता की। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की ओर से श्री विनीत सिंघल, निदेशक; श्री मनीष कुमार मिश्रा, अवर सचिव तथा मीडिया प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।



भारत के बढ़ते जीएलपी-1 बाजार में उत्तर भारत बना विकास का प्रमुख केंद्र

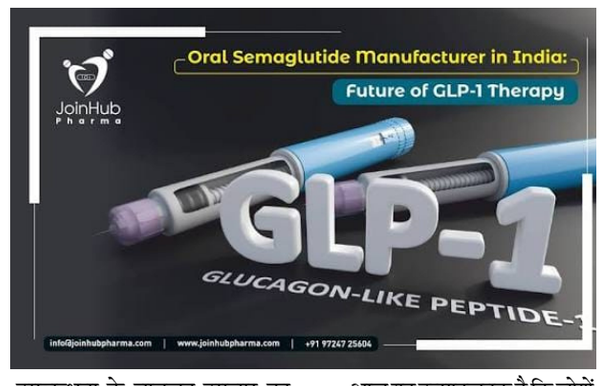
गुरुग्राम। मोटापे और टाइप 2 डायबिटीज, हृदय रोग, हाई ब्लड प्रेशर और फैटी लिवर जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं के बीच संबंध को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। इसके साथ ही, अधिक से अधिक लोग अपने मेटाबॉलिक स्वास्थ्य को समझने के लिए डॉक्टरों से सलाह ले रहे हैं। यह बदलाव खासतौर पर उत्तर भारत में देखने को मिल रहा है। हाल ही में किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि सर्वेक्षण में शामिल 74% से अधिक महिलाओं में मोटापा या अधिक वजन पाया गया, जबकि लगभग हर पांच में से एक महिला में आंतरिक वसा (विसरल फैट) का स्तर अधिक था। यह स्थिति इस बात पर जोर देती है कि लोगों में जागरूकता बढ़ाने और लंबे समय तक स्वास्थ्य प्रबंधन की आवश्यकता है।

इसी पृष्ठभूमि में, सिप्ला का टिरजेपाटाइड ब्रांड ४१स्त्रीं'ञ जुलाई 2026 में दिल्ली और हरियाणा में देशभर में सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाला बाजार रहा। इस क्षेत्र ने ₹1.54 करोड़ का अतिरिक्त मूल्य दर्ज किया और 30.1% की वृद्धि हासिल की, जो ब्रांड की कुल अतिरिक्त वृद्धि में सबसे बड़ा योगदान रहा। आसपास के बाजारों में भी वृद्धि का यही रुझान देखने को मिला। पंजाब, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश में 12.9% की वृद्धि दर्ज की गई, जबकि यूपी नॉर्थ-वेस्ट और उत्तराखंड में 9.3% की वृद्धि हुई।

यह प्रदर्शन भारत में मोटापा प्रबंधन के क्षेत्र में उभर रहे व्यापक रुझान को दर्शाता है। जहां बाजार में कई सेमाग्लूटाइड ब्रांड्स की शुरूआत और विस्तार देखने को मिला है, वहीं टिरजेपाटाइड आधारित उपचारों को डॉक्टरों और मरीजों की ओर से लगातार मजबूत प्राथमिकता मिल रही है। इसका कारण इन उपचारों की अलग और प्रभावी क्लिनिकल प्रोफाइल के साथ-साथ वास्तविक जीवन में इनके उपयोग से बढ़ता अनुभव है। इंडस्ट्री रिपोर्ट्स के अनुसार, टिरजेपाटाइड भारत के मोटापा-रोधी बाजार में लगातार अग्रणी बना हुआ है। इससे पता चलता है कि विकल्पों की बढ़ती उपलब्धता के बावजूद उपचार का प्रभाव और मरीजों के स्वास्थ्य परिणाम इसके इस्तेमाल को बढ़ाने वाले प्रमुख कारक बने हुए हैं।

उत्तर भारत में देखी गई मजबूत वृद्धि ऐसे प्रमाण-आधारित उपचारों की बढ़ती पसंद को दर्शाती है, जो स्वास्थ्य में सार्थक और लंबे समय तक बने रहने वाले परिणामों में मदद करते हैं। जैसे-जैसे मोटापे को एक दीर्घकालिक बीमारी के रूप में लेकर जागरूकता बढ़ रही है, वैसे-वैसे अधिक लोग ऐसे उपचारों की तलाश कर रहे हैं जो केवल वजन को नियंत्रित करने तक सीमित न हों, बल्कि मेटाबॉलिक स्वास्थ्य से जुड़े व्यापक लक्ष्यों को भी पूरा करने में मदद करें।

इस बारे में बात करते हुए इंद्रप्रस्थ अपोलो हॉस्पिटल्स के अपोलो सेंटर फॉर ओबेसिटी, डायबिटीज एंड एंडोक्राइनोलॉजी (ACODE) में सीनियर कंसल्टेंट एंडोक्राइनोलॉजिस्ट डॉ. एस. के. वांगनू ने कहा मोटापा केवल वजन से जुड़ी समस्या नहीं है। यह एक जटिल और दीर्घकालिक बीमारी है, जो मेटाबॉलिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाल सकती है और कई गंभीर बीमारियों का जोखिम बढ़ा सकती है।



आज यह उत्साहजनक है कि लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और वे जटिलताएं होने का इंतजार करने के बजाय समय रहते इलाज और विशेषज्ञ की सलाह लेने के महत्व को समझ रहे हैं। पूरे उत्तर भारत में हम वजन प्रबंधन, मेटाबॉलिक स्वास्थ्य और प्रमाण-आधारित उपचार के तरीकों को लेकर अधिक गंभीर और सार्थक चर्चा देख रहे हैं।

यह सक्रिय और रोकथाम पर आधारित स्वास्थ्य देखभाल की दिशा में एक सकारात्मक बदलाव का संकेत है। उत्तर भारत में Yurpeak का मजबूत प्रदर्शन भारत में मोटापा प्रबंधन के क्षेत्र में टिरजेपाटाइड के बढ़ते इस्तेमाल को दर्शाता है। यह ऐसे अलग और प्रभावी उपचारों के प्रति बढ़ते भरोसे और स्वीकार्यता को भी दिखाता है, जो लंबे समय तक मेटाबॉलिक स्वास्थ्य और मरीजों के बेहतर स्वास्थ्य परिणामों में मदद करते हैं।

Siliconops.ai ने लॉन्च किया siliconcloud.in

नया प्लेटफॉर्म BFSI, फार्मा, हेल्थकेयर, सरकारी और मैन्युफैक्चरिंग संगठनों को उनके सबसे संवेदनशील वर्कलोड्स के लिए एक सुरक्षित अनुपालन-आधारित और भारत में ही स्थित क्लाउड इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध कराता है।

Siliconops.ai ने भारतीय विनियमित उद्यमों के लिए विशेष रूप से तैयार अपना सॉवरेन क्लाउड प्लेटफॉर्म siliconcloud.in । लॉन्च किया है। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लॉन्च किया गया यह प्लेटफॉर्म इस बदलती सोच को दर्शाता है कि डेटा केवल भारत में मौजूद होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसका नियंत्रण भी भारतीय संस्थानों के हाथ में होना चाहिए।

Own your data, own your cloud" की अवधारणा पर आधारित siliconcloud.in के साथ साझेदारी में विकसित किया गया है। इसका संचालन और प्रबंधन भारत स्थित डेटा सेंटरों से किया जाएगा। यह प्लेटफॉर्म बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं, फार्मा, स्वास्थ्य सेवा, सरकारी संस्थानों और विनिर्माण क्षेत्र जैसे विनियमित उद्योगों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, जहां डेटा रेजिडेंसी, नियामकीय अनुपालन और बिजनेस कंटिन्यूटी महत्वपूर्ण हैं।



siliconcloud.in के माध्यम से उद्यमों को एंटरप्राइज-ग्रेड कंप्यूट, बैकअप, डिजास्टर रिकवरी और मैनेज्ड क्लाउड सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। प्लेटफॉर्म के जरिए संवेदनशील डेटा को भारत में रखते हुए भारतीय कानूनों और अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत संचालित करने की सुविधा देने का लक्ष्य है।

सिलिकॉनऑप्स के सीईओ श्याम गाइडाने ने कहा, एआई के दौर में डेटा किसी भी उद्यम की सबसे महत्वपूर्ण संपत्तियों में से एक बन गया है। अब चर्चा केवल इस बात तक सीमित नहीं रह सकती कि डेटा कहां रखा गया है, बल्कि यह भी महत्वपूर्ण है कि उसका नियंत्रण किसके पास है। भारत के 80वें स्वतंत्रता दिवस के आसपास सॉवरेन क्लाउड लॉन्च करना इस बात का प्रतीक है कि उद्यमों के लिए भी संप्रभुता उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी राष्ट्रों के लिए। भारत में डेटा होना लोकलाइजेशन है, जबकि डेटा पर नियंत्रण होना संप्रभुता है।

सिलिकॉनऑप्स के मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी बप्पादित्य सरकार ने कहा कि क्लाउड बनाना चुनौती का केवल एक हिस्सा है। किसी बैंक, अस्पताल अन्य विनियमित संस्थान के अपेक्षित मानकों के अनुसार इसे संचालित करना वास्तविक चुनौती है। siliconcloud.in को उपलब्धता, स्केलेबिलिटी, सुरक्षा और ऑडिटेबिलिटी को ध्यान में रखते हुए विकसित किया गया है। कंपनी MeitY empanelment, ISO और SOC अनुपालन तथा विभिन्न विनियमित क्षेत्रों की आवश्यकताओं के अनुरूप प्रमाणन की दिशा में काम कर रही है।

कंपनी के अनुसार भारतीय उद्यमों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्लाउड तकनीकों को तेजी से अपनाए जाने के बीच siliconcloud.in ऐसे संगठनों के लिए आधार तैयार करेगा, जो क्लाउड और एआई की सुविधाओं का लाभ उठाते हुए अपने डेटा पर नियंत्रण भी बनाए रखना चाहते हैं। सिलिकॉनऑप्स.एआई की स्थापना करीब 38 वर्ष पहले हुई थी। कंपनी ने सिस्टम इंटीग्रेटर के रूप में अपनी शुरूआत करने के बाद भारत के बड़े और जटिल उद्यमों के लिए टेक्नोलॉजी पार्टनर के रूप में अपनी पहचान बनाई है। siliconcloud.in के लॉन्च के साथ कंपनी ने भारत के तेजी से विकसित हो रहे सॉवरेन क्लाउड इकोसिस्टम में एक नए अध्याय की शुरूआत की है।

फोर्टिस शालीमार बाग ने खोपड़ी में तपेदिक और ब्रेन हेमरेज की किया उपचार

मरीज को सेमी-कोमाटोज (अर्ध-बेहोशी/अर्ध-कोमा) की हालत में अस्पताल में भर्ती कराया गया था, लगभग ढाई वर्ष चले इलाज की जटिल प्रक्रिया के बाद मरीज की मोबिलिटी लौटी, आत्मनिर्भर जिंदगी में की वापसी

फोर्टिस हॉस्पीटल, शालीमार बाग के डॉक्टरों ने मल्टी-स्पेश्यलिटी कुशलता का शानदार परिचय देते हुए, 53-वर्षीय मरीज को नया और आत्मनिर्भर जीवन का उपहार दिया है। उक्त मरीज पिछले करीब ढाई वर्ष से मेडिकल चुनौतियों से जूझ रहे थे। मामले की शुरूआत मरीज को ब्रेन हेमरेज की शिकायत के साथ हुई थी जो आगे चलकर ऐसी मेडिकल चुनौती बन गया कि उन्हें नौ बार अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा, इस दौरान उनकी छह बार सर्जरी की गई और उनकी खोपड़ी की हड्डी में तपेदिक (स्कल बोन ट्यूबरक्लॉसिस) की समस्या भी पैदा हुई, जो अत्यंत दुर्लभ है। लेकिन इन तमाम चुनौतियों के बावजूद, मरीज ने पूरी तरह से स्वास्थ्यलाभ किया, और वह सेमी-कोमा की स्थिति से भी बाहर आए तथा बिना किसी की मदद के अपने आप चलने-फिरने और आत्मनिर्भर तरीके से जीवन जीने लगे हैं। इस मामले में, उपचार टीम का नेतृत्व डॉ सोनल गुप्ता, प्रिंसीपल डायरेक्टर एचं एचओडी, न्यूरो एंड स्पाइन सर्जरी, फोर्टिस हॉस्पीटल, शालीमार बाग ने किया।

मरीज को ब्रेन हेमरेज के कारण उनके मस्तिष्क में गंभीर रूप से पैदा हुई सूजन के बाद अचानक बेहोशी की अवस्था में अस्पताल के इमरजेंसी विभाग में भर्ती कराया गया। ब्लीडिंग डिसऑर्डर, प्लेटलेट संख्या में कमी के चलते मरीज की हालत और भी गंभीर हो गई थी, और पहले से मौजूद हार्ट कंडीशन के लिए इकोस्प्रिन का सेवन करने के कारण भी मामला जटिल था। इस वजह से उनकी इमरजेंसी सर्जरी बेहद चुनौतीपूर्ण थी क्योंकि अनियंत्रित ब्लीडिंग का खतरा बढ़ गया था।

डॉक्टरों ने मरीज की तत्काल इमरजेंसी डीकम्प्रेसिव ब्रेन सर्जरी कर खून का थक्का (ब्लड क्लॉट) दूर किया। चूंकि मरीज के मस्तिष्क में काफी सूजन आ चुकी थी, इसलिए उनकी खोपड़ी के एक भाग को अस्थायी रूप से खुला छोड़ा गया ताकि वहां दबाव कम हो सके और मस्तिष्क को स्थायी क्षति पहुंचने से बचाया जा सके। उक्त मरीज को लंबे समय तक वेंटीलेटर सपोर्ट पर रखने की आवश्यकता थी, साथ ही, उनकी ट्रैक्योस्टॅमी भी गई और उन्हें लगभग एक माह तक गहन चिकित्सा देखभाल में रखा गया, जिसके बाद पूरी तरह से उनकी चेतना लौटी और पूर्ण रूप से स्वास्थ्यलाभ के बाद उन्हें अस्पताल से छुट्टी दी गई।

लेकिन मरीज की रिकवरी की प्रक्रिया सामान्य नहीं थी। कुछ ही हफ्तों बाद, उन्हें दौरे पड़ने लगे और तब उनकी खोपड़ी की हड्डी को रिप्लेस करने के लिए दोबारा सर्जरी करनी पड़ी।

इस प्रक्रिया के दौरान, उनकी अपनी खोपड़ी की ही हड्डी को, जो कि बोन बैंक में सुरक्षित रखी गई थी, लगाया गया। इस सर्जरी के बाद, उनकी इस बदली गई खोपड़ी की हड्डी के नीचे खून का थक्का बन गया, जिसे दूर करने के लिए तत्काल एक और ब्रेन सर्जरी करना जरूरी हो गया। कई महीनों बाद, सर्जरी के घाव से स्राव की समस्या सामने आयी। इसकी विस्तृत जांच करने पर पाया गया कि मरीज को स्कल बोन में ट्यूबरक्लॉसिस (खोपड़ी की हड्डी में तपेदिक) की समस्या हो गई, जो कि ब्रेन सर्जरी के बाद बेहद दुर्लभ होती है। इस संक्रमित हड्डी को हटाया जाना जरूरी था, इसलिए मरीज का लंबा एंटी-ट्यूबरक्लॉसिस उपचार शुरू किया गया। इस दौरान, डॉक्टरों ने पाया कि तपेदिक उनके मस्तिष्क और मेरूदंड में भी फैल चुका था, जिसकी वजह से यह मामला अब पहले से ही अधिक दुरूह और टेढ़ा हो गया।



मरीज की रिकवरी की प्रक्रिया काफी लंबी रही और इस बीच, वह बार-बार स्नायुगत कमजोरियों (न्यूरोलॉजिकल वीकनैस), अक्सर पैदा होने वाले संक्रमणों तथा कई बार अस्पताल में भर्ती कराने के चलते भी यह मामला चुनौतीपूर्ण होता गया। इसी बीच, मरीज के गिरने की वजह से उनकी जांघ की हड्डी में फ्रैक्चर हो गया। अस्पताल के डॉक्टरों ने मल्टीडिसीप्लीनरी तालमेल का परिचय देते हुए, फ्रैक्चर्ड बोन को जोड़ा, और साथ ही, कस्टम डिजाइन्ड पीईईके (पोलीईथर ईथर केटोन) क्रेनियल इंप्लांट (इमेजिंग की मदद से कृत्रिम स्कल इंप्लांट की प्रक्रिया) की मदद से, उक्त मरीज की खोपड़ी के गायब हिस्से को सटीक तरीके से रीकंस्ट्रक्ट किया। इस उपचार के पूरा होते-होते, मरीज को तपेदिक-रोधी दवाओं के चलते ऑप्टिक न्यूराइटिस की समस्या पैदा हो गई थी, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें आंशिक रूप से दिखायी देना बंद हो गया। जैसी ही इस कंडीशन का पता चला, उनके उपचार की प्रक्रिया में बदलाव किया गया और कड़ी मेडिकल निगरानी में मरीज का रीहेबिलिटेशन जारी रहा।

लगभग ढाई वर्षों तक, न्यूरोसर्जरी, ऑर्थोपिडिक्स, संक्रामक रोग, क्रिटिकल केयर, कार्डियोलॉजी, पल्मोनोलॉजी, नेफ्रोलॉजी, यूरोलॉजी, ऑपथैल्मोलॉजी, एंडोक्राइनोलॉजी, गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी तथा रीहेबिलिटेशन मेडिसिन विभागों के विशेषज्ञों ने आपस में भरपूर तालमेल का परिचय देते हुए मरीज का हर चरण में उपचार किया, और बार-बार झटकों के बावजूद उनकी पूरी देखभाल जारी रखी।

डॉ सोनल गुप्ता, प्रिंसीपल डायरेक्टर एचं एचओडी, न्यूरो एंड स्पाइन सर्जरी, फोर्टिस हॉस्पीटल, शालीमार बाग, ने कहा इस मामले में सबसे बड़ी चुनौती एक ऐसे मरीज की इमरजेंसी ब्रेन सर्जरी ही नहीं थी जिसके साथ हाइ-रिस्क ब्लीडिंग की आशंका भी थी, बल्कि अगले दो से तीन वर्षों में सामने आने वाली किसी भी प्रकार की जटिलता से जूझना भी था। ब्रेन सर्जरी के बाद, खोपड़ी की हड्डी (स्कल बोन) में टी.बी. होना बेहद असामान्य घटना है, और मस्तिष्क तथा मेरूदंड में तपेदिक, बार-बार सर्जरी तथा लगातार पैदा होने वाली न्यूरोलॉजिकल जटिलताएं तथा उपचार संबंधी अन्य साइड इफेक्ट्स का निरंतर मूल्यांकन करना तथा विभिन्न मल्टी स्पेश्यलिटीज के बीच नजदीकी तालमेल बनाकर रखना भी जरूरी था। क्रेनियोप्लास्टी बोन फ्लैप में इंफेक्शन के मामले करीब 5-6% होते हैं, लेकिन इनमें से अधिकांश बैक्टीरियल इंफेक्शन होते हैं। बोन फ्लैप में टीबी इंफेक्शन के केवल 3-4 मामले ही अब तक सामने आए हैं। मरीज की रिकवरी और उसके बाद जिंदगी में आत्मनिर्भर होकर वापसी ने समय पर इंटरवेंशन, साक्ष्य-आधारित फैसलों तथा लगातार देखभाल के महत्व को रेखांकित किया है।

श्री नवीन शर्मा, फेसिलिटी डायरेक्टर, फोर्टिस हॉस्पीटल, शालीमार बाग ने कहा इस मामले ने विस्तृत मल्टीडिसीप्लीनरी केयर के महत्व को रेखांकित किया है। लगभग दो-ढाई वर्षों की अवधि के दौरान मरीज को नौ बार अस्पताल में भर्ती कराने के दौरान उनके उपचार/प्रबंधन के लिए केवल क्लीनिकल दक्षता ही नहीं बल्कि मजबूत प्रतिबद्धता भी जरूरी होती है, जिससे उन्हें निरंतर, मरीज केंद्रित देखभाल मिल सके। मरीज को एक्टिव और आत्मनिर्भर रूप से जिंदगी में वापसी करते हुए देखना हमारे सामूहिक प्रयासों का प्रतिफल है।

फोर्टिस हेल्थकेयर लिमिटेड के बारे में

फोर्टिस हेल्थकेयर लिमिटेड भारत में अग्रणी एकीकृत स्वास्थ्य सेवा प्रदाता है। कंपनी के हेल्थकेयर वर्टिकल्स में मुख्यतः अस्पताल, डायग्नॉस्टिक्स तथा डे केयर विशेषज्ञ सेवाएं शामिल हैं। वर्तमान में, कंपनी देश भर के 12 राज्यों और संघ शासित प्रदेशों में कुल 36 हेल्थकेयर सुविधाओं) जिनमें जेवी और ओ एंड एम शामिल हैं) का संचालन करती है। कंपनी के नेटवर्क में 6,150 से अधिक ऑपरेशनल बेड्स (ओ एंड एम समेत) तथा 400 डायग्नॉस्टिक्स लैब्स शामिल हैं।

धर्मशिला नारायणा ने रिलेप्स्ड ब्लड कैंसर के इलाज में CAR-T सेल थेरेपी से हासिल किया बड़ी उपलब्धि



नारायणा हेल्थ की इकाई धर्मशिला नारायणा सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल ने कई उपचारों के बावजूद ठीक न हुए ब्लड कैंसर से पीड़ित 24 वर्षीय मरीज का उअफ-ळ सेल थेरेपी से सफल इलाज किया है। अस्पताल के अनुसार यह उपलब्धि बोन मैरो ट्रांसप्लांटेशन और सेलुलर थेरेपी के क्षेत्र में उसकी विशेषज्ञता को दशार्ती है। मरीज हाई-ग्रेड डिफ्यूज लार्ज बी-सेल लिंफोमा से पीड़ित था और मानक कीमोथेरेपी सहित उपचार की कई लाइनों के बावजूद बीमारी पर नियंत्रण नहीं हो पाया था। इसके बाद अस्पताल की बोन मैरो ट्रांसप्लांट और हेमेटोलॉजी टीम ने मरीज को उअफ-ळ थेरेपी की पूरी प्रक्रिया से गुजारा। इसमें मरीज की टी-सेल्स का संग्रह, प्रयोगशाला में उनका आनुवंशिक रूप से संशोधन, लिम्फोडिप्लीशन कंडीशनिंग और संशोधित कोशिकाओं को मरीज के शरीर में वापस डालना शामिल था। उपचार के बाद मरीज की साइटोकाइन रिलीज सिंड्रोम जैसी संभावित जटिलताओं के लिए गहन निगरानी की गई। मरीज को स्थिर स्थिति में अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। धर्मशिला नारायणा सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल की वरिष्ठ कंसल्टेंट और क्लिनिकल लीड, बोन मैरो ट्रांसप्लांट, डॉ. प्रो. सरिता रानी जैसवाल ने कहा कि उअफ-ळ सेल थेरेपी कैंसर उपचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति है। उन्होंने कहा कि इस उपचार की सफलता के लिए मरीज का सही चयन, जटिलताओं का समय पर प्रबंधन और विशेषज्ञ चिकित्सा देखभाल बेहद जरूरी है। उअफ-ळ सेल थेरेपी में मरीज की अपनी प्रतिरक्षा कोशिकाओं को प्रयोगशाला में इस तरह तैयार किया जाता है कि वे कैंसर कोशिकाओं को पहचानकर उन्हें नष्ट कर सकें। इसका उपयोग मुख्य रूप से ऐसे आक्रामक ब्लड कैंसर में किया जाता है, जो दोबारा लौट आए हों या मानक उपचारों का जवाब नहीं देते। डॉ. जैसवाल ने कहा कि यह थेरेपी ऐसे मरीजों के लिए नई उम्मीद बन रही है, जिनके लिए पारंपरिक उपचार विकल्प सीमित हो गए हैं। उन्होंने बताया कि चुनिंदा मरीजों में यह लंबे समय तक टिकाऊ प्रतिक्रिया देने में सक्षम रही है।

व्हर्लपूल ने प्रीमियम 4-डोर रेफ्रिजरेटर रेंज किया लॉन्च

व्हर्लपूल ऑफ इंडिया लिमिटेड ने प्रीमियम 4-डोर रेफ्रिजरेटर रेंज लक्जूरियम लॉन्च करने की घोषणा की। समझदार और आधुनिक भारतीय उपभोक्ताओं, जो शानदार सौंदर्य, स्मार्ट क्षमता और रोजमर्रा की उपयोगिता का सही संतुलन चाहते हैं, के लिए डिजाइन किया गया प्रमुख 654छ रेफ्रिजरेटर व्हर्लपूल का अब तक का सबसे उन्नत रेफ्रिजरेशन प्लेटफॉर्म पेश करता है।

खाद्य संरक्षण के स्वर्ण मानक, वास्तुशिल्प रूप से बेहतर प्रारूप और उद्योग तथा भारत में पहली बार किए गए नवाचारों ळको एक साथ लाते हुए, 4-डोर रेफ्रिजरेटर की लक्जूरियम रेंज को प्रीमियम भारतीय घरों की विकसित होती जरूरतों को पूरा करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। बेहतरीन कूलिंग तकनीक और स्मार्ट स्टोरेज फ्लेक्सिबिलिटी से लेकर शानदार फिनिश और सोच-समझकर तैयार किए गए इंटीरियर तक, हर एलिमेंट को प्रीमियम रेफ्रिजरेशन के भविष्य को फिर से परिभाषित करते हुए एक उन्नत ओनरशिप अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है।

लॉन्च पर बात करते हुए नकुल तिवारी, वाइस प्रेसिडेंट - मार्केटिंग, व्हर्लपूल ऑफ इंडिया ने कहाः ₹जब हम बड़ी क्षमता वाले रेफ्रिजरेटर के मौजूदा उपयोगकताओं से मिले, तो बाजार में उपलब्ध वर्तमान उत्पादों के संबंध में कुछ समस्याएँ सामने आईं - भारतीय खाना पकाने के लिए आवश्यक बड़े और चौड़े बर्तनों को रखने के लिए पर्याप्त जगह का न होना, एक अक्षम कन्वर्टिबल समाधान और एक फल/सब्जी स्टॉकिंग जोन जिसके लिए बार-बार झुकना पड़ता है। हमने महसूस किया कि आज देश में उपलब्ध अधिकांश बड़ी क्षमता वाले रेफ्रिजरेटर भारतीय कुकिंग और स्टोरेज आदतों के लिए डिजाइन नहीं किए गए हैं।

व्हर्लपूल लक्जूरियम 4-डोर रेफ्रिजरेटर रेंज इन सभी उपभोक्ता चिंताओं को दूर करती है। यह एक विचारपूर्वक तैयार किए गए उत्पाद प्रारूप को एकीकृत करती है जो बेहतर संरक्षण, अधिक स्टोरेज लचीलापन, परिष्कृत डिजाइन और अत्याधुनिक तकनीक को जोड़ती है, जो उपभोक्ताओं की प्रीमियम रेफ्रिजरेशन से उम्मीदों को फिर से परिभाषित करती है।

4-डोर रेफ्रिजरेटर की लक्जूरियम रेंज के केंद्र में व्हर्लपूल की 360त्रिपल कूलिंग टेक्नोलॉजी है, जो एक उन्नत ट्रिपल इवेपोरेटर आर्किटेक्चर है। इसमें रेफ्रिजरेटर, कन्वर्टिबल और फ्रीजर डिब्बों में तीन स्वतंत्र इवेपोरेटर, तीन समर्पित कूलिंग सिस्टम और तीन समर्पित एयरफ्लो शामिल हैं।

खाद्य संरक्षण की बेहतरीन अभिव्यक्ति के रूप में निर्मित, यह तकनीक तीन पूरी तरह से स्वतंत्र कूलिंग वातावरण बनाती है जो ताजे भोजन, जमे हुए भोजन और कन्वर्टिबल स्टोरेज में गंध को आपस में मिलने से रोकते हुए प्रत्येक डिब्बे के लिए सटीक तापमान और आर्द्रता का स्तर बनाए रखती है। विभिन्न खाद्य श्रेणियों के लिए समर्पित कूलिंग वातावरण प्रदान करके, लक्जूरियम 4-डोर रेफ्रिजरेटर रेंज स्वाद, बनावट और गुणवत्ता को सुरक्षित रखती है जबकि फलों और सब्जियों को लंबे समय तक ताजा और कुरकुरा बनाए रखने में मदद करती है।

इसके पूरक के रूप में भारत का सबसे तेज कन्वर्टिबल है, जो कन्वर्टिबल डिब्बे को 30 मिनट से भी कम समय में फ्रीजर से रेफ्रिजरेटर मोड में बदलने में सक्षम बनाता है, जबकि समर्पित फ्रीजर स्पेस को बनाए रखता है। यह लचीलापन छउपभोक्ताओं को बदलती जरूरतों के आधार पर अपने स्टोरेज को अनुकूलित करने की अनुमति देता है, चाहे मेहमानों की मेजबानी करते समय पार्टी प्लैटर्स और पेय पदार्थों के लिए अतिरिक्त रेफ्रिजरेटर स्थान बनाना हो, किराने की खरीदारी के बाद अधिक मात्रा में ताजे उत्पादों को रखना हो, या आइस-क्यूब्स और डेसर्ट को स्टोर करने के लिए फ्रीजर स्पेस को बनाए रखते हुए मौसमी आवश्यकताओं के आधार पर स्थान का पुनर्आवंटन करना हो। 30 मिनट से कम समय का रूपांतरण इस लचीलेपनरं को अंतिम समय की जरूरतों के लिए वास्तव में व्यावहारिक बनाता है, जिससे उपभोक्ताओं को अचानक आए मेहमानों या बदलती योजनाओं के लिए वांछित तापमान तक पहुँचने के लिए कई घंटों तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। 100+ कस्टमाइजेबल स्टोरेज मोड के साथ, लक्जूरियम जरूरत पड़ने पर घर की आवश्यकताओं के अनुसार रेफ्रिजरेटर स्पेस को कॉनफि गर करना संभव बनाता है।



लक्जूरियम रेंज को 4-डोर आर्किटेक्चर के इर्द-गिर्द उद्देश्यपूर्ण ढंग से डिजाइन किया गया है, जो प्रीमियम रेफ्रिजरेशन के अगले विकास को दशार्ता है।

पारंपरिक साइड-बाय-साइड रेफ्रिजरेटर के विपरीत, इस सोच-समझकर तैयार किए गए 4-डोर फॉर्मेट को भारतीय रसोई की विशिष्ट स्टोरेज जरूरतों के अनुसार डिजाइन किया गया है, जहाँ रोजमर्रा के खाना पकाने में अक्सर कई व्यंजन, बड़े बर्तन, सर्विंग प्लैटर्स और थोक किराने का स्टोरेज शामिल होता है। बड़ा रेफ्रिजरेटर सेक्शन बड़े कुकवेयर और सर्विंग डिश को आराम से समायोजित करता है, जबकि बड़े वाइड-एक्सेस शेल्फ अधिक उपयोग करने योग्य स्थान और आसान पहुंच प्रदान करते हैं। यह फॉर्मेट विभिन्न खाद्य श्रेणियों को अलग-अलग व्यवस्थित करना भी आसान बनाता है, जिससे रोजमर्रा के भारतीय घरों में अधिक लचीलापन और सुविधा आती है।

एर्गोनॉमिक रूप से स्थित जीरो-बेंडिंग क्रिस्पर ड्रॉर्स (बिना झुके उपयोग होने वाले दराज) फलों और सब्जियों तक आसान पहुँच प्रदान करते हैं, जबकि समर्पित स्टोरेज जोन उपभोक्ताओं को ताजे उत्पाद, डेयरी, फ्रोजन खाद्य पदार्थों और रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुओं को अधिक कुशलता से अलग करने में सक्षम बनाते हैं। चार-दरवाजे वाला आर्किटेक्चर कूलिंग लॉस को कम करने में भी मदद करता है, जिससे उपयोगकर्ता पूरे रेफ्रिजरेटर कैविटी को परिवेशी हवा में उजागर करने के बजाय केवल आवश्यक डिब्बे को खोल सकते हैं, जिससे इष्टतम संरक्षण स्थितियों को बनाए रखने और रोजमर्रा की उपयोगिता में सुधार करने में मदद मिलती है।

भारतीय घरों के इंटीरियर में भारी बदलाव आया है - वे अधिक समकालीन हो गए हैं। यह आधुनिकीकरण केवल रहने की जगह तक ही सीमित नहीं है बल्कि रसोई में भी देखा जाता है। 4-डोर रेफ्रिजरेटर की लक्जूरियम रेंज को आधुनिक इंटीरियर के पूरक के रूप में सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है।

यह रेंज प्रीमियम सामग्रियों के सहज संलयन के माध्यम से एक बोल्ड लेकिन सुरुचिपूर्ण अभिव्यक्ति बनाते हुए, भारत की पहली ग्लास और मेटल डुअल फिनिश (डुओ नोयर) पेश करती है। एक्सटीरियर के पूरक के रूप में भारत का पहला ओब्सीडियन इंटीरियर्स है, जिसे क्वाड थिएटर लाइटिंगद्वारा बढ़ाया गया है, जो एक परिष्कृत, प्रीमियम माहौल के साथ दृश्यता और समग्र स्वामित्व अनुभव दोनों को बेहतर बनाता है।

डुओ नोयर, नीरो क्वार्ट्ज, डार्क क्वांटम, रोडियम स्टील और कॉसमॉस ब्लैक (मॉडल की उपलब्धता के अधीन) सहित प्रीमियम फिनिश में उपलब्ध, लक्जूरियम को परिष्कृत, डिजाइन-आधारित रसोई में सहजता से एकीकृत करने के लिए डिजाइन किया गया है।

संरक्षण और सौंदर्यशास्त्र से परे, 4-डोर रेफ्रिजरेटर की लक्जूरियम रेंज में कई विचारशील नवाचार शामिल हैं, जिन्हें भारतीय घरों में खाना पकाने, स्टोर करने और भोजन को व्यवस्थित करने के तरीके को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है, जिसमें बड़े बर्तनों और सर्विंग डिश के प्रबंधन से लेकर विविध खाद्य श्रेणियों और बदलती स्टोरेज आवश्यकताओं को समायोजित करना शामिल है। इसके पूरी तरह से इंटरचेंजेबल शेल्फ, ट्रे और स्टोरेज कंपोनेंट उपभोक्ताओं को घर की बदलती आवश्यकताओं के आधार पर स्टोरेज को कॉनफि गर करने की अनुमति देते हैं, जो पूरे वर्ष असाधारण लचीलापन प्रदान करते हैं।

सॉफ्ट-क्लोज ड्रॉर्स, बड़े दरवाजे के डिब्बे, मसाला, नट्स, मसाले स्टोर करने के लिए फ्रीजर में डिब्बे और समर्पित फ्रीजर लाइटिंग सहित अतिरिक्त सुविधाएँ एक अधिक सहज स्टोरेज अनुभव बनाते हुए पहुंच और संगठन को और बढ़ाती हैं।इस रेंज में मेटल कूलिंग, बेवरेज रैक और आईकेयर एक्सपर्ट जैसी अन्य अनूठी विशेषताएं भी हैं, जो त्वरित, एक-विजिट रिजॉल्यूशन के लिए कॉल पर रिमोट डायग्नोसिस को सक्षम बनाती हैं। साथ मिलकर, ये सुविधाएँ भारतीय घरों की विकसित होती जरूरतों का समर्थन करने के लिए स्मार्ट कार्यक्षमता और परिष्कृत उपयोगिता लाती हैं।

अकसे फिल्म बनाना होगा आसान, स्पार्कस्टेशन अब मचाएगा धूम



फाइनल कट प्रो और डेविंसी रिजॉल्व जैसे इंडस्ट्री टूल्स के साथ इंटीग्रेशन भी

वर्से इनोवेशन ने फिल्म एक्सपो 2026 में अपने पहले वैश्विक एआई कंटेंट प्लेटफॉर्म स्पार्कस्टेशन का अनावरण किया। डेलीहंट और जोश की पैरेंट कंपनी वर्से इनोवेशन का यह नया प्लेटफॉर्म कंटेंट प्रोडक्शन के पूरे प्रोसेस को एक ही जगह पर पूरा करने की क्षमता रखता है।

कंपनी के अनुसार, स्पार्कस्टेशन को एक नेक्स्ट-जेनरेशन एआई कंटेंट ऑपरेटिंग सिस्टम के रूप में विकसित किया गया है, जो आइडिया से लेकर फाइनल डिलीवरी तक के पूरे कंटेंट निर्माण को आसान और तेज बनाता है। यह प्लेटफॉर्म स्क्रिप्टिंग, स्टोरीबोर्डिंग, कास्टिंग, लोकेशन डिजाइन, एसेट जनरेशन, मल्टी-एंगल शूट, म्यूजिक और डायलॉग प्रोडक्शन, एडिटिंग, कैप्शनिंग और डिस्ट्रीब्यूशन जैसे सभी कार्य एक ही प्लेटफॉर्म पर करने की सुविधा देता है।

स्पार्कस्टेशन की खासियत इसका मॉडल-अग्नोस्टिक एआई सिस्टम है, जो हर क्रिएटिव टास्क के लिए सबसे उपयुक्त एआई मॉडल का चयन करता है, जिससे काम की गुणवत्ता और स्पीड दोनों बेहतर होती हैं। कंपनी का दावा है कि इस प्लेटफॉर्म की मदद से 60 सेकंड की ब्रांड फिल्म की लागत में 90 प्रतिशत तक की कमी लाई जा सकती है—जो पहले ₹10-25 लाख होती थी, वह घटकर करीब ₹50,000-₹75,000 तक आ सकती है। वहीं, प्रोडक्शन टाइम भी कई हफ्तों से घटकर लगभग 24 घंटे रह जाता है।

यह प्लेटफॉर्म मुख्य रूप से तीन वर्गों के लिए तैयार किया गया है—फिल्ममेकर्स और प्रोडक्शन हाउस, ब्रांड्स और एजेंसियां, तथा डिजिटल क्रिएटर्स। फिल्ममेकर्स इसमें स्टोरी बिल्डिंग, स्क्रिप्ट एनालिसिस, कास्टिंग और एडिटिंग जैसे फीचर्स का उपयोग कर सकते हैं, साथ ही प्रीमियर प्रो, उपलब्ध है। ब्रांड्स और एजेंसियां कम समय में बड़े स्तर पर क्रिएटिव कैंपेन तैयार कर सकती हैं, जबकि क्रिएटर्स को स्टूडियो-ग्रेड आउटपुट क्रेडिट-बेस्ड मॉडल के जरिए मिलता है।

प्लेटफॉर्म की प्रमुख विशेषताओं में पूरी तरह इंटीग्रेटेड प्रोडक्शन पाइपलाइन, फेस और एक्सप्रेशन जैसी डिटेल्स में कंटीन्यूटी, 60 से अधिक भाषाओं का सपोर्ट और क्रिएटर-फर्स्ट डिजाइन शामिल हैं।

लॉन्च के मौके पर कंपनी के को-फाउंडर और सीईओ उमंग बेदी ने कहा,

स्पार्कस्टेशन सिर्फ कंटेंट को सस्ता बनाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह उन कहानियों को संभव बनाता है जो पहले प्रोडक्शन सीमाओं के कारण नहीं बन पाती थीं। लागत और समय की बाधाओं को दूर कर हम क्रिएटिविटी के नए अवसर खोल रहे हैं।

कंपनी ने बताया कि इस प्लेटफॉर्म का पिछले छह महीनों से आंतरिक परीक्षण किया जा रहा है और इसे लाइव प्रोडक्शन में भी उपयोग किया जा रहा है। स्पार्कस्टेशनको चरणबद्ध तरीके से लॉन्च किया जाएगा—29 अगस्त से बीटा एक्सेस, 1 अक्टूबर से सामान्य उपलब्धता और 1 नवंबर से एंटरप्राइज अढकलॉन्च किया जाएगा।

अगले 24 महीनों में 30 मिलियन डॉलर से अधिक के निवेश के साथ, कंपनी का लक्ष्य इस प्लेटफॉर्म के जरिए 100 से अधिक स्टूडियो, 1,000 ब्रांड्स और हजारों क्रिएटर्स को जोड़ना है।

वर्से इनोवेशन,, जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के जरिए लोकल लैंग्वेज कंटेंट को बढ़ावा देती है, पहले से ही भारत में करोड़ों यूजर्स को सेवाएं दे रही है। स्पार्क स्टेशन के लॉन्च के साथ कंपनी वैश्विक स्तर पर कंटेंट क्रिएशन के तरीके को बदलने की दिशा में बड़ा कदम बढ़ा रही है।





नारियल का कोई हिस्सा बेकार नहीं

■ लाखों किसानों व ग्रामीण परिवारों की आजीविका का आधार ■ लकड़ी से लेकर कोकोपीट तक

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। नारियल कई सारे न्यूट्रिशन से भरा हुआ सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद फल है। नारियल के इसी गुण और महत्व को बताने के लिए भारत सहित एशिया-प्रशांत क्षेत्र के कई देशों में हर साल 2 सितम्बर को विश्व नारियल दिवस मनाया जाता है।

विश्व नारियल दिवस दुनिया के सबसे उपयोगी प्राकृतिक उत्पादों में शामिल नारियल के आर्थिक, कृषि और सामाजिक महत्व को बताता है। विश्व नारियल दिवस 2026 की थीम 'अनिश्चितता के समय में नारियल भोजन, ऊर्जा और आजीविका की सुरक्षा है। यह थीम बताती है कि बदलते वैश्विक हालात में नारियल खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा और रोजगार के लिए कितना महत्वपूर्ण हो सकता है।

वहीं, देखा जाए तो नारियल केवल एक फल नहीं बल्कि लाखों किसानों और ग्रामीण परिवारों की आजीविका का आधार है। नारियल के पेड़ का लगभग हर हिस्सा किसी न किसी काम आता है। नारियल पानी का इस्तेमाल ताजगी देने वाले पेय के रूप में होता है जबकि नारियल के गूदे से दूध और तेल तैयार किया जाता है। नारियल तेल खाना पकाने के साथ-साथ साबुन, क्रीम, सौंदर्य प्रसाधन और बालों की देखभाल से जुड़े उत्पादों में भी इस्तेमाल होता है।

विश्व नारियल दिवस पहली बार वर्ष 2009 में मनाया गया था। यह दिवस एशियाई और प्रशांत नारियल समुदाय से जुड़ा है, जिसे अब अंतरराष्ट्रीय नारियल समुदाय के नाम से जाना जाता है। 2 सितम्बर की तारीख इसलिए चुनी गई क्योंकि इसी दिन इस संगठन की स्थापना हुई थी। इस दिवस का उद्देश्य नारियल के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ नारियल क्षेत्र में निवेश, अनुसंधान, नवाचार और उद्योग के विकास को प्रोत्साहित करना है।

दुनिया के लगभग 80 देशों में नारियल की खेती की जाती है और इसकी करीब 150 किस्में बताई जाती हैं। मलेशियन येलो ड्वार्फ, फिजी ड्वार्फ, किंग कोकोनट, वेस्ट कोस्ट टॉल, ईस्ट कोस्ट टॉल, पनामा टॉल,



ड्वार्फ ऑरेंज और ग्रीन ड्वार्फ जैसी किस्में अलग-अलग क्षेत्रों में उगाई जाती हैं। भारत, इंडोनेशिया, फिलीपींस सहित कई एशियाई-प्रशांत देश नारियल उत्पादन और इससे जुड़ी आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

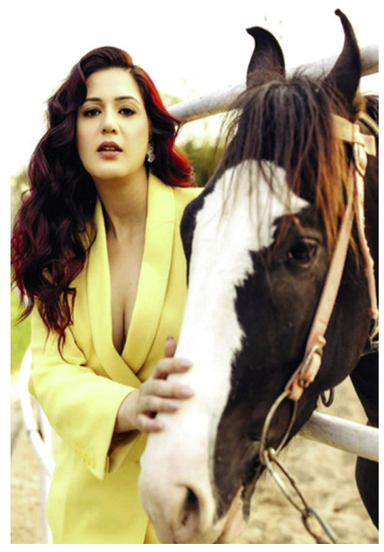
नारियल की खासियत यह है कि इसके किसी भी हिस्से को आसानी से बेकार नहीं माना जाता। इसका तना और लकड़ी घरों, फर्नीचर और नावों के निर्माण में इस्तेमाल होती है। नारियल के छिलके और रेशे यानी कोयर से रस्सियां, जाल, चटाइयां, ब्रश और दरवाजे के पायदान बनाए जाते हैं। नारियल के छिलके से तैयार बोर्ड का इस्तेमाल फर्नीचर और कुछ औद्योगिक उत्पादों में भी किया जाता है।

नारियल का भूसा यानी कोकोपीट आधुनिक कृषि में भी उपयोगी है। इसे हाइड्रोपोनिक खेती और पौधों को उगाने के लिए माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। ऑर्किड और मशरूम जैसी फसलों के उत्पादन में भी इसका उपयोग किया जाता है। वहीं, नारियल के खोल से तैयार सक्रिय कार्बन पानी साफ करने वाले फिल्टर में काम आता है।

नारियल में फाइबर के साथ विटामिन सी, ई और बी समूह के कुछ विटामिन तथा आयरन, मैग्नीशियम, कैल्शियम और जिंक जैसे खनिज पाए जाते हैं। नारियल पानी लोकप्रिय पेय है जबकि नारियल का गूदा और दूध कई पारंपरिक व्यंजनों, मिठाइयों और खाद्य पदार्थों का हिस्सा हैं। हालांकि नारियल से जुड़े स्वास्थ्य लाभों को व्यक्ति की जरूरत और कुल आहार के संदर्भ में देखना चाहिए।

नारियल को लेकर कई रोचक तथ्य भी प्रचलित हैं। 'कोकोनट' शब्द को पुर्तगाली शब्द 'कोको' से जोड़ा जाता है, जिसका अर्थ चेहरा है। माना जाता है कि नारियल के तीन छेद चेहरे जैसी आकृति बनाते हैं। नारियल का पेड़ कई दशकों तक फल दे सकता है और अनुकूल परिस्थितियों में एक पेड़ से सालाना बड़ी संख्या में नारियल प्राप्त किए जा सकते हैं।

दिखावे से ज्यादा असलियत में यकीन रखती हूं : ईशा रिखी



मुंबई, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। अभिनेत्री ईशा रिखी जल्द ही रियलिटी शो बिग बॉस-18 में नजर आएंगी। अभिनेत्री ने बताया कि दर्शक मुझे अभी तक सिर्फ एक अभिनेत्री के तौर पर ही जानती है। मैं चाहती हूं कि लोग जानें कि ईशा रिखी कौन हैं और मेरी पर्सनैलिटी के सभी अलग-अलग शेड्स देखें।

अभिनेत्री ने आगे यह भी बताया कि वे शो में किस तरह से गेम खेलेंगी। उन्होंने कहा कि मैं असली रहूंगी क्योंकि मैं दिखावे से ज्यादा असलियत में यकीन रखती हूं। मुझे वो बनना नहीं पसंद है, जो मैं नहीं हूं। मैं शो को ईमानदारी से खेलने की कोशिश करूंगी और उम्मीद है कि इसे ईमानदारी से जीतूंगी भी। अभिनेत्री का मानना है कि शो में जाने के बाद उनका सबसे चैलेंज पब्लिक जजमेंट हो सकता है। अभिनेत्री ने बताया कि वे शो में सिचुएशन को किस तरह से डील करेंगी। उन्होंने कहा कि जब मुझे लगेगा कि किसी तरह की बात को शांति से डील करना चाहिए, तो मैं उसे वैसे ही करूंगी, लेकिन जब सिचुएशन संभल नहीं रही, तो मैं जरूर सख्ती से पेश आऊंगी।

अभिनेत्री ने बताया कि वह इस शो में अपनी मां की वजह से जा रही हैं। उन्होंने कहा कि मैं आमतौर पर अपने दोस्तों के लिए आखिर तक जाती हूं और उनके लिए स्टैंड लेती हूं, लेकिन मुझे नहीं पता कि शो के अंदर मेरी दोस्ती कितनी स्ट्रांग होगी। मैं अच्छा खेलने जा रही हूं और मैं अपनी मां के लिए शो जीतना चाहती हूं। तो, जाहिर है, मैं ट्रॉफी को प्रायोरिटी देने की पूरी कोशिश करूंगी।

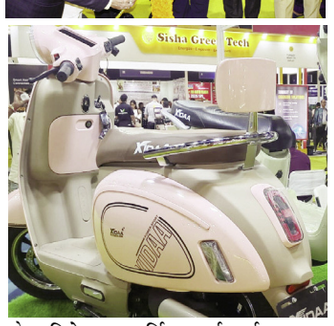
उन्होंने आगे कहा कि मैं एक इमोशनल इंसान हूं, इसलिए मुझे थोड़ा डर है कि कहीं इमोशंस या दोस्ती की वजह से मैं खुद को चोट न पहुंचा लूं, लेकिन इस बार, मेरा फोकस पक्का ट्रॉफी जीतने पर है।

छठें ईवी इंडिया एक्सपो की शुरुआत

इलेक्ट्रिक वाहनों के भविष्य पर चर्चा और एक्सपो डायरेक्टरी का हुआ विमोचन

ग्रेटर नोएडा, 1 सितम्बर (देशबन्धु)। इंडियन एग्जिबिशन सर्विसेज और ग्रीन सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित छठे ईवी इंडिया एक्सपो 2026 की मंगलवार को इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में शुरुआत हुई। 1 से 3 सितम्बर तक चलने वाली इस प्रदर्शनी में इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी, चार्जिंग उपकरण, ईवी पार्ट्स और नई तकनीकें प्रदर्शित की जा रही हैं। एक्सपो का उद्घाटन इंडियन एग्जिबिशन सर्विसेज के सीईओ डॉ. स्वदेश कुमार, डॉ. राजीव मिश्रा और डॉ. शैलेंद्र सेहरोज ने उद्योग जगत के प्रमुख प्रतिनिधियों के साथ संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर सनडक सोलर सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक सोम प्रकाश मिड्ढा, लॉर्ड्स मार्क टेक नेक्स्ट प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक रमेश कुमार मिगलानी, फ्यूचर टेक राइड्स प्राइवेट लिमिटेड (डैकस)





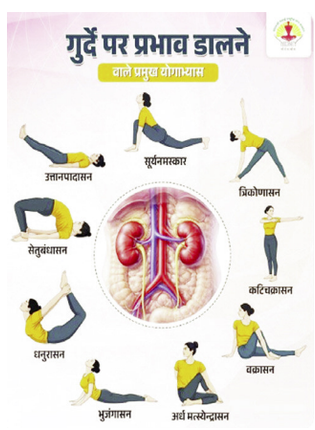
के निदेशक हर्षित गर्ग, ई गरुड़ा इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक मनीष तनेजा और मैक्सिम ई व्हीकल्स के निदेशक अतुल चाचन शामिल रहे। इनके साथ ड्राइव वोल्ट्स प्राइवेट लिमिटेड एवं रे इलेक्ट्रिक के एमडी एवं संस्थापक देवांश गुप्ता, एलेस्को के एमडी रौनक जुनेजा, हेराल्ड ई-बाइक से श्री कृष्णा ग्रोवर तथा ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी से लोकेश और शौर्य कटारिया ने भी उद्घाटन में भाग लिया।

पहले दिन कंपनियों के बीच व्यापार बढ़ाने और आपसी सहयोग के लिए समझौता ज्ञापनों (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। कारोबारी बैठकों में नई साझेदारियों और व्यापार के अवसरों पर भी चर्चा हुई। डॉ. स्वदेश कुमार ने कहा कि ईवी इंडिया एक्सपो का उद्देश्य इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग से जुड़ी कंपनियों और कारोबारियों को एक मंच पर लाना है। पहले दिन हुए कारोबारी समझौते एक अच्छी शुरुआत हैं। हमें उम्मीद है कि यह आयोजन इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग को आगे बढ़ाने में मदद करेगा।

गुर्दे की सेहत के लिए वरदान हैं योगाभ्यास

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। स्वास्थ्य का वास्तविक अर्थ केवल बीमारियों का इलाज करना नहीं बल्कि शरीर को स्वाभाविक रूप से स्वस्थ और मजबूत बनाए रखना है। गुर्दे हमारे शरीर का प्राकृतिक फिल्टरिंग सिस्टम है, जो शरीर की सफाई में काम करता है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि आंतरिक अंगों की मालिश और पुनर्प्राप्ति की एक सूक्ष्म तकनीक है। सही योगाभ्यासों, प्राणायाम और सजगता के माध्यम से हम न केवल अपने गुर्दों को स्वस्थ रख सकते हैं बल्कि भविष्य में होने वाले गंभीर जोखिमों से भी इनका बचाव कर सकते हैं।

मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान ने कुछ ऐसे आसनों के बारे में बताया, जो गुर्दे पर प्रभाव डालते हैं और उसकी कार्यप्रणाली को मजबूत बनाते हैं। इनमें उत्तानपदासन, सेतुबंधासन, धनुरासन, भुजंगासन, अर्ध मत्स्येन्द्रासन, वक्रासन, कटिचक्रासन, त्रिकोणासन जैसे कई



योगाभ्यास शामिल हैं।

उत्तानपदासन : यह आसन सीधे तौर पर गुर्दे की किसी बीमारी को ठीक नहीं करता लेकिन यह शरीर की आंतरिक प्रणालियों को मजबूत कर गुर्दे की कार्यक्षमता में सुधार लाता है। आयुष मंत्रालय के अनुसार, इस आसन को करने के दौरान जब साधक पैरों को ऊपर उठाते हैं, तो निचले हिस्से से रक्त का प्रवाह पेट और पीठ के निचले हिस्से (जहां गुर्दे स्थित होते हैं) की ओर बढ़ता है। बेहतर ब्लड सर्कुलेशन से गुर्दे को पर्याप्त ऑक्सीजन मिलती है और वह खून को बेहतर ढंग से फिल्टर कर पाता है।

सेतुबंधासन : इस योगासन को करने से पेट के भीतरी अंगों के साथ-साथ गुर्दे को भी उत्तेजित (स्टिम्युलेट) करता है। इस अभ्यास से पेल्विक क्षेत्र और किडनी के आसपास रक्त का संचार सुचारू होता है, जिससे अंगों को पोषण मिलता है। साथ ही, यह हाई ब्लड प्रेशर को नियंत्रित करने में अहम भूमिका अदा करता है।

धनुरासन : धनुरासन के अभ्यास के दौरान पेट और कमर के हिस्से में खिंचाव होता है, जिससे गुर्दे सहित अंदरूनी अंगों में रक्त का संचार बेहतर होता है। यह आसन अंगों को उत्तेजित करके शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने और मूत्र विकारों को दूर करने में मददगार माना जाता है।

वक्रासन : अग्न्याशय को उत्तेजित करता है जिससे इंसुलिन का स्राव बेहतर होता है। वक्रासन में शरीर को मोड़ने से पेट के निचले हिस्से और कमर की मांसपेशियों पर हल्का दबाव पड़ता है, जिससे किडनी क्षेत्र में रक्त संचार बेहतर होता है।

भुजंगासन : नियमित तौर पर इस आसन को करने से रीढ़ की हड्डी मजबूत और लचीली बनती है। पेट के अंगों पर दबाव डालकर पाचन क्रिया में सुधार करता है। आसन करने से पेट में खिंचाव होता है, जिससे किडनी जैसे आंतरिक अंगों की हल्की मालिश होती है, जिससे उनका कामकाज सुधरता है।

अर्ध मत्स्येन्द्रासन : यह पेट के अंगों की अच्छी मालिश करता है और रक्त संचार बढ़ाता है।

कटिचक्रासन : कटिचक्रासन के दौरान होने वाले ट्विस्टिंग (घुमाव) मूवमेंट से पेट और कमर के अंदरूनी अंगों जैसे किडनी और लीवर की हल्की मालिश होती है।

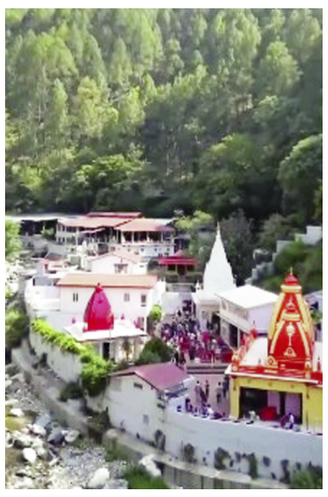
फोर्टिस ने एडवांस रोबोटिक सर्जरी की मदद से 32-वर्षीय मरीज जेनाइटल कैंसर का किया सफल उपचार

नोएडा 1 सितम्बर (देशबन्धु)। फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा ने कीहोल प्रोसिजर जिसे रोबोटिक वीईआईएल - रोबोट-असिस्टेड वीडियो एंडोस्कोपिक इंजिनल लिंफडेनेक्टोमी कहा जाता है और यह मिनीमॅली इन्वेसिव तकनीक होती है, की मदद से 32-वर्षीय मरीज के कैंसरग्रस्त ग्रॉइन लिंफ नोड्स को सफलतापूर्वक निकाला है। उक्त मरीज पेनाइल कैंसर (लिंग के कैंसर) से ग्रस्त थे। इस जटिल मामले का प्रबंधन डॉ शैलेन्द्र कुमार गोयल, डायरेक्टर ऑफ यूरोलॉजी एंड किडनी ट्रांसप्लांट, फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा के नेतृत्व में गठित टीम ने किया। फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा की मेडिकल टीम ने एडवांस दा विंची Xi रोबोटिक सर्जिकल सिस्टम की सहायता से पांच घंटे चली प्रक्रिया के दौरान मरीज की जांघ में मामूली चीरे लगाकर प्रभावित लिंफ नोड तक पहुंच बनायी। इस मामले की जानकारी देते हुए, डॉ शैलेन्द्र कुमार गोयल, डायरेक्टर - यूरोलॉजी एंड किडनी ट्रांसप्लांट, फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा ने कहा, '32-वर्षीय युवक में पेनाइल कैंसर का मामला काफी असामान्य है, और उस पर ग्रॉइन लिंफ नोड के भी कैंसरग्रस्त होने से यह मामला काफी पेचीदा था। हमारी प्राथमिकता प्रभावित लिंफेटिक टिश्यू को पूरी तरह से इस प्रकार निकालने की थी ताकि कैंसर उपचार के लक्ष्यों के साथ कोई समझौता न हो, और साथ ही, मरीज को कम से कम सर्जिकल ट्रॉमा हो। मोहित सिंह, ज़ोनल डायरेक्टर, फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा ने कहा, 'फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा में हमारा लक्ष्य यह रहता है कि हम नई मेडिकल टेक्नोलॉजी और बेहतरीन सर्जिकल दक्षता का मेल कराते हुए वर्ल्ड-क्लास क्लीनिकल केयर उपलब्ध कराएं।

लाखों भक्तों की है अटूट आस्था बाबा नीम करोली धाम

नैनीताल, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। उत्तराखंड की हरी-भरी वादियों में बसा श्री कैंची धाम केवल एक तीर्थस्थल नहीं बल्कि, अनगिनत श्रद्धालुओं की आस्था, शांति और अटूट विश्वास का धार्मिक केंद्र बना हुआ है। नैनीताल जिले में भवाली-अल्मोड़ा मार्ग पर स्थित प्रसिद्ध संत नीम करोली बाबा (महाराज जी) का एक पवित्र आध्यात्मिक आश्रम है। मान्यता है कि बाबा नीम करोली महाराज के दर से कभी कोई खाली हाथ नहीं लौटता और इसी विश्वास के साथ देश-विदेश से लाखों भक्त इस पावन धरा पर शीश नवाते हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने मंदिर की भव्यता पर जोर दिया है।

उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर मंदिर का खास वीडियो पोस्ट कर लिखा कि नैनीताल जिले में मौजूद कैंची धाम सबसे पूजनीय बाबा नीम करोली महाराज जी की कड़ी तपस्या की पवित्र जगह है और लाखों भक्तों की अटूट आस्था का केंद्र है। पहाड़ों की शांत घाटियों में बसा यह दिव्य धाम



आध्यात्मिक शांति और पॉजिटिव एनर्जी का एक अनोखा अनुभव देता है। नैनीताल आने पर, बाबा नीम करोली महाराज जी के इस पवित्र धाम के दर्शन जरूर करें।

नैनीताल जिले के भवाली-अल्मोड़ा मार्ग पर स्थित यह पावन धाम 20वीं सदी के महान संत श्री नीम करोली बाबा की दिव्य कर्मस्थली और साधना भूमि है। यहां की अलौकिक ऊर्जा और शांत वातावरण हर उस व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है, जो जीवन के कोलाहल से दूर आत्मिक शांति की तलाश में निकलता है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि श्री कैंची धाम दो पहाड़ियों के बीच कैंची के आकार (घुमावदार मोड़ों) वाली घाटी में स्थित है, इसलिए इसे कैंची धाम कहा जाता है। आश्रम की स्थापना 1960 के दशक (वर्ष 1964) में नीम करोली बाबा द्वारा की गई थी। 15 जून 1964 को वैदिक मंत्रोच्चार के बीच कैंची धाम आश्रम का आधिकारिक उद्घाटन किया गया था। यहां मुख्य रूप से हनुमान जी का मंदिर है। कैंची धाम पहले एक घना जंगल हुआ करता था, जहां संत सोमवारी महाराज और प्रेमी बाबा साधना करते थे। बाबा नीम करोली ने यहां आकर आध्यात्मिक ऊर्जा महसूस की और स्थानीय निवासी पूर्णानंद की दान की गई भूमि पर आश्रम बनवाया।

जन्माष्टमी स्पेशल : दही-हांडी, भजन व संगीत त्योहार का खास हिस्सा



■ 'राधा कैसे ना जले' से 'वो किसना है' तक, गाने सुनकर कान्हा की भक्ति में डूब जाएंगे आप

मुंबई, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। देशभर में जन्माष्टमी का त्योहार पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। मंदिरों में सजावट होती है, घरों में लड्डू गोपाल की झांकियां सजाई जाती हैं और रात के समय श्रीकृष्ण के जन्म का इंतजार किया जाता है। इसके साथ ही दही-हांडी, भजन और संगीत भी इस त्योहार का खास हिस्सा हैं। बॉलीवुड ने भी कृष्ण की लीलाओं, राधा-कृष्ण के प्रेम और कान्हा की शरारतों को कई यादगार गानों के जरिए लोगों तक पहुंचाया है। यही वजह है कि कुछ फिल्मी गाने आज भी जन्माष्टमी की प्लेलिस्ट का हिस्सा बने हुए हैं।

राधा कैसे ना जले - जन्माष्टमी की जब भी बात होती है, तो राधा कैसे ना जले गाने का जिक्र जरूर होता है। साल 2001 में आई फिल्म लगान का यह गाना राधा-कृष्ण के रिश्ते की नटखट कहानी को दिखाता है। गाने में आमिर खान कृष्ण के अंदाज में नजर आते हैं, जबकि ग्रेसी सिंह राधा का किरदार निभाती हैं। राधा अपने कृष्ण को दूसरी गोपियों के साथ देखकर जिस तरह की शिकायत और जलन जाहिर करती हैं, वही इस गाने की सबसे खास बात है। इस गाने को आशा भोसले और उदित नारायण ने गाया है, वहीं ए.आर. रहमान ने संगीत और जावेद अख्तर ने इसके बोल लिखे।

वो किसना है - अगर आप जन्माष्टमी के मौके पर भक्ति के साथ भव्य संगीत सुनना चाहते हैं तो वो किसना है आपकी प्लेलिस्ट में जरूर होना चाहिए। यह गाना 2005 में आई फिल्म किसना द वॉरियर पोएट का है। फिल्म में विवेक ओबेरॉय मुख्य भूमिका में नजर आए थे। गाने में कृष्ण के सुंदर रूप, उनकी शक्ति और उनके आकर्षक व्यक्तित्व का वर्णन किया गया है। इस गाने को सुखविंदर सिंह, इस्माइल दरबार और आयशा दरबार ने आवाज दी है। जावेद अख्तर ने इसके बोल लिखे हैं। गाने में भक्ति के साथ उत्सव का रंग भी दिखाई देता है।

मैया यशोदा- कृष्ण की बाल लीलाओं और यशोदा मैया के साथ उनके रिश्ते पर बना ये गाना मैया यशोदा बेहद प्यारा है। सूरज बड़जात्या की फिल्म हम साथ-साथ हैं का यह गाना 1999 में रिलीज हुआ था। गाने में करिश्मा कपूर, तब्बू और सोनाली बेंद्रे नजर आती हैं और कृष्ण की शरारतों को लेकर गाने के जरिए शिकायत करती है। इस गाने को अलका याग्निक, अनुराधा पौडवाल और कविता कृष्णमूर्ति ने आवाज दी है। जन्माष्टमी के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में आज भी इस गाने पर बच्चे और महिलाएं डांस करते नजर आते हैं।

बड़ा नटखट है रे - साल 1972 में आई फिल्म अमर प्रेम का बड़ा नटखट है रे आज भी कृष्ण भक्ति के सबसे प्यारे गानों में गिना जाता है। इस गाने में मां की नज़र से बाल कृष्ण की शरारतों को दिखाया गया है। लता मंगेशकर की आवाज़ ने इस गीत को खास बना दिया। आनंद बख्शी ने इसके बोल लिखे और आर.डी. बर्मन ने संगीत दिया। गाने का भाव इतना सरल है कि इसे सुनते ही यशोदा मैया और बाल कृष्ण की तस्वीर मन में बनने लगती है।

गो गो गोविंदा - जन्माष्टमी के मौके पर दही-हांडी को लेकर लोगों में खूब जोश होता है। इस जोश को गो गो गोविंदा गाने के जरिए दिखाया गया है। अक्षय कुमार और परेश रावल की फिल्म ओह माय गॉड! के इस गाने में सोनाक्षी सिन्हा और प्रभुदेवा जबरदस्त डांस करते नजर आते हैं। गाना दही-हांडी के माहौल और मटकी फोड़ने की परंपरा को एनर्जेटिक अंदाज में दिखाता है। श्रेया घोषाल और अमन त्रिखा ने इस गाने में अपनी आवाज दी। यह गाना जन्माष्टमी के कार्यक्रमों में आज भी खूब बजता है।

राधे राधे - आयुष्मान खुराना की फिल्म ड्रीम गर्ल का राधे राधे नई पीढ़ी के बीच जन्माष्टमी का रंग जमाने वाला गाना है। 2019 में आई इस फिल्म के गाने में आयुष्मान खुराना और नुसरत भरूचा नजर आए। गाना राधा और कृष्ण के रिश्ते को एक नए और मॉडर्न अंदाज में पेश करता है।

टाइट जूते से हाई हील तक, पैरों में पहनने से शरीर पर पड़ता है असर

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। हम अक्सर कपड़े, हेयरस्टाइल और अपनी फिटनेस पर तो खूब ध्यान देते हैं, लेकिन पैरों में क्या पहन रहे हैं, इस पर उतना गौर नहीं करते। जूते या चप्पल खरीदते समय कई लोगों के लिए डिजाइन, रंग और कीमत सबसे जरूरी होती है। लेकिन साइंस की मानें तो फुटवियर सिर्फ फैशन का हिस्सा नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध पैरों की चाल, दबाव और शरीर के निचले हिस्से की मूवमेंट से भी है। गलत साइज या गलत डिजाइन का फुटवियर लंबे समय तक पहनने पर पैरों में दर्द और दूसरी परेशानियों का कारण बन सकता है।

अगर जूता पैर से छोटा है या बहुत टाइट है तो पैर की उंगलियों को सही जगह नहीं मिलती। इससे उंगलियों पर लगातार दबाव पड़ता है। लंबे समय



पैरों में दर्द, छाले, कॉर्न और त्वचा पर मोटी परत जैसी परेशानी

तक ऐसा होने पर पैरों में दर्द, छाले, कॉर्न और त्वचा पर मोटी परत जैसी परेशानियां हो सकती हैं।

कई लोग जूता खरीदते समय सिर्फ यह देखते हैं कि पैर उसमें आ रहा है या नहीं। लेकिन जूते की चौड़ाई भी उतनी ही जरूरी है। अगर आगे से जूता बहुत संकरा है तो पैर की उंगलियां आपस में दब सकती हैं। इससे चलने में परेशानी और पैरों में दर्द हो सकता है। इसलिए ऐसा जूता बेहतर माना जाता है जिसमें उंगलियों को थोड़ा फैलने की जगह मिले।

अगर आप लगातार हाई हील पहनते हैं तो यह सिर्फ पैरों तक सीमित असर नहीं डालती। रिसर्च में हाई हील्स को पैर की बनावट में बदलाव, मस्कुलोस्केलेटल दर्द और चोट के बढ़े हुए खतरे से जोड़ा गया है। एक अन्य मेटा-एनालिसिस में पाया गया कि ऊंची हील पहनने पर चलते समय घुटने पर पड़ने वाले कुछ लोड और मोमेंट बढ़ जाते हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कभी-कभार हील पहनना हर किसी के लिए नुकसानदायक है। रोजाना लंबे समय तक हाई हील पहनना पैरों के लिए परेशानी बढ़ा सकता है।

हमारे पैर जमीन पर शरीर का वजन संभालते हैं। जूते का आकार और डिजाइन बदलने पर चलने का तरीका भी थोड़ा बदल सकता है। अगर जूता सही फिट नहीं है तो पैर को सामान्य तरीके से रखने में दिक्कत हो सकती है। इसी वजह से लंबे समय तक गलत फुटवियर पहनने पर दर्द या असहजता महसूस हो सकती है।

साइंस के मुताबिक, जूता ऐसा होना चाहिए जिसमें पैर आराम से रहे। उंगलियों पर ज्यादा दबाव न पड़े, एड़ी बार-बार जूते से बाहर न निकले और चलते समय पैर को परेशानी न हो। अगर जूता पहनने के कुछ देर बाद ही पैर में दर्द, जलन या दबाव महसूस होने लगे तो उसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

मारुति सुजुकी	4.16 प्रतिशत
भारतीय स्टेट बैंक	2.51 प्रतिशत
इंडिगो	2.48 प्रतिशत
बजाज फिनसर्व	2.40 प्रतिशत
महिंद्रा एंड महिंद्रा	2.36 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	1,54,940
बिटुर	88,730
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	39,795
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	2,36,000
वायदा	70,857
चांदी सिक्का लिवाली	900
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	96.39	93.32
पौंड स्टर्लिंग	131.03	126.39
यूरो	112.26	108.08
चीन युआन	15.06	13.34

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2400-3000
गेहूं दडा	2862.70
आटा	2800-2900
मैदा	2900-2950
चोकर	2000-2100

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

शुगर

चीनी एस	5,803
चीनी एम	4500-4600
मिल डिलीवरी	3620-3720
गुड़	5,976

दाल-दलहन

चना	5700-5800
दाल चना	7975.80
मसूर काली	8217.40
उड़द दाल	11320.41
मूंग दाल	10205.58
अरहर दाल	11451.54

भारत अपनी ग्रोथ बनाए रखने में सक्षम : सीतारमण

■ दुनिया में कच्चे तेल व पेट्रोलियम उत्पादों के सबसे बड़े आयातकों में से एक है भारत

एशविले, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा कि भारत ने यह साबित कर दिया है कि वह अपनी ग्रोथ की रफ्तार को कम किए बिना ग्लोबल इकॉनमी में हो रहे बदलावों के हिसाब से खुद को ढाल सकता है। उन्होंने देश की आयातित ऊर्जा और फर्टिलाइजर पर निर्भरता को भी स्वीकार किया।

जी20 वित्त मंत्रियों की बैठक के दौरान वित्त मंत्री ने भारत को चुनौतियों से निपटने में सक्षम अर्थव्यवस्था बताया। उन्होंने कहा कि भारत दुनिया में कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के सबसे बड़े आयातकों में से एक है। भारत कुछ घरेलू उत्पादन क्षमता होने के बावजूद कई उर्वरकों और उनके कच्चे माल का भी आयात करता है।

वित्त मंत्री ने कहा, 'हम कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के बड़े आयातकों में से एक हैं। हम विभिन्न प्रकार के उर्वरकों (यूरिया, अमोनिया, डीएपी) के बड़े आयातक हैं। देश के भीतर उत्पादन क्षमता है, लेकिन उसके बावजूद हम आयातक हैं।



हम सरकार के तौर पर हर बार चुनौती आने पर भारत को फायदेमंद स्थिति में लाने के लिए काम करेंगे : निर्मला सीतारमण, वित्त मंत्री

'निर्मला सीतारमण ने कहा कि भारत के आर्थिक प्रदर्शन ने यह दिखाया है कि वह विदेशों में होने वाले घटनाक्रमों पर प्रतिक्रिया देने और अपनी ग्रोथ की गति को बचाए रखने में सक्षम है। उन्होंने कहा, 'ये सभी एक जीवंत अर्थव्यवस्था के बहुत स्पष्ट संकेत हैं, एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो वैश्विक स्तर पर बदलावों को स्वीकार करती है और खुद को इस तरह से ढालती है कि हमारी ग्रोथ प्रभावित न हो। निर्मला सीतारमण ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक भी समय-समय पर अर्थव्यवस्था का अपना आकलन जारी करता है, जिसमें संकेतक सकारात्मक दिशा में बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा, 'हां, चुनौतियां हैं, और हम सरकार के तौर पर हर बार चुनौती आने पर भारत को फायदेमंद स्थिति में लाने के लिए काम करेंगे। भारत ने वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में 7.8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। वित्त मंत्री ने कहा कि यह आंकड़ा इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसे लगातार बाहरी दबावों के बीच हासिल किया गया है।

जीडीपी ग्रोथ देश की आर्थिक मजबूती व भरोसे का सबूत : पवन कल्याण



अमरावती। आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री पवन कल्याण ने मंगलवार को कहा कि 2026-27 की पहली तिमाही में भारत की 7.8 प्रतिशत जीडीपी ग्रोथ देश की आर्थिक मज़बूती, भरोसे और सामूहिक शक्ति का सबूत है। जन सेना नेता ने सोशल मीडिया पर जीडीपी ग्रोथ की तारीफ की और कहा कि भारत की सामूहिक शक्ति 'विकसित भारत' की राह बना रही है। उपमुख्यमंत्री ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'वित्त वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही में भारत की 7.8 प्रतिशत जीडीपी ग्रोथ सिर्फ एक आंकड़ा नहीं, यह देश की आर्थिक मजबूती, भरोसे और सामूहिक शक्ति का एक जबरदस्त सबूत है। ऐसे समय में जब दुनिया युद्ध, भू-राजनीतिक तनाव, तेल की अस्थिर कीमतों, सप्लाई-चेन में रुकावट और लगातार वैश्विक अनिश्चितता से जूझ रही है, भारत के लोगों ने एक बार फिर अपनी ताकत और मजबूती दिखाई है। उन्होंने लिखा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, उनका सामूहिक संकल्प चुनौतियों को अवसरों में और अनिश्चितता को तरक्की में बदल रहा है। उन्होंने कहा कि यह शानदार प्रदर्शन भारत के लोगों, उद्यमों, मजदूरों, किसानों, इनोवेटर्स और संस्थानों की ताकत को दिखाता है, जिन्हें मजबूत और दूरदर्शी राष्ट्रीय नेतृत्व का समर्थन प्राप्त है। उन्होंने कहा, '2014 से, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, भारत भरोसे, बदलाव और विकास के एक नए दौर में प्रवेश कर चुका है, जिसकी आर्थिक नींव मज़बूत है, आत्मनिर्भरता बढ़ी है, तेजी से डिजिटल बदलाव हुआ है, विश्व-स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर बना है और राष्ट्रीय भरोसा बढ़ा है। उनके नेतृत्व ने भारत के युवाओं को बड़े सपने देखने, इनोवेशन करने, निर्माण करने और नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया है, जिससे एंटरप्रेन्योरशिप, टेक्नोलॉजी और रोज़गार के नए अवसर पैदा हुए हैं।

जीएसटी संग्रह अगस्त में 14.8 प्रतिशत बढ़कर 1,99,853 करोड़ पर



नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के तहत गत अगस्त में सकल राजस्व संग्रह एक साल पहले के मुकाबले 14.8 प्रतिशत बढ़कर 1,99,853 करोड़ रुपए पर पहुंच गया।

अगस्त 2025 में सकल जीएसटी संग्रह 1,74,116 करोड़ रुपए रहा था। इस साल अगस्त में घरेलू जीएसटी संग्रह 9.3 प्रतिशत और आयात पर प्राप्त जीएसटी राजस्व 29 प्रतिशत बढ़ा है। घरेलू बाजार से सरकार को कुल 1,37,249 करोड़ रुपए का वस्तु एवं सेवा कर प्राप्त हुआ। वहीं निर्यात से 62,604 करोड़ रुपए की जीएसटी की प्राप्ति हुई।

वित्त मंत्रालय द्वारा मंगलवार को जारी आंकड़ों के अनुसार अगस्त में सरकार ने 31,795 करोड़ रुपए की जीएसटी रिफंड दिया जो एक साल पहले के मुकाबले 67.9 प्रतिशत अधिक है। इस प्रकार शुद्ध जीएसटी संग्रह 8.3 फीसदी की वृद्धि के साथ 1,68,057 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। इसमें घरेलू जीएसटी से प्राप्त शुद्ध राजस्व 3.4 प्रतिशत की बढ़कर 1,18,759 करोड़ रुपए दर्ज किया गया। वहीं, सीमा शुल्क से शुद्ध प्राप्ति 49,299 करोड़ रुपए हो गया। चालू वित्त वर्ष से पहले पांच महीने में सकल जीएसटी संग्रह सालाना आधार पर 11 प्रतिशत ऊपर रहा। यह 10,42,757 करोड़ रुपए दर्ज किया गया। इसमें 1,53,234 करोड़ रुपए का रिफंड निकालने के बाद शुद्ध जीएसटी संग्रह 8,89,523 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। रिफंड में 30.4 प्रतिशत और शुद्ध संकलन में नौ प्रतिशत का इजाफा हुआ है।

भारत में फ़ीचर फ़ोन यूज़र्स के लिए फोनपे ने यूपीआई पेमेंट लॉन्च किया

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। फोनपे ने आज ' फोनपे यूपीआई 123 पे ' लॉन्च करने की घोषणा की है, जिससे बिना इंटरनेट कनेक्शन के भी पूरे भारत में फीचर फोन (कीपैड वाले बेसिक फोन) यूजर्स के लिए यूपीआई पेमेंट की सुविधा उपलब्ध हो गई है। इसके साथ ही, फोनपे भारत के 200 मिलियन+ कीपैड फोन यूजर्स के लिए यूपीआई पेमेंट की सुविधा देने वाला पहला प्रमुख थर्ड-पार्टी एप्लिकेशन प्रोवाइडर (टीपीएपी) बन गया है। यह कदम वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने और अब तक डिजिटल सुविधाओं से दूर रहे समुदायों को डिजिटल पेमेंट से जोड़ने की दिशा में एक बड़ी पहल है। लॉन्च के अवसर पर बोलते हुए फोनपे के फाउंडर और सीईओ, समीर निगम जी ने कहा कि- 'पिछले एक दशक में, यूपीआई ने भारत के पेमेंट करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है- फोनपे को इस बदलाव का शुरुआत से ही हिस्सा बनने पर गर्व है। आज जब हम अपने अब तक के सफ़र पर नज़र डालते हैं, तो हमारा अगला कदम अपनी सफलताओं को आगे बढ़ाना, अपने दायरे का विस्तार करना और भविष्य की नई संभावनाओं को तलाशना है। फोनपे यूपीआई 123 पे के माध्यम से फीचर फोन पर यूपीआई सुविधा लाना, डिजिटल पेमेंट के बेनिफिट्स को स्मार्टफोन से आगे बढ़ाकर देश के हर कोने तक पहुँचाता है। हमारे लिए, वास्तव में भारत के लिए निर्माण का अर्थ है- लोगों तक उनकी अपनी भाषा और ज़रूरतों के अनुसार सुविधा उपलब्ध कराना।

सरकार ने घटाई चीनी के स्टॉक की लिमिट

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। त्योहारी सीजन में केंद्र सरकार ने जमाखोरी रोकने और बाजार में पर्याप्त मात्रा में चीनी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए मंगलवार को व्यापारियों के लिए चीनी के स्टॉक की लिमिट को 4,000 क्विंटल से घटाकर 2,000 क्विंटल कर दिया। यह नई सीमा 15 सितंबर से 30 नवंबर तक के लिए लागू रहेगी। मौजूदा समय में अभी, देश भर में चीनी व्यापारियों के लिए स्टॉक रखने की सीमा 4,000 क्विंटल है, जो 1 अगस्त, 2026 से लागू हुई थी।

उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय के अनुसार, सरकार ने अब स्टॉक रखने की सीमा को घटाकर 2,000 क्विंटल कर दिया है। नई समय-सीमा के तहत, कोई भी चीनी



व्यापारी स्टॉक मिलने की तारीख से 30 दिनों से ज्यादा समय तक स्टॉक नहीं रखेगा और देश में किसी भी जगह या किसी भी समय 2,000 क्विंटल से ज्यादा चीनी स्टॉक में नहीं रखेगा।

हालांकि, इलाके की खास बाजार जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, कोलकाता और उसके आस-पास के मेट्रोपॉलिटन इलाकों के लिए स्टॉक रखने की सीमा 4,000 क्विंटल ही रहेगी। बयान में आगे कहा गया, 'इस कदम का मकसद जमाखोरी पर और रोक लगाना,

■ 15 सितम्बर से 30 नवम्बर तक रहेगी प्रभावी

सट्टेबाजी वाले व्यापार को हतोत्साहित करना और चीनी के स्टॉक को बहुत ज्यादा जमा होने से रोकना है। इससे सप्लाई चेन में चीनी की आवाजाही सुचारू रूप से हो सकेगी और उपभोक्ताओं को उचित कीमतों पर इसकी लगातार उपलब्धता सुनिश्चित होगी।

बयान में यह भी कहा गया कि कोलकाता इलाका उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र से चीनी मंगाता है और देश के पूर्वी हिस्से, जिसमें उत्तर-पूर्वी क्षेत्र भी शामिल है, में इसकी आपूर्ति करता है। इस कारण कोलकाता और उसके आस-पास के मेट्रोपॉलिटन इलाकों के लिए 4,000 क्विंटल की मौजूदा सीमा को बरकरार रखा गया है।

सार संक्षेप

रिलायंस कंज्यूमर ने रखा आइसक्रीम बाजार में कदम

नई दिल्ली। रिलायंस समूह की एफएमसीजी कंपनी रिलायंस कंज्यूमर प्रोडक्ट्स (आरसीपीएल) ने आइसक्रीम बाजार में उतरने की घोषणा की है। कंपनी ने बॉम्बे क्रीमरी नाम से नया ब्रांड लॉन्च किया है। इसकी कीमत 10 रुपये से शुरू होगी। कंपनी ने मंगलवार को बताया कि बॉम्बे क्रीमरी की आइसक्रीम वास्तविक डेयरी क्रीम से बनायी जाएगी। कंपनी ने इसे कोन, कप, टब, बार और स्टिक जैसे अलग-अलग फॉर्मेट में उतारा है। फिलहाल इसकी बिक्री पश्चिम भारत में शुरू की जा रही है और जल्द ही इसे पूरे देश में उपलब्ध कराने की योजना है। आरसीपीएल का कहना है कि वह बॉम्बे क्रीमरी को किफायती कीमत पर प्रीमियम डेयरी अनुभव देने वाले ब्रांड के तौर पर पेश कर रही है। कंपनी अपने बड़े वितरण नेटवर्क, रिटेल पहुंच और उपभोक्ताओं के फीडबैक के सहारे इस श्रेणी में उतर रही है। आरसीपीएल के निदेशक टी. कृष्णकुमार ने कहा कि बॉम्बे क्रीमरी को इस सोच के साथ तैयार किया गया है कि आइसक्रीम में डेयरी की असली पहचान बनी रहे।

अकासा एयर की 'पेडे सेल', किराए में छूट

नई दिल्ली। नवोदित विमान सेवा कंपनी अकासा एयर ने 'पेडे सेल' की घोषणा की है जिसके तहत यात्रियों को मूल किराये में 20 प्रतिशत तक की छूट मिलेगी। एयरलाइंस ने मंगलवार को बताया कि ग्राहक 06 सितंबर की रात 11.59 बजे तक ऑफर के तहत बुकिंग करा सकेंगे। बुकिंग यात्रा से कम से कम सात दिन पहले करानी होगी। ऑफर के तहत ग्राहक घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों नेटवर्कों पर लाभ ले सकेंगे। साथ ही, सीट चयन पर भी छूट का लाभ उठा सकते हैं। ऑफर का लाभ लेने के लिए बुकिंग अकासा एयर की वेबसाइट और उसके मोबाइल ऐप के माध्यम से ही की जा सकती है। 'सेवर' और 'फ्लेक्सी' दोनों किरायों पर यह छूट दी जा रही है। बुकिंग कराते समय प्रोमो कोड 'पेडे' का इस्तेमाल करना होगा। ग्राहक इस ऑफर का लाभ वन-वे और राउंड-ट्रिप दोनों प्रकार की बुकिंग पर उठा सकते हैं।

ईएसजी स्कोर वाली यूटिलिटी कंपनी बनी अडाणी एनर्जी

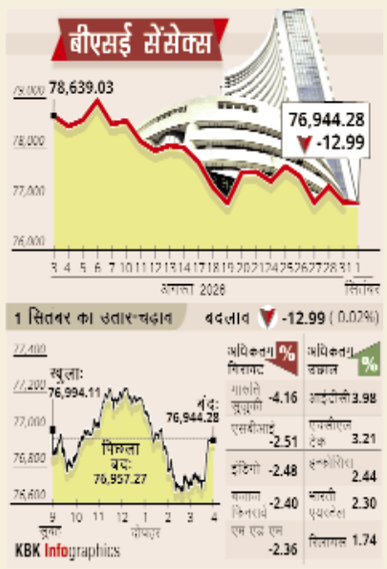
अहमदाबाद। अडाणी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड (एईएसएल) ने मंगलवार को ऐलान किया कि एसएंडपी ग्लोबल की हालिया समीक्षा के बाद उसे यूटिलिटीज क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर सबसे अधिक ईएसजी स्कोर वाली कंपनी होने का गौरव हासिल हुआ है। कंपनी ने कहा कि उसने एसएंडपी ग्लोबल की हालिया मीडिया एंड स्टेकहोल्डर एनालिसिस (एमएसए) समीक्षा पूरी होने के बाद शासन से संबंधित उस आकलन में सुधार किया गया, जिस पर पहले प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। इसके परिणामस्वरूप कंपनी की ईएसजी स्थिति में मजबूत सुधार हुआ है। भारत की सबसे बड़ी निजी ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी ने 100 में से 90 का ईएसजी स्कोर हासिल किया है और वह वैश्विक यूटिलिटीज क्षेत्र में शीर्ष स्थान पर पहुंच गई है।

बिकवाली के दबाव से शेयर बाजार में गिरावट

मुंबई, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। विदेशों से मिले नकारात्मक संकेतों के बीच घरेलू शेयर बाजारों में मंगलवार को बिकवाली का जोर रहा और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी-50 सूचकांक पांच सप्ताह के निचले स्तर पर बंद हुआ। प्रमुख सूचकांकों में दिन भर काफी उतार-चढ़ाव देखा गया। सेंसेक्स 37 अंक की तेजी में 76,994 अंक पर खुलने के बाद ऊपर 77,231 अंक और नीचे 76,656 अंक तक गया। अंत में 12.99 अंक (0.02 प्रतिशत) टूटकर 76,944.28 अंक पर बंद हुआ। यह 27 अगस्त के बाद का इसका निचला स्तर है। निफ्टी-50 का ग्राफ भी कमोबेश ऐसा ही रहा। कारोबार की समाप्ति पर सूचकांक 24.60 अंक यानी 0.10 प्रतिशत उतरकर 24,055.80 अंक पर रहा। यह 28 जुलाई के बाद का इसका निचला बंद स्तर है।

आईटीसी, रिलायंस इंडस्ट्रीज और भारती एयरटेल जैसी दिग्गज कंपनियों में लिवाली के दम पर दोनों प्रमुख सूचकांक बड़ी गिरावट से बचे रहे। वहीं, वृहत बाजार में बिकवाली का दबाव ज्यादा रहा। निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक 1.31 प्रतिशत और स्मॉलकैप-100 सूचकांक 0.23 प्रतिशत टूट गया।

वैश्विक स्तर पर लगभग सभी प्रमुख शेयर बाजार लाल निशान में रहे। जापान तथा कई



अन्य देशों में बॉन्ड पर मिलने वाला रिटर्न तेजी से बढ़ने से शेयर बाजार दबाव में हैं। घरेलू स्तर पर सेक्टर आधारित सूचकांकों में आईटी, एफएमसीजी, तेल एवं गैस और मीडिया में तेजी रही। बैंकिंग, वित्त, ऑटो, फार्मा, स्वास्थ्य और टिकाऊ उपभोक्ता उत्पाद समूहों में बिकवाली हावी रही। एनएसई में जिन 3,649 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ उनमें 2,194 के शेयर

■ सेंसेक्स 0.02 प्रतिशत टूटकर 76,944.28 अंक पर रहा
■ निफ्टी 0.10 प्रतिशत उतरकर 24,055.80 अंक पर रहा

लाल निशान में और 1,344 के हरे निशान में रहे। अन्य 111 कंपनियों के शेयर अंतत: अपरिवर्तित बंद हुए। सेंसेक्स की 30 कंपनियों में से 17 के शेयरों में गिरावट रही। मारुति सुजुकी का शेयर 4.16 प्रतिशत लुढ़क गया। भारतीय स्टेट बैंक का शेयर 2.51 प्रतिशत, इंडिगो का 2.48, बजाज फिनसर्व का 2.40 और महिंद्रा एंड महिंद्रा का 2.36 प्रतिशत नीचे बंद हुआ। आईटीसी में सबसे अधिक 3.98 प्रतिशत की तेजी देखी गई। एचसीएल टेक्नोलॉजीज का शेयर 3.21 प्रतिशत, इंफोसिस का 2.44 और भारती एयरटेल का 2.30 प्रतिशत चढ़ा। रिलायंस इंडस्ट्रीज का शेयर 1.74 प्रतिशत और कोटक महिंद्रा बैंक का 1.54 प्रतिशत मजबूत हुआ। अडानी पोर्ट्स, टेक महिंद्रा और एचडीएफसी बैंक के शेयर भी ऊपर रहे।

वैश्विक स्तर पर एशिया में हांगकांग का हैंग सेंग 0.93 फीसदी, चीन का शंघाई कंपोजिट 0.16 फीसदी और जापान का निक्केई 0.15 प्रतिशत टूट गया।

देश में अब पराली जलाने की समस्या हो रही खत्म : गडकरी

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने मंगलवार को दिल्ली विधानसभा के पहले स्पीकर चार्टी लाल गोयल की 99वीं जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण की चुनौतियों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि अब देश में पराली जलाने की समस्या खत्म हो रही है। इससे हम लोग इथेनॉल और बायो-सीएनजी बनवा रहे हैं, आने वाले दिनों में इसकी समस्या पूरी तरह से खत्म हो जाएगी।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि व्यक्ति कितने वर्षों तक जीवित रहा, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसने अपना जीवन किस तरह जिया और समाज के लिए क्या योगदान दिया। जन्म लेने वाले हर व्यक्ति की मृत्यु निश्चित है और यह एक सार्वभौमिक नियम है। किसी व्यक्ति का वास्तविक मूल्यांकन उसके जीवन की अवधि से नहीं, बल्कि इस बात से होता है कि उसने अपने जीवन को किस उद्देश्य और तरीके से जिया।



■ पराली से बन रहा इथेनॉल व बायो-सीएनजी

कार्यक्रम में उन्होंने उस स्थान के बदलाव की भी सराहना की, जहां पहले कबाड़ का ढेर हुआ करता था और अब उसे एक सुंदर बगीचे में बदल दिया गया है। उन्होंने इसे कबाड़खाने के कायाकल्प का उदाहरण बताते हुए कहा कि इस तरह के बदलाव समाज और पर्यावरण, दोनों के लिए सकारात्मक हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से वह पारिस्थितिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में बड़े स्तर पर काम कर रहे हैं।

10 कृषि उत्पादों के लिए जीआई टैग प्राप्त करने की कोशिश करेगी तमिलनाडु सरकार

चेन्नई, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। तमिलनाडु के कृषि मंत्री आर विनोद ने बताया कि राज्य सरकार अपने अनूठे गुणों और राज्य के विशिष्ट क्षेत्रों से मजबूत संबंधों के लिए जाने जाने वाले 10 कृषि उत्पादों के लिए भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग प्राप्त करने की मांग करेगी। जीआई पंजीकरण के लिए चुने गए उत्पाद कांचीपुरम परिमिलागई, नागापट्टिनम से पोय्यूर कथिरी, चिदंबरम ब्लैक ग्राम, करुमांदुरई कडुक्कई, थिरुवैयारु इलाई वाज़हाई, एरैयुर करुनाई किलांगु, कुड्डालोर वेट्टीवर, मनाप्पराई बैंगन, ऊटी लहसुन और जव्वधु पेई तिल हैं।

विनोद ने कहा कि सरकार जीआई मान्यता प्राप्त करने के लिए आवश्यक दस्तावेजीकरण, अनुसंधान और अन्य प्रक्रियाओं को पूरा करने के लिए 30 लाख रुपए आवंटित करेगी। इस पहल का उद्देश्य इन पारंपरिक उत्पादों की पहचान की रक्षा करना, बाजार में उनकी दृश्यता में सुधार करना और उत्पादकों को बेहतर कीमतें प्राप्त करने में मदद करना है।



जीआई टैग किसी उत्पाद को एक विशेष भौगोलिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले उत्पाद के रूप में पहचानता है और उस स्थान से जुड़ी विशेष विशेषताओं, प्रतिष्ठा या उत्पादन विधियों को मान्यता देता है। प्रस्तावित पंजीकरणों से उत्पाद नामों के दुरुपयोग को रोकने और स्थानीय किसानों और उत्पादक समूहों के लिए ब्रांडिंग के अवसरों को मजबूत करने की उम्मीद है। मंत्री ने सात जिलों में कुल 11.64 करोड़ रुपए की लागत से नौ बीज भंडारण गोदामों के निर्माण की भी घोषणा की। इन सुविधाओं का उद्देश्य किसानों से प्राप्त बीजों की गुणवत्ता, अंकुरण क्षमता और उर्वरता को संरक्षित करना है।

रेलवे ने ट्रैक पर 'कवच' सिस्टम की तैनाती के लिए मंजूर किए 170 करोड़ रुपए

नई दिल्ली, 1 सितम्बर (एजेंसियां)। भारतीय रेलवे ने कवच 4.0 सिस्टम की तैनाती के लिए 170 करोड़ रुपए को मंजूरी दी है। इसके तहत उत्तरी रेलवे के मुरादाबाद डिवीजन के 712 रूट किलोमीटर के बाकी बचे हिस्सों पर कचव सिस्टम लगाया जाएगा। यह जानकारी सरकार की ओर से मंगलवार को दी गई। रेल मंत्रालय के बयान के अनुसार, मंजूर की गई राशि से स्वदेशी 'ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन सिस्टम' लगाकर डिवीजन के सुरक्षा इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया जाएगा। मंत्रालय ने कहा कि 'कवच 4.0' को लागू करने से चिन्हित सेक्शन में ट्रेन संचालन के लिए सुरक्षा की एक एडवांस्ड लेयर मिलेगी।

'कवच' देश में ही विकसित एक ऑटोमैटिक ट्रेन प्रोटेक्शन (एटीपी) सिस्टम है, जिसे ऑपरेशनल सुरक्षा बढ़ाने के लिए बनाया गया है। यह 'सिग्नल पासिंग एट डेंजर' (एसपीएडी) को रोकने में मदद करता है, असुरक्षित स्थितियों से बचने के लिए जरूरत



पड़ने पर अपने-आप ब्रेक लगाता है, मुश्किल हालात में ट्रेन की स्पीड को कंट्रोल करता है और ट्रेनों की टक्कर का खतरा काफी कम करता है।

बयान में कहा गया है, 'यह पहल भारतीय रेलवे की उस लगातार कोशिश का हिस्सा है जिसके तहत वह अपने नेटवर्क पर 'कवच' का दायरा बढ़ा रही है और रेलवे सिग्नलिंग व ट्रेन प्रोटेक्शन सिस्टम को आधुनिक बना रही है।

मंत्रालय ने जुलाई में बताया था कि भारतीय रेलवे में सुरक्षा में काफी सुधार हुआ है। ट्रेन दुर्घटनाओं की संख्या 2014-15 में 135 से घटकर 2025-26 में 16 रह गई है और चालू

■ 'सिग्नल पासिंग एट डेंजर' को रोकने में मदद करता है 'कवच'
■ मुश्किल हालात में ट्रेन की स्पीड को भी कंट्रोल करता है 'कवच'

वर्ष में जून तक केवल दो दुर्घटनाएं हुई हैं।

'कॉन्सिक्वेंशियल एक्सीडेंट इंडेक्स' (यानी प्रति मिलियन ट्रेन-किलोमीटर होने वाली दुर्घटनाएं) 2014-15 में 0.11 से घटकर 2025-26 में 0.01 हो गया है, जो लगभग 91 प्रतिशत की कमी को दर्शाता है।

सुरक्षा से जुड़े कामों पर खर्च लगातार बढ़ा है, यह 2013-14 में 39,200 करोड़ रुपए से बढ़कर 2026-27 में 1,20,389 करोड़ रुपए हो गया है। 6,671 स्टेशनों पर सेंट्रलाइज्ड ऑपरेशन वाले इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग सिस्टम लगाए गए हैं और इन सभी स्टेशनों पर पूरा ट्रैक सर्किटिंग सिस्टम भी लगाया गया है।

भारतीय मतदाता संसद

भारतीय मतदाताओं का अपना संसद

जनसभा

जनसभा ही क्यों ?

जब दो बिभिन्न विचारधारा की राजनीतिक पार्टी गठबन्धन कर सरकार बना सकती हैं।
तो फिर मतदाता भी भी ऐसा क्यों नहीं कर सकता ?

करके देखें ! ऐसा करने से अच्छे जनप्रतिनिधि को भी अवसर मिलेगा ! मुठितन्त्र वाली सरकार से जनप्रतिनिधि आजाद होगा ! जनप्रतिनिधि मुठितन्त्र के लिए नही लोकतंत्र के लिए होगा ! तब बदलेगा भारत

अब भारतीय मतदाता हारेगा नही, कियोंकि अपने जनसभा संसद में बैठकर अपनी और दूसरे का विचारधारा बदलेगा, फिर एक विचारधारा बनाएगा

वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था और जनसभा राजनीतिक व्यवस्था में अंतर

वर्तमान व्यवस्था

• किसी विशेष राजनितिक पार्टी या समर्थक के रूप में मतदाता को संगठित किया जाता है। जिस कारण मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प नहीं रहता इसीलिये लोकतंत्र लोकतंत्र न रहकर मुट्ठितंत्र बन जाता है।

• अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार किसी विशेष पार्टी या राजनितिक के कार्यकर्ता या समर्थक के रूप में करता है जिस कारण अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव महत्व नहीं रखता।

• भारतीय लोकतंत्र में जनता राजा है पर आज जनता नहीं कुछ मुट्ठी भर लोग राज कर रहे हैं।

• मुट्ठी भर लोग राज करने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार कम हुआ।

• जनप्रतिनधि बनने के इच्छुक चुनाव के समय ही अपनी कुशलता केवल प्रचार के माध्यम से करता है। जिसमें अधिक रुपया खर्चा करना पड़ता है।

• राजनीति में धन-बल का प्रयोग ज्यादा होता है, जिससे विकास और एक समान मूल अधिकार में बाधा उत्पन होती है।

जनसभा व्यवस्था

• मतदाता मतदाता के रूप में संगठित रहेगा इसीलिये मतदाता को अपना बेहतर और अनुभवी जन प्रतिनिधि के रूप में चुनने का विकल्प रहेगा तब लोकतंत्र मुट्ठीतंत्र न बनकर लोकतंत्र रहेगा।

• अधिकतर मतदाता अपना मत का अधिकार अपने प्रतिनिधि की छवि या अनुभव के आधार पर मत का प्रयोग करेगा।

• भारतीय लोकतंत्र का जो सपना है मुट्ठी भर लोग राज नहीं आम जनता राज करे यह सपना साकार होगा।

• आम जनता का राज होने से जनता द्वारा चुने प्रतिनिधि का अधिकार बढ़ेगा।

• जनप्रतिनधि बनने के इच्छुक को अपनी कुशलता रुपया या प्रचार के माध्यम से नहीं जनता की अधिक समय सेवा कर दिखाने का अवसर मिलेगा।

• राजनीति में धन-बल का प्रयोग कम होगा जिससे सभी का विकास और एक समान मूल अधिकार सबको मिलेगा।

▫ करके देखें ▫ मुठितन्त्र से आजाद होगा हमारा जनप्रतिनिधि फिर ▫ भारत बदलेगा

आज ही शब्दवाणी समाचार के स्थाई पाठक बनकर भारतीय मतदाता का अपना संसद जनसभा के सदस्य बनें

शब्दवाणी समाचार विज्ञापन नहीं पाठकों को प्रमुख मानता है इसलिए औरों से अलग है

आज ही शब्दवाणी समाचार (हिंदी दैनिक) के स्थाई पाठक बनें, मात्र 300 रुपये मासिक पर

सम्मान के साथ मिलेगा बहुत कुछ, लेकर देखें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्कर करें

RNI. NO.DELHIN/2003/00049 हिन्दी दैनिक
शब्दवाणी समाचार
Website : Shabdawanisamachar.page
(नई सोच, नई उम्मीद, बेहतर भविष्य, बेहतर भारत)

अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम घोषित

सैमसन की वापसी तो रिंकू सिंह बाहर, वैभव को भी मिला मौका

● नई दिल्ली / (एजेंसी)



अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान हो गया है। 13 सितंबर से दोनों टीमों के बीच दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में तीन मैचों की सीरीज होगी। श्रेयस अय्यर की कप्तानी में 15 सदस्यीय टीम चुनी गई है। इसमें जसप्रीत बुमराह भी शामिल हैं। बुमराह ने इंग्लैंड दौरे के बाद कोई मैच नहीं खेला है। हालांकि फिटनेस टेस्ट पास करने के बाद ही वह खेल पाएंगे।

जिम्बाब्वे दौर पर टी20 टीम से बाहर रहे संजू सैमसन की वापसी हो गई है। संजू टी20 विश्व कप में भारत की जीत के हीरो थे। लेकिन आयरलैंड और इंग्लैंड में टी20 सीरीज के शुरुआती मैच में फेल होने के बाद उन्हें प्लेइंग इलेवन से ड्रॉप कर दिया गया था। उनकी जगह वैभव सूर्यवंशी को इंग्लैंड में प्लेइंग इलेवन में शामिल किया गया लेकिन वो भी फेल रहे। आखिरी मैच में संजू को खेलने का मौका मिला था। जिम्बाब्वे दौरे पर वैभव का बल्ला जमकर बोला और वह प्लेयर ऑफ द सीरीज भी थे। अफगानिस्तान के खिलाफ सीरीज के लिए वैभव को भी चुना गया है।

चार खिलाड़ियों को पास करना होगा फिटनेस टेस्ट

अफगानिस्तान सीरीज के लिए टीम इंडिया में चार ऐसे खिलाड़ी को जगह मिली है, जिनका फिटनेस टेस्ट बाकी है। इसमें नीतीश कुमार रेड्डी, जसप्रीत बुमराह, हर्षित राणा और वॉशिंगटन सुंदर वापसी है। सीरीज से पहले फिटनेस टेस्ट पास करने के बाद ही ये खिलाड़ी खेल पाएंगे। हर्षित और नीतीश भी लंबे समय से चोटिल हैं। सुंदर भी इंजरी की वजह से श्रीलंका दौरे पर नहीं जा पाए थे।

प्रिंस सहित 8 खिलाड़ियों को किया गया बाहर

जिम्बाब्वे दौरे पर टीम इंडिया का हिस्सा रहे रिंकू सिंह के साथ ही प्रिंस यादव, अशोक शर्मा, मयंक यादव, सुर्याश शेडगे, यश ठाकुर, प्रभसिमरन सिंह और हर्ष दुबे को ड्रॉप कर दिया गया है। उस दौरे पर यश ठाकुर और अशोक शर्मा ने भारत के लिए डेब्यू भी किया था। प्रिंस यादव जिम्बाब्वे दौरे पर चोटिल हो गए थे।

हार्दिक की भारतीय टीम में वापसी का इंतजार बढ़ा

हार्दिक पांड्या की भारतीय टीम में वापसी की राह में एक और रुकावट आ गई है। पैर में नई समस्या के कारण उनके अफगानिस्तान के खिलाफ होने वाली तीन मैचों की टी20 सीरीज से बाहर रहने का खतरा पैदा हो गया है।



एक रिपोर्ट के अनुसार पांड्या अपनी रिकवरी के दौरान सब कुछ सही कर रहे थे, लेकिन आखिरी समय में आई एक नई समस्या ने उनकी उपलब्धता पर फिर से संदेह पैदा कर दिया है। उम्मीद है कि चयनकर्ता इस हफ्ते नई दिल्ली में 13 सितंबर से शुरू होने वाली टी20 सीरीज के लिए टीम को अंतिम रूप देने के लिए बैठक करेंगे और उन्हें जल्द ही बेंगलुरु में मौजूद खिलाड़ियों की फिटनेस स्थिति के बारे में अपडेट मिलेगा। सूत्रों के मुताबिक हार्दिक पांड्या बिना किसी परेशानी के पूरी तीव्रता के साथ ट्रेनिंग कर रहे थे, लेकिन पैर में तकलीफ के कारण उन्हें बॉलिंग रोकने की सलाह दी गई है। वह जल्द ही फिर से शुरू करेंगे।

भारत की टीम: **श्रेयस अय्यर (कप्तान)**, अभिषेक शर्मा, वैभव सूर्यवंशी, संजू सैमसन (विकेटकीपर), ईशान किशन (विकेटकीपर), तिलक वर्मा (उपकप्तान), शिवम दुबे, नीतीश कुमार रेड्डी, अक्षर पटेल, वाशिंगटन सुंदर, वरुण चक्रवर्ती, रवि बिश्नोई, जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, हर्षित राणा

अफगानिस्तान की टीम: **इब्राहिम जादरान (कप्तान)**, रहमानुल्लाह गुरबाज (विकेटकीपर), सेदीकुल्लाह अटल, दरविश रसूली, अजमतुल्लाह उमरजई, गुलबदीन नायब, नूर रहमान, मोहम्मद नबी, राशिद खान, नांग्याल खरोती, मुजीब उर रहमान, नूर अहमद, फजलहक फारूकी, नवीन उल हक, अब्दुल्लाह अहमदजई। रिजर्व खिलाड़ी: शाहिदुल्लाह कमाल, फरीद अहमद मलिक, इजाज अहमदजई।

मिस्बाह उल हक ने चयनकर्ता पद से दिया इस्तीफा

इस्लामाबाद, (एजेंसी)



इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज गंवाने के बाद पाकिस्तान की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। पूर्व कप्तान मिस्बाह उल हक ने पाकिस्तान पुरुष चयन समिति पद से इस्तीफा देने की पेशकश कर दी है।

मिस्बाह ने यह कदम तब उठाया है जब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने टेस्ट टीम में और कोचिंग स्टाफ में बड़ा बदलाव किया है। पाकिस्तान को इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट मैचों में हार का सामना करना पड़ा था जिससे टीम तीन मैचों की सीरीज में 0-2 से पिछड़ गई है। पीसीबी ने सोमवार को अप्रत्याशित फैसला लेते हुए इंग्लैंड के खिलाफ तीसरे और अंतिम टेस्ट से पहले अपनी टेस्ट टीम के सात खिलाड़ियों को स्वदेश वापस बुला लिया और उनकी जगह सात नए खिलाड़ियों को टीम में शामिल किया था।

ईस्ट जोन ने दलीप ट्रॉफी के फाइनल में बनाई जगह

सेंट्रल जोन को चार विकेट से हराया

● नई दिल्ली / (एजेंसी)



दलीप ट्रॉफी के पहले सेमीफाइनल में ईस्ट जोन ने सेंट्रल जोन को चार विकेट से हराकर फाइनल में जगह बना ली है। सेंट्रल जोन की दूसरी पारी तीसरे दिन 158 रन पर ऑलआउट हुई जिससे ईस्ट जोन को जीत के लिए 159 रनों का लक्ष्य मिला। ईस्ट जोन ने दूसरी पारी में छह विकेट पर 162 रन बनाकर जीत दर्ज कर ली। ईस्ट जोन के लिए सलामी बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी ने सर्वाधिक रन बनाए।

वैभव ने दूसरी पारी में 40 रन बनाए, जबकि कप्तान ईशान किशन ने 41 गेंदों पर चार चौकों और एक छक्के की मदद से नाबाद 39 रन बनाए। इससे पहले, ईस्ट जोन और सेंट्रल जोन ने पहली पारी में एक समान 266 रन बनाए। लेकिन ईस्ट जोन ने दूसरी पारी में शानदार गेंदबाजी की और सेंट्रल जोन को बड़ा स्कोर बनाने से रोका। वैभव ने अभिमन्यू ईश्वरन के साथ मिलकर पारी की शुरुआत की। वैभव ने इस दौरान संभलकर खेलना शुरू किया।

ईशान किशन ने टीम को जीत तक पहुंचाया

सूर्यवंशी के आउट होते ही ईस्ट जोन की पारी पर जैसे सन्नाटा छा गया। इसके बाद टीम नियमित अंतराल पर विकेट गंवाने लगी और लक्ष्य का पीछा अचानक मुश्किल नजर आने लगा। बाएं हाथ के स्पिनर हर्ष दुबे ने लगातार गेंदों पर कुमार कुशाग्र और अनुकूल रॉय को आउट कर स्कोर पांच विकेट पर 124 रन कर दिया।

उन्होंने आठवें ओवर की पहली गेंद पर आर्यन पांडे को छक्का जड़ा। बंगलूरू के बीसीसीआई सेंटर ऑफ

शमी-मुकेश का दमदार प्रदर्शन

इससे पहले, मध्य क्षेत्र ने अपनी दूसरी पारी तीन विकेट पर 45 रन से आगे बढ़ाई, लेकिन टीम ने पहले सत्र में ही अपने बाकी सात विकेट गंवा दिए। नौवां विकेट गिरने के बाद सत्र को 30 मिनट के लिए बढ़ाया गया था। शमी ने (56 रन पर तीन विकेट) और मुकेश (44 रन पर चार विकेट) हासिल किए।

एक्सीलेंस में खेले गए इस मुकाबले में ईस्ट जोन के सलामी बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी का दम दिखा।

उन्नति को चीन मास्टर्स के पहले दौर में मिली शिकस्त

● शेनजेन / (एजेंसी)



उन्नति हुड्डा चीन मास्टर्स सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट में मंगलवार को महिला एकल के पहले दौर की चुनौती पार करने में विफल रहीं, जबकि पुरुष युगल में हरिहरन अम्साकरुणन और एमआर अर्जुन की जोड़ी ने अपने शुरुआती दौर के मुकाबले में पहले गेम के दौरान ही मैच से हटने का फैसला किया।

विश्व रैंकिंग में 25वें स्थान पर काबिज उन्नति को पहले दौर में दक्षिण कोरिया की 12वीं रैंकिंग वाली किम गा-यून के हाथों 10-21, 18-21 से शिकस्त झेलनी पड़ी। हरिहरन और अर्जुन की जोड़ी पहले गेम में चीन के चेन बो यांग और लियू यी के खिलाफ 8-11 से पीछे चल रही थी तभी उन्होंने मुकाबले से हटने का फैसला किया। उनके मैच से हटने की वजह तत्काल स्पष्ट नहीं हो सकी, लेकिन माना जा रहा है कि यह फिटनेस से जुड़ी हो सकती है। उन्नति पहले गेम में लय में नजर नहीं आईं। किम ने 4-0 की बढ़त के साथ शुरुआत की और देखते ही देखते स्कोर 11-3 कर दिया। इसके बाद उन्होंने पहला गेम आसानी से अपने नाम कर लिया। भारतीय खिलाड़ी ने दूसरे गेम में बेहतर संघर्ष दिखाया। शुरुआत से ही वह मुकाबले में बनी रहीं और 8-7 तथा 14-13 की मामूली बढ़त भी हासिल की। इसके बाद स्कोर 18-18 से बराबर हो गया। किम ने हालांकि फिर से नियंत्रण हासिल किया और लगातार तीन अंक जुटाकर मुकाबला समाप्त कर दिया। भारतीय खिलाड़ियों से जुड़े सात मुकाबले बुधवार को खेले जाने हैं, जिनमें देश के शीर्ष खिलाड़ी लक्ष्य सेन और किदांबी श्रीकांत भी अपने अभियान का आगाज करेंगे।

स्पोर्ट्स ब्रीफ

स्टोक्स बने बिग बैश लीग के सबसे महंगे खिलाड़ी

लंदन / राज न्यूज नेटवर्क। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान बेन स्टोक्स ने बिग बैश लीग (बीबीएल) में धमाकेदार वापसी की है। स्टोक्स को एडिलेड स्ट्राइकर्स ने 2026-27 सीजन के लिए साइन किया है। इसके साथ ही वह बीबीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए हैं। स्टोक्स पूरे सीजन के लिए उपलब्ध रहेंगे। यह बीबीएल में उनकी दूसरी एंट्री होगी। वह इससे पहले 2014-15 सीजन में मेलबर्न रेनेगेड्स की ओर से खेले थे। तब उन्होंने चार मुकाबलों में हिस्सा लिया था। लीग ने दोबारा डायरेक्ट-साइनिंग मॉडलअपनाया है, जिससे फ्रेंचाइजियों को खिलाड़ियों पर अपना पैसा खर्च करने की ज्यादा आजादी मिली है। स्टोक्स का बीबीएल से रिश्ता काफी पुराना है। उन्होंने आखिरी बार 2014-15 सीजन में मेलबर्न रेनेगेड्स के लिए चार मैच खेले थे। अब करीब 12 साल बाद वह बिग बैश में वापसी करेंगे। स्ट्राइकर्स के लिए स्टोक्स का पहला मुकाबला 16 दिसंबर को सिडनी थंडर के खिलाफ कैनबरा में होगा। एक रिपोर्ट के मुताबिक उनकी डील साढ़े तीन करोड़ रुपए के आस-पास है, जो ड्राफ्ट के प्लैटिनम लेवल पर पिछले सबसे ऊंचे बैंड (2 करोड़ 84 लाख) से काफी ज्यादा है।



शार्दुल ठाकुर मुंबई की कप्तानी से हटाए गए

मुंबई, आरएनएन। अनुभवी बल्लेबाज सिद्धेश लाड को अगले रणजी ट्रॉफी सीरीज के लिए शार्दुल ठाकुर की जगह मुंबई का कप्तान बनाया गया है। वहीं सीमित ओवरों के घरेलू टूर्नामेंटों में श्रेयस अय्यर या सूर्यकुमार यादव में से किसी एक को टीम की कप्तानी सौंपी जा सकती है। यह फैसला दोनों खिलाड़ियों की उपलब्धता पर निर्भर करेगा। शार्दुल को वर्कलोड मैनेजमेंट के तहत कप्तानी से हटाया गया है। उनकी कप्तानी में 42 बार की रणजी ट्रॉफी विजेता मुंबई की टीम पिछले सीजन क्वार्टर फाइनल में कर्नाटक से हार कर बाहर हो गई थी। मुंबई टीम प्रबंधन का लक्ष्य शार्दुल ठाकुर को लाल गेंद वाली टीम के प्रमुख गेंदबाज के रूप में अधिकतम प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करना है। शार्दुल ने मुश्किल परिस्थितियों में बल्ले से भी टीम के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मुंबई लगातार दूसरे सत्र में नए कप्तान की अगुवाई में रणजी ट्रॉफी में उतरेगी। 2025-26 सत्र से पहले ठाकुर ने अजिंक्य रहाणे की जगह टीम की कमान संभाली थी। सभी प्रारूपों से इस साल जुलाई में संन्यास लेने वाले रहाणे ने 2023-24 सत्र में मुंबई को रिकॉर्ड 42वां रणजी ट्रॉफी खिताब दिलाया था। फाइनल में मुंबई ने विदर्भ को हराकर खिताब अपने नाम किया था।



न्यूजीलैंड में टेस्ट सीरीज से पूर्व 4 दिवसीय मैच खेलेगा भारत

एनजेडसी ने दी भारत-ए टीम की मेजबानी की जानकारी

● नई दिल्ली / (एजेंसी)



न्यूजीलैंड और भारत के बीच होने वाली दो मैचों की टेस्ट सीरीज से पहले भारत ए और न्यूजीलैंड ए के बीच अक्टूबर में चार दिवसीय तैयारी मैच खेले जाएंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट (एनजेडसी) ने मंगलवार को पुष्टि की है कि वह भारत-ए टीम की मेजबानी करेगा।

भारत अक्टूबर के आखिर से दिसंबर की शुरुआत तक न्यूजीलैंड के दौरे पर रहेगा, जिसमें पांच टी20, पांच वनडे और दो टेस्ट मैच खेले जाएंगे। एनजेडसी ने प्लंकेट शील्ड का शेड्यूल जारी करते हुए बताया कि इस दौरे में इंडिया ए के खिलाफ तीन चार-दिवसीय मैच भी शामिल होंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने एक बयान में कहा, घरेलू लाल गेंद सत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर का रोमांच भी देखने को मिलेगा, क्योंकि न्यूजीलैंड ए क्राइस्टचर्च में भारत ए के साथ तीन चार दिवसीय मैच खेलेगा, जो 24 अक्टूबर से शुरू होंगे। इसके साथ ही बोर्ड ने घरेलू प्रथम श्रेणी टूर्नामेंट की भी घोषणा की, जो 19 नवंबर से शुरू होकर 29 मार्च तक चलेगा।

भारत का न्यूजीलैंड दौरा

पहला टी20 मैच:	22 अक्टूबर (क्राइस्टचर्च)
दूसरा टी20 मैच:	24 अक्टूबर (क्राइस्टचर्च)
तीसरा टी20 मैच:	27 अक्टूबर (वेलिंगटन)
चौथा टी20 मैच:	30 अक्टूबर (ऑकलैंड)
पांचवां टी20 मैच:	1 नवंबर (हैमिल्टन)
पहला वनडे मैच:	4 नवंबर (ऑकलैंड)
दूसरा वनडे मैच:	7 नवंबर (वेलिंगटन)
तीसरा वनडे मैच:	10 नवंबर (हैमिल्टन)
चौथा वनडे मैच:	13 नवंबर (माउंट माउंगानुई)
पांचवां वनडे मैच:	15 नवंबर (माउंट माउंगानुई)
पहला टेस्ट मैच:	19-23 नवंबर (वेलिंगटन)
दूसरा टेस्ट मैच:	27 नवंबर-1 दिसंबर (क्राइस्टचर्च)

दक्षिण अफ्रीका ने जिम्बाब्वे को हराया

● विंडहोक / (एजेंसी)



दक्षिण अफ्रीका ने ट्राई सीरीज में लगातार दूसरी जीत हासिल कर ली है। पहले मैच में नामीबिया से हारने वाली दक्षिण अफ्रीका ने जिम्बाब्वे के खिलाफ अपने टूर्नामेंट के तीसरे मैच को 43 रनों से जीता। विंहडोक के नामीबिया क्रिकेट ग्राउंड पर पहले खेलते हुए दक्षिण अफ्रीका ने 7 विकेट पर 185 रन बनाए। जिम्बाब्वे की टीम ने पूरा जोर लगाया लेकिन टीम की पारी 18वें ओवर में 142 रनों पर ही सिमट गई। तीन मैचों में यह जिम्बाब्वे की दूसरी हार है। इससे पहले दक्षिण अफ्रीका ने ही उसे 7 विकेट से हराया था। दक्षिण अफ्रीका के लिए सलामी

लुआन-ड्रे प्रिटोरियस शतक से चूके

बल्लेबाज लुआन-ड्रे प्रिटोरियस ने विस्फोटक बैटिंग की। उन्होंने सिर्फ 51 गेंदों पर 94 रनों की पारी खेली। 20 साल के प्रिटोरियस ने 12 चौके और तीन छक्के मारे। पहले विकेट के लिए जॉर्डन हेर्मन के साथ उन्होंने 46 गेंद पर 68 रन जोड़े। जॉर्डन ने 25 गेंद पर 28 रन बनाए। तीसरे नंबर पर उतरे डेवाल्ड ब्रेविस के बल्ले से 27 गेंद पर 41 रन निकले। दूसरे विकेट के लिए दोनों ने 46 गेंद पर 86 रनों की साझेदारी की।

मास्टर्स हॉकी कप में भोपाल की दो टीमें भी दिखाएंगी दम

● भोपाल / खेल संवाददाता



एडवेंचर एंड मास्टर स्पोर्ट्स फेडरेशन द्वारा आयोजित मास्टर्स हॉकी कप-2026 का आयोजन 2 से 5 सितंबर तक नई दिल्ली के शिवाजी स्टेडियम में किया जाएगा। प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए एमटीएफसी भोपाल की 40+ और 50+ आयु वर्ग की दो टीमें भाग लेंगी। भोपाल की टीमों का नेतृत्व कप्तान असद कमाल और अमजद खान करेंगे। शमशेर खान टीम के कोच तथा मुजीब उल गनी प्रबंधक हैं। टीम में समीर दाद, अमजद खान, असद कमाल, मेहराज उद्दीन, हसरत कुरैशी, अफसर अली खान, वसीम यार, मोहम्मद महबूब, अंसार उद्दीन, मुमताज उद्दीन, मोहम्मद नाईम, एम.एल. काटारे, खालिद यार, बाबर खान, आफताब उद्दीन, इमरान अहमद, शादाब खान और फैजान उल हक शामिल हैं।

भारत दौरे के लिए ऑस्ट्रेलिया-ए टीम घोषित

नई दिल्ली, आरएनएन। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने भारत-ए के खिलाफ होने वाली दो चार दिवसीय और तीन वनडे मैचों की सीरीज के लिए ऑस्ट्रेलिया-ए टीम की घोषणा कर दी है। पीटर हैंड्सकॉम्ब और सैम कोंस्टास को ऑस्ट्रेलिया ए टीम में जगह मिली है। इससे उनके टेस्ट करियर को एक और मौका मिल सकता है। टीम में ब्रेंडन डॉगेट और झाई रिचर्डसन भी हैं। ऑस्ट्रेलिया ए इस महीने के आखिर में दौरे के चार दिवसीय मैचों के लिए पुडुचेरी जाएगी, जिसके बाद तीन 50-ओवर के मैच होंगे।

पाक महिला टीम ने थाईलैंड को 35 रन से रौंदा

एशिया कप में पाकिस्तान की जीत के साथ शुरुआत

● दुबई / (एजेंसी)



पाकिस्तान की महिला टीम ने जीत के साथ एशिया कप 2026 की शुरुआत की है। टूर्नामेंट के 5वें मैच में पाकिस्तान का सामना थाईलैंड से हुआ। दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में पाकिस्तान ने पहले बैटिंग की। टीम 20 ओवर खेलने के बाद 9 विकेट पर सिर्फ 119 रन बना पाई। हालांकि थाईलैंड की कमजोर बैटिंग इस लक्ष्य का भी पीछा नहीं कर पाई। 20 ओवर खेलने के बाद थाईलैंड ने 8 विकेट पर 84 रन ही बनाए। पाकिस्तान को 35 रनों से जीत मिली। थाईलैंड के तीन मैचों के बाद दो पॉइंट हैं। थाईलैंड की बॉलिंग के सामने पाकिस्तान की बैटिंग काफी स्ट्रगल करती दिखी। टीम ने पावरप्ले में ही तीन विकेट खो दिए। सलामी बल्लेबाज शवाल जुल्फिकार सिर्फ एक रन बना पाई तो तीसरे नंबर पर उतरीं गुल फेरोजा का खाता भी नहीं खुला।

मुनीबा अली ने ठोकी फिफ्टी

पाकिस्तान के लिए ओपनर मुनीबा अली ने इस बीच अपनी फिफ्टी पूरी की। 52 गेंद पर 54 रनों की पारी खेलकर वह पवेलियन लौटीं।

राजधानी (न्यू बॉम्बे)

दिन	रात
340 = 7	170 = 8
588 = 1	560 = 1

शुभांक

दिन	रात
190 = 0	150 = 6
249 = 5	189 = 8

भाग्यांक

2 6 8 0

www.kalyangame.com

करिश्मा कुदरत का — केरल के एलन जेम्स के वीडियो को पिछले 24 घंटे में करोड़ों लोगों ने देखा

लामिन यमाल के हमशक्ल एलन बटोर रहें सुर्खियां

● कोल्लम / (एजेंसी)



केरल के कोल्लम जिले के चक्कुवल्ली में इन दिनों बार्सिलोना स्टार लामिन यमाल के नाम की खूब चर्चा है। ऐसा नहीं है कि बार्सिलोना का यह स्टार भारत के दौर पर है, बल्कि इसके पीछे 10वीं के छात्र एलन जेम्स हैं जो बिल्कुल यमाल की तरह दिखते हैं। एलन जेम्स से मिलने के लिए उनके घर के बाहर लोगों का तांता लगा रहा है। इतना ही नहीं फुटबॉल खेलने वाले एलन के वीडियो को पिछले 24 घंटे में लाखों-करोड़ों लोग देख चुके हैं। जब भी एलन स्पेन की जर्सी में अपने लोकल मैदान में खेलने उतरते हैं, स्थानीय लोगों में एक अजब तरह का उत्साह भर जाता है। एलन की लाइफ में सबकुछ नॉर्मल था, लेकिन तभी तक जब उनका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल नहीं हुआ था। एलन का वीडियो उनके ब्लॉक पंचायत सदस्य और व्लॉगर निखिल मनोहर ने बनाया। सोशल मीडिया पर इस वीडियो के सामने आते ही इसने सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। जेम्स का यमाल की तरह स्पेन की जर्सी पहने हुए वीडियो ऑनलाइन वायरल हो गए, जिससे यह वह रातोंरात स्टार बन गए।

मेसी के फैन हैं एलन जेम्स

एलन भले ही यमाल की तरह दिखते हैं, लेकिन वह अर्जेंटीना के स्टार लियोनेल मेसी के फैन हैं। इस वीडियो के वायरल होने के बाद एलन ने बताया कि कैसे उनकी लाइफ में बदलाव आया है। काफी समय से लोग मुझसे कहते आ रहे हैं कि मैं यमाल जैसा दिखता हूं, लेकिन मैंने कभी इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। विश्व कप के दौरान अचानक लोग मुझे पहचानने लगे। वीडियो वायरल होने के बाद मेरी जिंदगी बदल गई।

टीमें होटल की अपना व्यवस्था करने के लिए स्वतंत्र: जेसीए

● नई दिल्ली (एजेंसी)

जापान क्रिकेट संघ (जेसीए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नाओकी एलेक्स मियाजी ने कहा कि एशियाई खेलों में भाग लेने वाली टीमों को होटल में ठहरने की सुविधा की पेशकश की गई है, लेकिन वे चाहें तो अपने स्तर पर भी ठहरने की व्यवस्था कर सकती हैं। कई प्रमुख क्रिकेट देशों ने महाद्वीपीय खेलों के दौरान उपलब्ध कराए जा रहे आवास को लेकर चिंता जताई थी। हाल ही में एशियाई क्रिकेट परिषद (एसीसी) की बैठक में प्रमुख क्रिकेट देशों ने आवास समेत विभिन्न लॉजिस्टिक मुद्दों पर अपनी आशंकाएं व्यक्त की थीं। बताया गया था कि खिलाड़ियों के लिए ठहरने की व्यवस्था आइची प्रांत के निसिन शहर स्थित कोरोगी स्पोर्ट्स पार्क से करीब 20 किलोमीटर दूर की गई है।



विदेशी डिग्री का क्रेज भारतीय छात्रों में बढ़ता ही जा रहा है। यूनेस्को की रिपोर्ट बताती है कि भारत ऐसा दूसरा देश है, जहां से सबसे ज्यादा छात्र पढ़ाई के लिए विदेश का रुख करते हैं। यह संख्या करीब साढ़े चार से पांच लाख के आसपास ठहरती है। लेकिन विदेश में पढ़ने का सपना तभी पूरा हो पाता है, जब छात्र उन इम्तिहानों में पार पा ले, जो किसी विदेशी विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने से पहले किसी दूसरे देश के छात्र को पास करने जरूरी हैं।

विदेशी शिक्षा

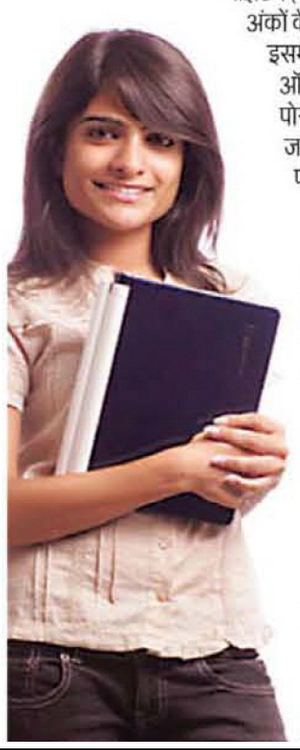
पार करने होंगे कुछ द्वार



आम धारणा है कि विदेश में सिर्फ अमीर और सुविधा संपन्न लोग ही पढ़ सकते हैं, क्योंकि वहां के विश्वविद्यालयों की फीस और वहां रहने का खर्च उठा पाना औसत आमदनी वाले परिवारों के छात्रों की क्षमता से परे की बात है। पर पिछले कुछ समय में परिस्थितियों ने तेजी से करवट ली है। कई प्रवेश परीक्षाएं संचालित की जा रही हैं तथा विदेशी शिक्षा के नाम पर एजुकेशन लोन एवं स्कॉलरशिप भी आसानी से उपलब्ध होने लगे हैं। यानी पहले की तरह हाडतोड़ मशक्कत नहीं करनी पड़ती, जिसके चलते सामान्य हैसियत और औसत दर्जे वाले छात्र भी विदेशी शिक्षा के अपने सपनों में रंग भर सकते हैं। यूनेस्को रिपोर्ट के अनुसार भारत ऐसा दूसरा देश है, जहां से सबसे ज्यादा छात्र पढ़ाई के लिए विदेश की ओर रुख करते हैं। यह संख्या करीब साढ़े चार से पांच लाख के आसपास ठहरती है। इनमें से अधिकांश जनसंख्या अमेरिका पर अपना भरोसा जताती है। हालांकि यह मिथक अब धीरे-धीरे टूट रहा है तथा छात्र यूके, ऑस्ट्रेलिया, ब्रिटेन, कनाडा, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका तथा सिंगापुर की ओर आकर्षित हो रहे हैं। वजह चाहे जो भी हो, विदेशी डिग्री छात्रों को उनके प्रोफेशनल करियर में नई ऊंचाई प्रदान करती है तथा लीडरशिप के रूप में स्थापित भी करती है। विदेश में पढ़ने का सपना तभी पूरा हो पाता है, जब छात्र वहां के नजरिए से संचालित प्रमुख प्रवेश परीक्षाओं में न सिर्फ उत्तीर्ण हो, बल्कि अच्छा स्कोर भी हासिल करे। इससे उन्हें वीजा, स्कॉलरशिप अथवा एजुकेशन लोन मिलने में मदद मिलती है। आमतौर पर ये परीक्षाएं 11वीं के बाद से ही दी जा सकती हैं तथा पूरे साल चलती रहती हैं। छात्र अपनी योग्यता एवं समय के अनुसार जब चाहें प्रवेश परीक्षा में बैठ सकते हैं। यहां ऐसी ही परीक्षाओं के बारे में जानकारी दी जा रही है।

टॉफेल

टैस्ट ऑफ इंग्लिश एज ए फॉरेन लैंग्वेज (टॉफेल) में रजिस्ट्रेशन का सबसे आसान तरीका ऑनलाइन है। टॉफेल के जरिए छात्रों की स्टैंडर्ड अमेरिकन इंग्लिश में दक्षता को परखा जाता है। इस टैस्ट के स्कोर को करीब 125 देशों के 7,000 से भी ज्यादा कॉलेज, यूनिवर्सिटी एवं लाइसेंस देने वाली एजेंसियां प्रयोग में लाती हैं। एक समय ऐसा था, जब यह टैस्ट पेपर आधारित (पीबीटी) या कंप्यूटर आधारित (सीबीटी) होता था, लेकिन पिछले पांच वर्षों में इसमें व्यापक बदलाव आए हैं तथा यह परीक्षा इंटरनेट बेस्ड (आईबीटी) हो गई है। वैसे तो टॉफेल का स्कोर दो साल के लिए मान्य होता है, परन्तु अधिकांश संस्थान इसके ताजा स्कोर को ही वरीयता देते हैं। चार घंटे के इस टैस्ट में रीडिंग (36-70 प्रश्न), लिसनिंग (34-51 प्रश्न), स्पीकिंग (6 प्रश्न) तथा राइटिंग (2 प्रश्न) के करीब 120 अंकों के प्रश्न पूछे जाते हैं। इसमें रजिस्ट्रेशन ऑनलाइन, मेल अथवा पोस्ट के जरिए भी कराया जा सकता है। रजिस्ट्रेशन फीस 150 डॉलर है।



जीमैट

विदेश स्थित बिजनेस स्कूल्स में दाखिला पाने के लिए ग्रेजुएट मैनेजमेंट एप्टीट्यूड टैस्ट (जीमैट) भी कारगर रास्ता तैयार करता है। अधिकांश विदेशी संस्थान जीमैट स्कोर के आधार पर ही अपने यहां प्रवेश देते हैं। पिछले दो वर्षों के दौरान अधिक संख्या में छात्रों ने जीमैट पर अपनी निर्भरता दर्शाई है। इसके कार्यक्रमों को भारत व चीन में अधिक स्वीकृति मिली है। इनके प्रोग्राम को डिजाइन बी-स्कूल्स द्वारा 2009 में किया गया तथा 2,900 बिजनेस स्कूल्स में ये प्रोग्राम प्रयोग में लाए जाते हैं। इस टैस्ट के अंतर्गत वर्बल सेक्शन, क्वांटिटेटिव और एनालिटिकल राइटिंग असेसमेंट सेक्शन का मूल्यांकन किया जाता है। इन सेक्शन्स को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि छात्र किस तरह से विभिन्न स्रोतों से सूचनाएं एकत्र कर सकता है, इस क्षमता का आकलन हो सके। 30 मिनट के इंटीग्रेटेड रीजनिंग सेक्शन में एक या दो एस्से लिखने होते हैं, जो कि एनालिटिकल राइटिंग के पार्ट्स होते हैं। कुछ सवाल ऑडियो कंपोनेंट के भी होते हैं। वेबसाइट अथवा किसी सेंटर पर फोन के जरिए छात्र रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं।

जीआरई

इसका पूरा नाम ग्रेजुएशन रिकॉर्ड एग्जामिनेशन (जीआरई) है। यह कम्प्यूटर आधारित प्रवेश परीक्षा है, जिसके दो भाग होते हैं- जनरल टैस्ट व सब्जेक्ट टैस्ट। जनरल टैस्ट को तीन भागों- वर्बल, क्वांटिटेटिव एवं एनालिटिकल राइटिंग में बांटा गया है। इसके स्कोर को अंतिम स्कोर में शामिल नहीं किया जाता। इसकी अवधि तीन घंटे की होती है। सब्जेक्ट टैस्ट के अंतर्गत आठ विषयों बायोकैमिस्ट्री, मॉलिकुलर बायोलॉजी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, अंग्रेजी, साहित्य, गणित, भौतिकी और मनोविज्ञान आदि को शामिल किया जाता है। इसमें ज्यादातर सवाल वास्तविक जीवन पर आधारित होते हैं तथा पर्यायवाची, विलोम एवं राइटिंग पर भी प्रकाश डालते हैं। नंबर फिलिंग्स से भी छात्रों को अच्छा रिस्पांस मिलता है। छात्रों को कोशिश करनी चाहिए कि पहला सवाल न आने पर समय व्यर्थ न करें तथा दूसरे सवाल पर कूद जाएं। इसी तरह से मैथमेटिकल सेक्शन में छात्र रीजनिंग एवं फॉमरूलों को अच्छी तरह याद कर लें।

आईईएलटीएस

इंटरनेशनल इंग्लिश लैंग्वेज टेस्टिंग सिस्टम (आईईएलटीएस) अन्य प्रवेश परीक्षाओं से थोड़ा अलग हट कर है। इसमें टैस्ट के बाद 9 तरह के बैंड स्कोर दिए जाते हैं, जिसमें उम्मीदवार के बारे में जानकारी दी जाती है। भारत में करीब 52 ऐसे टैस्ट सेंटर हैं, जो आईईएलटीएस का आयोजन करते हैं, जबकि विश्व के लगभग 300 टैस्ट सेंटरों द्वारा साल में करीब 48 बार इस टैस्ट का आयोजन होता है। इस टैस्ट का मुख्य उद्देश्य छात्र की अंग्रेजी में निपुणता (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) को परखना है। साथ ही इसका आयोजन कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी, ईएसओएल एग्जामिनेशन, ब्रिटिश काउंसिल और आईडीपी एजुकेशन ऑस्ट्रेलिया द्वारा संयुक्त रूप से किया जाता है। इसमें दो मॉडयूल होते हैं- एकेडमिक व जनरल ट्रेनिंग मॉडयूल। इनमें से छात्र किसी एक को चुन सकता है।

सेट

स्कॉलिस्टिक एप्टीट्यूड टैस्ट (एसएटी) का आयोजन वर्ष भर में सिर्फ एक बार (नवंबर) में होता है तथा छात्र एक समय में तीन एसएटी सब्जेक्ट टैस्ट दे सकता है। इस टैस्ट को मुख्यत: पांच क्षेत्रों जैसे अंग्रेजी साहित्य, इतिहास और सामाजिक अध्ययन, गणित, विज्ञान और भाषा में बांटा गया है। इसका उद्देश्य छात्र की किसी विषय विशेष को ध्यान में रख कर परखना होता है। इसका पैटर्न हाई स्कूल के पाठ्यक्रम को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है। ऐसे कई कॉलेज हैं, जो अपने यहां प्रवेश देते समय एसएटी स्कोर को देखते हैं। इसकी परीक्षा वस्तुनिष्ठ प्रकार की होती है तथा इसमें समझने की योग्यता, मैथ्स और वर्बल रीजनिंग के प्रश्न शामिल होते हैं। सेट सब्जेक्ट टैस्ट फीस 68 डॉलर है।



कुछ टैस्ट ये भी जरूरी

एमसीएटी

इसका पूरा नाम मेडिकल कॉलेज एडमिशन टैस्ट (एमसीएटी) है। जो छात्र कनाडा और यूएस जाकर मेडिकल की पढ़ाई करना चाहते हैं, उनके लिए यह परीक्षा अधिक कारगर है। पिछले तीन वर्षों से यह परीक्षा कंप्यूटर पर आधारित हो गई है। यह परीक्षा चार सेक्शनों (फिजिकल साइंस, वर्बल रीजनिंग, राइटिंग सैंपल, बायोलॉजिकल साइंस) में आयोजित की जाती है तथा प्रश्न बहुविकल्पीय होते हैं। टैस्ट का पैटर्न प्रॉब्लम सॉल्विंग, क्रिटिकल थिंकिंग, रिटेन एनालिसिस एवं राइटिंग स्किल्स पर आधारित होता है। इस टैस्ट का आयोजन साल में 22 बार तथा दो पारियों में किया जाता है।

एलएसएटी

लॉ स्कूल एडमिशन टैस्ट (एलएसएटी) उन छात्रों के लिए है, जो विदेश जाकर (अमेरिका व कनाडा) लॉ स्कूल में दाखिला पाना चाहते हैं। इस टैस्ट का आयोजन लॉ स्कूल एडमिशन स्कूल काउंसिल (एलएसएसी) द्वारा किया जाता है। पांच चरणों में आयोजित होने वाली यह परीक्षा लॉजिकल रीजनिंग, रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन, एनालिटिकल रीजनिंग व अनस्कोर्ड सेक्शन पर आधारित होती है। प्रत्येक सेक्शन 30-35 मिनट का होता है। परीक्षा का आयोजन साल में चार बार यानी फरवरी, जून, अक्तूबर व दिसंबर में किया जाता है।

एसीटी

एसीटी एक ऐसा टैस्ट है, जो अमेरिकी कॉलेजों में पढ़ने के सपने को पूरा करता है। जो छात्र एसएटी में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते, उन्हें एसीटी एक और प्लेटफॉर्म प्रदान करता है। इस परीक्षा का आयोजन एसीटी, आईएनसी के कैलेंडर के अनुसार साल में छह बार किया जाता है। परीक्षा का स्वरूप बहुविकल्पीय होता है तथा इसमें मैथ्स, साइंस रीजनिंग, रीडिंग व राइटिंग के सेक्शन होते हैं। राइटिंग का पेपर वैकल्पिक होता है तथा उसमें प्लानिंग एवं लघु निबंध लिखने को दिया जाता है। इसकी फीस 30 डॉलर है।

डेट

डेंटल एडमिशन टैस्ट (डीएटी) में तभी बैठा जा सकता है, जब अमेरिकी डेंटल एसोसिएशन से अनुमति मिली हो। साल भर में तीन बार आयोजित होने वाले इस कंप्यूटर बेस्ड टैस्ट के बाद अमेरिकी डेंटल कॉलेजों में आसानी से दाखिला मिल जाता है। टैस्ट में बैठने के इच्छुक छात्र यह ध्यान दें कि दो परीक्षाओं के बीच 90 दिन का गैप जरूर हो। परीक्षा चार सेक्शनों- नेचुरल साइंस, परसेप्चुअल एबिलिटी, रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन, क्वांटिटेटिव रीजनिंग में होती है। इसकी फीस 175 अमेरिकी डॉलर है।



पेट्रोलियम टेक्नोलॉजी

लिक्विड गोल्ड में गोल्डन करियर

ऊर्जा का अहम स्त्रोत होने के नाते पेट्रोलियम की उपयोगिता से सभी वाकिफ हैं। भारत पेट्रोलियम पदार्थों की अपनी जरूरत का बड़ा हिस्सा विदेश से आयात करता है। अगर आंकड़ों की मानें तो पेट्रोलियम पदार्थों के उपयोग में भारत विश्व का आठवां बड़ा देश है। एचपीसीएल, बीपीसीएल, रिलायंस, इंडियन ऑयल जैसी कंपनियों से सरकार को भारी-भरकम राजस्व मिलता है।



संभावनाएं

पहले इस क्षेत्र में जियोलॉजिस्ट की काफी मांग थी, समय बदलने के साथ मैकेनिकल क्षेत्र के विशेषज्ञों ने इस इंडस्ट्री में अपनी धाक जमाई। करियर की अनेक संभावनाओं को देखते हुए इस क्षेत्र में प्रबंधन से लेकर इंजीनियरिंग तक के कोर्स शुरू हुए हैं।

कोर्स

पेट्रोलियम यूनिवर्सिटी ने बीबीए, एमबीए, एमटेक, बीटेक, एमएससी जैसे कोर्स शुरू किए हैं। इसके अलावा देश के चुनिंदा संस्थानों ने पेट्रोलियम के क्षेत्र में बीई, बीटेक, एमई, एमटेक, एमएससी और बीएससी जैसे कोर्स शुरू किए हैं। ये सभी कोर्स पेट्रोकैमिकल इंजीनियरिंग, पेट्रोटेक्नोलॉजी, गैस इंजीनियरिंग, पेट्रोमार्केटिंग आदि में शुरू किए हैं।

योग्यता

बारहवीं की परीक्षा भौतिक विज्ञान, गणित और रसायन विज्ञान से 50 प्रतिशत अंकों से पास करने के बाद आप इस कोर्स के लिए आवेदन कर सकते हैं। कैमिकल और पेट्रोलियम इंजीनियरिंग में बीई और बीटेक कर चुके छात्र पेट्रोलियम इंजीनियरिंग में एमटेक के लिए आवेदन कर सकते हैं। बीबीए में प्रवेश के लिए बारहवीं किसी भी संकाय से उत्तीर्ण होना जरूरी है।

स्टडी कोर्स

पेट्रोलियम इंजीनियरिंग में छात्र जियोलॉजी, भौतिकी और इंजीनियरिंग के सिद्धांतों द्वारा पेट्रोलियम की रिकवरी, डेवलपमेंट और प्रोसेसिंग के बारे में जानते हैं। इसके अलावा ड्रिलिंग, मैकेनिक्स, पर्यावरण संरक्षण और पेट्रोलियम जैसे विषयों पर छात्रों की पकड़ बनाई जाती है। पेट्रोलियम इंडस्ट्री को मुख्य तौर पर दो भागों में बांट कर देख सकते हैं- अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम सेक्टर। अपस्ट्रीम सेक्टर में खोज, उत्पादन व तेल और प्राकृतिक गैसों का दोहन कैसे किया जाए, इसकी शिक्षा व ट्रेनिंग दी जाती है। डाउनस्ट्रीम सेक्टर में रिफाइनिंग, मार्केटिंग और वितरण से संबंधित पूरी जानकारी दी जाती है। पेट्रोलियम के क्षेत्र में टीम की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। एक पेट्रोलियम इंजीनियर को जियोलॉजिस्ट, अन्वेषणकर्ता, इंजीनियर, पर्यावरण क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ काम करना पड़ता है।

अवसर

पेट्रोलियम टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नौकरी की अपार संभावनाएं मौजूद हैं। लगभग आठ लाख लोगों को रोजगार देने वाला यह क्षेत्र अवसरों से भरा पड़ा है। हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, भारत पेट्रोलियम, रिलायंस, ओएनजीसी, पेट्रोनेट जैसी नामी-गिरामी कंपनियों के द्वार आपके लिए खुले हैं। जिस तरह पेट्रोल के नए भंडार और क्षेत्र मिल रहे हैं, उससे यह क्षेत्र आने वाले समय में बड़ा लाभकारी साबित होगा।

संस्थान

यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम स्टडीज, देहरादून, उत्तराखंड

डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी, असम

इंडियन स्कूल ऑफ माइंस, धनबाद

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, इंस्टीट्यूट ऑफ पेट्रोलियम स्टडीज एंड कैमिकल इंजीनियरिंग, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

यूनिवर्सिटी ऑफ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज, दिल्ली

अन्ना यूनिवर्सिटी, चेन्नई, तमिलनाडु

डॉ. हरिसिंह गौर यूनिवर्सिटी सागर, मध्य प्रदेश

महाराष्ट्र इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ पुणे, महाराष्ट्र

मोहम्मद जोशी के लिय टाइम्स मास कम्युनिकेशन प्राइवेट लिमिटेड द्वारा पंजीकृत कार्यालय जे 85 सीमापुरी, दिल्ली से प्रकाशित इंकलाब भारत प्रेस जे एण्ड के दिलशाद गार्डन दिल्ली से मुद्रित संपादकीय कार्यालय समाचार भवन एफ-126 शाहिद नगर, चिकम्बरपुर, साहिबाबाद, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201006 ईमेल : shabdwanisamchaarw2003gmail.com www. shabdawanisamachar.page संपादक मोहम्मद जोशी ,सलाहकार संपादक : अशोक लालवानी

refresh™
MATTRESS
SLEEP HEALTHY. Wake beautiful.

HDFC BANK
We understand your world

Mega Exchange Offer
Limited time only

Zero Down Payment &
EMI Available on Selected Models

- Get Value upto ₹12000/- for Old Mattress
- Assured Gifts upto ₹12448/-
- Total Exchange Benifits ₹24448/-

Offer available on
1pc of 72" x 60" or 2pcs of 72" x 30"
and above

Hurry !!! Rush to your nearest dealer

Customer care no. : 18001209630